प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 15 अंक 10 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2015-2017 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

दिसम्बर, 2017

ISSN 2349-6614

मूल्य : 25 ₹

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

पद्मावती पर महाभारत

यदि फिल्म में कुछ भी आपत्तिजनक है, तो हटाने में दिक्कत कैसी?

और नहीं है ऐसा कुछ तो...विरोधी पक्ष को संतुष्ट करें, भंसाली!

'इतिहास' को न बनाएं 'तिजारत'

इन्दिरा™ आईवीएफ

माँ से ममता की राह आसान

निःसंतान दम्पितयों हेतु आई.वी.एफ. एक वरदान

निम्न कारण आपको माँ बनने से रोक सकते हैं।

ट्यूब्स बंद होने के प्रमुख कारण

- नलियों में रूकावट या अन्य कोई खराबी होना
- अंडों का न बनना एवं अंडों का समय पर न फूटना
- माहवारी अनियमित होना अंडों का समय पर न फूटना
- उम्रदराज महिलाओं में मासिक धर्म का बंद होना
- संक्रमण या इंफेक्शन
- टी.बी. (टयूबर–क्लूसिस)
- नसबंदी का ऑपरेशन
- किसी अन्य ऑपरेशन के दौरान संक्रमण का होना
- ट्यूब में बच्चे का फसना
- ऐंडोमेट्रियोसिस इत्यादि।

उपलब्ध सेवाएं

- फर्टिलिटी जाँच
- IUI • IVF • ICSI
- लेज़र हेचिंग
- ब्लास्टोसिस्ट हिस्ट्रोस्कोपी
- लेप्रोस्कोपी
- डोनर सर्विसेज़

बिना ऑपरेशन के माँ बनना संभव

पहले बंद ट्यूबों को खुलवाने के लिए दवा या दूरबीन के ऑपरेशन (लैप्रोस्कॉपी) का सहारा लिया जाता था, लेकिन अत्याधुनिक युग में दम्पति टेस्ट ट्यूब बेबी (आईवीएफ) तकनीक को अपनाकर संतान सुख की ओर आगे बढ़ रहे हैं। यह एक कामयाब तकनीक के रुप में उभरी है यह प्रक्रिया उन महिलाओं के लिए भी कारगर साबित हुई है जिनकी एक ट्यूब खुली अथवा दूसरी ट्यूब बंद है।

इन्दिरा आईवीएफ हॉस्पीटल प्राइवेट लिमिटेड

44 अमर निवास, एम.बी. कॉलेज के सामने, कुम्हारों का भट्टा एयरपोर्ट रोड, उदयपुर

INDIRA IVF

उदयपुर • पुणे • दिल्ली (पटेल नगर • रोहिणी • लाजपत नगर) • पटना • जयपुर • इंदौर • अहमदाबाद • लखनऊ • नागपुर • मऊ • मेरठ • आगरा • नाशिक • कोलकाता बेंगलुरु • चेन्नई • वाराणसी • इलाहाबाद • रांची • फरीदाबाद • कानपुर • गोरखपुर • हैदराबाद • मुज़फ्फरपुर • भुवनेश्वर • मुम्बई (बोरीवली, नवी मुम्बई) • भागलपुर • देहरादून

HELPLINE	SMS	Website	Email	Online Registration
07665009964 / 65	IVF<space>T SEND TO 56677	www.indiraivf.com	help@indiraivf.in	www.indiraivf.com/checkout

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

Supreme Designs
कम्प्यूटर ग्राफिक्स विकास सुहालका

मुद्रक पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि.
गुलाब बाग रोड, उदयपुर (राज.) फोन : 2418482, 2410659

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग वेलावत
चित्तौड़गढ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल वालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
"रक्षाबंधन", धानमण्डी, उदयपुर-313001

दिसम्बर
2017
वर्ष 15, अंक 10

प्रत्यूष

मूल्य 25 ₹
वार्षिक 300 ₹

अन्दर के पृष्ठों पर...

06 राजशाही

बहुमत के मद में बौराई राजस्थान सरकार

18 प्रसंगवश

खुदक़ुशी समस्या का हल नहीं

22 सौंदर्य

सर्दियों में भी खूबसूरती रहे कायम

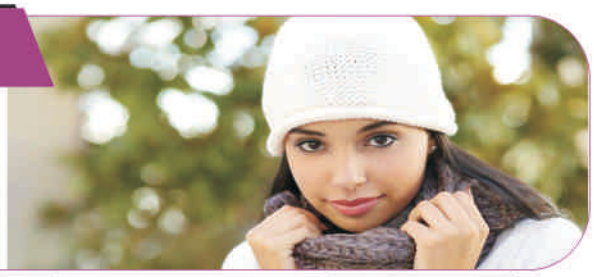

20 ध्यानाकर्षण

ज़िद और ज़िंदादिली यानी कृष्णा सोबती

22 रूहानी रोशनी

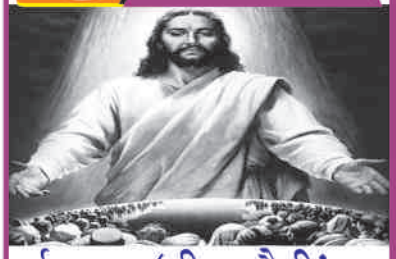

ईसा एक 'जीवन शैली'

कार्यालय पता : 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष : 0294-2427616, 2414933, 2413477, 2100408-09, फेक्स : 0294-2525499
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
visit us at : www.pratyushpatrika.com, E-mail : pankajkumarsharrma@pratyushpatrika.com
pankajkumarsharma2013@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

Mahindra
Rise.

चंद्रशेखर सोनी
9829262148

लालकृष्ण सोनी
9772326010

Mahindra महिन्द्रा ट्रेक्टर्स
टेक्नोलॉजी से तरक्की

ज्यादा. जल्दी. बेहतर.

Mahindra 475 DI

महिन्द्रा 275 युवो ट्रेक्टर की
हर खरीद पर पाये

धमाकेदार ऑफर

Mahindra 415 DI

Mahindra B 275 DI

YUVO 275 DI

सभी मॉडल न्यूनतम डाउन पेमेण्ट पर उपलब्ध

275 युवो ट्रेक्टर की विशेषताएँ :

- 12F+3R गियर्स
- पावर स्टेरिंग/मैन्युअल
- दमदार इंजन (ज्यादा पावर, ज्यादा टार्क,
- ज्यादा सर्विस अन्तराल, ज्यादा PTO HP)
- तेल मे डूबे हुए ब्रेक्स
- बड़ा टायर साईज 13.6x28

आकर्षक ब्याज दर

अन्य ट्रेक्टर की खरीद पर पाइये
आकर्षक उपहार

जल्दी कीजिए !
कहीं ये मौका हाथ से न निकल जाए।

अधिकृत विक्रेता :

भूमिपुत्र ट्रेक्टर्स

महिन्द्रा ट्रेक्टर्स, सेल्स-सर्विस एण्ड इम्पलिमेन्ट्स

हेड ऑफिस : टोल प्लाजा के पास, N.H.27, गोगुन्दा, जिला-उदयपुर
ब्रांच ऑफिस : बस स्टेण्ड, तहसील के पास, गोगुन्दा, जिला-उदयपुर

ठगा सा खड़ा आम आदमी

देश की अदालतों में मुकदमों के बोझ की वजह से न्याय की दशा, दिशा और गति क्या है, यह किसी से छिपा नहीं है। पिछले दिनों उदयपुर(राजस्थान) के अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायालय संख्या-4 में 34 साल पुराने एक सिविल मुकदमे का फैसला हुआ, लेकिन वह भी दोनों पक्षों के आपसी राजीनामे से। यदि राजीनामा न होता तो फैसला भी नहीं होता। इसमें न्यायपालिका की भूमिका यदि कोई दिखाई दी तो मात्र मध्यस्थता की और उसमें भी 34 वर्ष लग गए। इस मुकदमे के चलते वादी सहित सात प्रतिवादियों की मौत हो चुकी थी। इसके बाद भी वादी के दो बेटे और प्रतिवादी का 25 सदस्यों वाला परिवार वर्षों से अदालतों के चक्कर काट रहा था। फैसला तो हो गया। अच्छी बात है कि दोनों पक्षों ने समझदारी से काम लिया, लेकिन मुकदमा लड़ते-लड़ते जो दुनिया छोड़ गए, उन्होंने और उनके परिवारों ने इस दरम्यान कितना कुछ खोया होगा, इसकी कल्पना मात्र से ही सिहरन पैदा होती है।

यह स्थिति अदालतों तक ही सीमित नहीं है, शीर्ष न्यायाधिकरणों का भी कुछ ऐसा ही हाल है। विधि-आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार देश के पांच शीर्ष न्यायाधिकरणों में करीब साढ़े तीन लाख मामले लम्बित है। जिनमें से अकेले आयकर अपीली न्यायाधिकरण में 50 हजार से अधिक मुकदमों का फैसला होना है। केन्द्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण, सीमा शुल्क, आबकारी और सेवाकर अपील न्यायाधिकरणों के बस्तों में बंधे हजारों मामलों से भी धूल झटकना शेष है।

न्यायालय न्याय के मन्दिर हैं, जहां लोग न्याय की आस लेकर जाते हैं। लेकिन अब अदालतों और न्यायपालिका से लोगों का भरोसा डगमगाने लगा है। छोटे से छोटे और बड़े से बड़े मामले सालों से लटके हुए हैं। इससे न्याय व्यवस्था को परिभाषित करना मुश्किल हो गया है। पेशियां बार-बार मुल्तवी की जाती हैं। जिससे न्याय पाने वाले का धैर्य बिखरने लगता है। अदालतों में काम लटका कर रखा जाता है। जिससे काम का भार बढ़ता ही जा रहा है। देश में करीब तीन करोड़ से अधिक मुकदमे लंबित हैं। अकेले सुप्रीम कोर्ट में इनकी संख्या 50-60 हजार के करीब होगी। न्याय में विलम्ब के लिए आम आदमी को अदालतों के जज और सरकार से सवाल पूछने का हक है। पिछले कुछ समय से देखा जा रहा है कि अदालतों में ही उनके अनुशासन को लेकर प्रश्न चिन्ह लगते रहे हैं। अदालतें ही क्यों आज देश की सम्पूर्ण लोकतांत्रिक व्यवस्था पर ही उंगलिया उठ रही हैं। भ्रष्ट नेता, अधिकारी और तरह-तरह के माफिया मिलकर शासन को असरहीन बनाते हुए अपने-अपने पक्ष में फैसले लिखवा रहे हैं। न्यायपालिका भी इसी तरह के दल-दल में धसती नजर आने लगी है।

केन्द्रीय जांच ब्यूरो की एक प्राथमिकी में पिछले दिनों आरोप लगाया गया था कि एक उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश और अन्य लोगों ने मेडिकल कॉलेज में प्रवेश से सम्बन्धित मामले में शीर्ष अदालत में अपने पक्ष में निपटारा करवाने का आश्वासन देते हुए सााजिश रची और इसके लिए एक मोटी रकम भी मांगी। इस प्राथमिकी में उड़ीसा उच्च न्यायालय के एक पूर्व न्यायाधीश को आरोपी के रूप में नामित भी किया गया था। यह चर्चा वाला कोई अकेला मामला नहीं है। ऐसी चर्चाएं प्राय: सुनने में आ रही है। सभी न्यायाधीशों और वकीलों में कुछ ही ऐसे हैं, जो न्याय व्यवस्था को विकृत करने का प्रयास कर रहे हैं। कुछ दशक पहले उच्चतम न्यायालय के एक न्यायाधीश ने यह कहा भी था कि देश के 80 प्रतिशत न्यायाधीश ईमानदार हैं और 20 प्रतिशत भ्रष्टाचार में संलिप्त हैं। दरअसल नियम-कायदों को ताक पर रख कर पैसा बनाने की प्रवृत्ति इतनी व्यापक हो चुकी है कि इस रोग से देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था का कोई भी हिस्सा अछूता नहीं बचा है। भ्रष्टाचार देश की राजनीति और सत्ता-व्यवस्था से लेकर नौकरशाही तक में नासूर की शक्ल अख्तियार चुका है। सरकारी कार्यालयों में छोटे-मोटे वैध कामों के लिए भी रिश्वत की लेन-देन एक व्यवस्था की तरह काम कर रही है। जिसका एक सिरा राजनीति और सत्ता-तंत्र से जुड़ता है।

भ्रष्टाचार से त्रस्त आम आदमी को आज ऐसा लगता है कि सर्वोच्च लोकतांत्रिक संस्थाएं ही 'जन-गण-मन' को समाप्त करने पर तुली है। उसका यह सोचना बेवजह भी नहीं है क्योंकि व्यवस्थापिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और मीडिया सबके सब मसीहा बन बैठे हैं, जो न उसकी आवाज को सुन और न दर्द को महसूस कर पा रहे हैं। सबके सब अपने-अपने व्यापार में लिप्त हैं। अत: इस स्थिति में बदलाव के लिए कदम न उठाकर विलम्ब किया गया तो आम आदमी के धैर्य की सीमा टूट सकती है और जब ऐसा होगा तो वह स्थिति लोकतांत्रिक व्यवस्था के विपरीत ही होगी और उसे संभालना मुश्किल हो जाएगा। समय रहते चेतें और अपने-अपने दायित्व ईमानदारी और निष्ठा के साथ समयबद्ध लक्ष्य तय कर पूर्ण करें।

बहुमत के मद में बौराई राजस्थान सरकार

■ अपने ही फैसलों से खतरा भांप कर डरी मुख्यमंत्री ने बचाव के लिए विधानसभा में पेश किया 'काला कानून'

■ विरोध के तेज होते स्वरों के बीच शर्मिन्दगी से बचने के लिए चहेते अफसरों को बचाने वाला अध्यादेश भेजा प्रवर समिति को

■ अलोकतांत्रिक व अहंकारपूर्ण रवैये से हाईकमान नाखुश, हिमाचल व गुजरात चुनाव निबटने के बाद करेगी कार्रवाई।

– शांतिलाल शर्मा

राजस्थान में भारी बहुमत से मिली विजय को भाजपा चार साल बाद भी पचा नहीं पा रही है। मुख्यमंत्री के अहंकार से सरकार व ब्यूरोक्रेसी के बीच एक मजबूत किन्तु बेमेल गठबंधन आकार लेता दिख रहा है। लोकसेवकों को संरक्षण देने के नाम पर सरकार सीआरपीसी और आइपीसी में संशोधन कर भ्रष्ट और दागी अफसरों व नेताओं को बचाने का कुत्सित प्रयास करने में जुटी है। सितम्बर में इसके लिए सरकार ने आनन-फानन में अध्यादेश भी जारी किया। जिसके अनुसार जज, मजिस्ट्रेट एवं लोकसेवकों के खिलाफ परिवाद पर प्रसंज्ञान, पुलिस जांच या मामले की मीडिया रिपोर्टिंग से पहले सरकार से मंजूरी लेना होगा। इसके लिए अध्यादेश में आइपीसी की धारा 220 में 228 बी जोड़कर प्रावधान किया गया कि सीआरपीसी की धारा 156(3) और धारा 190(1)(सी) के विपरीत कार्य किया गया तो दो साल कारावास एवं जुर्माने की सजा दी जा सकेगी। अध्यादेश जारी होने के बाद विधानसभा के पहले ही सत्र में 23 अक्टूबर 2017 को गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने इसे पेश भी कर दिया। सदन में कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों ने इसका भारी विरोध किया। राजस्थान हाईकोर्ट में इसके खिलाफ जनहित याचिका भी दायर हुई। बाद में शर्मिन्दगी से बचने के लिए मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने विधेयक प्रवर समिति को पुनर्विचार के लिए सौंप दिया।

लोकतंत्र में भी जनता डरी हुई

देश में गणतंत्र की स्थापना को सतसठ साल हो गए, परन्तु तानाशाही और सामंतशाही परम्पराएं अपना फन फैलाए आज भी जनता को डरा रही हैं। जनता के हाथ में सिर्फ वोट देने का अधिकार बचा है। सालों साल भ्रष्ट सत्ताधीशों व नौकरशाहों का बाल भी बांका नहीं हो पाता। जांच कमेटियों की पगबाधाएं पार करते हुए दागी और भ्रष्ट लोकसेवक फिर से शिखरारूढ़ हो जाते हैं। भला वे क्या पारदर्शी सरकार दे पाएंगे। उनके खिलाफ तो बोलने की कोई हिम्मत नहीं जुटा पाता। देहात का किसान या मजदूर सर पटक-पटक कर प्रशासन की चौखट पर मर भी जाए तो अफसरशाही को कोई फर्क नहीं पड़ता। जुबान लड़ाने वाले को वह हवालात दिखा सकती है और पिटवा भी सकती है। यह सामंतशाही जैसा दौर नहीं तो क्या है? लोकसेवक कुछ भी करें, तो कानून सम्मत और आम जनता आवाज उठाए तो विद्रोह।

ट्रैसपास का प्रयास

भ्रष्टाचार में लिप्त लोकसेवकों को संरक्षण देने व मीडिया की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने तथा मजिस्ट्रेट के अधिकारों को कुंठित करने वाले दंड विधियां(राजस्थान संशोधन) अध्यादेश 2017 में ऐसे प्रावधान किए गए हैं, जो आपातकाल की याद दिलाते हैं। प्रावधानों के अनुसार तो कोर्ट भी इस्तगासे पर जांच का आदेश जारी नहीं कर सकेगा। यह प्रयास भ्रष्ट लोकसेवकों को बचाने, अभिव्यक्ति का गला घोंटने और न्यायपालिका के अधिकारों को ट्रेसपास करने का सुनियोजित प्रयास है। सूचना का अधिकार और लोकपाल अधिनियम की स्थिति पंखकटे जटायु जैसी हो जाएगी। यह ड्रेकोनियल लॉ है। यानी सरकार जिस अधिकारी या मंत्री के खिलाफ चाहेगी, उसके लिए अभियोजन स्वीकृति देगी, बाकी के लिए नहीं। सामंती युग में भी तो यही होता था। अध्यादेश सत्तारूढ़ दल के खिलाफ उठने वाली आवाज को दबाने वाला है। सीआरपीसी की धारा 197, जिसकी आड़ में अब तक भ्रष्ट अधिकारी मुकदमे से बचते थे और जिसे

हटाने की मांग लम्बे समय से की जा रही है, उसे और ताकत दे दी गई। मौजूदा सरकार अपने पंचवर्षीय कार्यकाल का अधिकांश समय व्यतीत कर चुकी है और गिनती के कुछ माह बचे हैं। जनता उसके हर दिन का हिसाब मांगेगी। सरकार को ऐसा आत्मघाती कदम उठाने की आवश्यकता क्यों पड़ गई ? या तो वह अति उत्साह से बौरा गई या वापसी की उम्मीदों पर पानी फिरता देख अपने मातहतों के बचाव में लग गई है। जो भी हो यह किसी लोकतांत्रिक सरकार के लिए शुभ नहीं है।

ब्यूरोक्रेट्स अंगद का पांव

सरकार अफसरों को बचाने के लिए अध्यादेश ले आई और उसे कानून के रूप में विधानसभा से पारित करवाने में जुटी है। जनता के कल्याण से जुड़े मुद्दे सुस्त पड़े हैं। चार साल के कामों से जनता निराश है। ऐसे में सरकार का दायित्व बनता है कि वह जनहित के मुद्दों को सुलझाएं। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष सचिन पायलट का कहना है कि सरकार सत्ता के नशे में चूर है और राज्य के विधायी काम राजशाही के शिकार हैं। कांग्रेस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रवर समिति को भेजे गए अध्यादेश को 'काला कानून' कहा है। भाजपा के ही वरिष्ठ विधायक घनश्याम तिवाड़ी ने कहा कि अध्यादेश संविधान और सुप्रीम कोर्ट की गरिमा और लोकतंत्र का अपमान है।

दिखावे के तर्क

राज्य के गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने अध्यादेश विरोधी वक्तव्यों को खारिज करते हुए कहा कि भ्रष्ट लोकसेवकों को संरक्षण देने की बात इस अध्यादेश में कहीं नहीं है। इसका मकसद ईमानदार लोकसेवकों की छवि बचाना है। सरकार की दलील है कि ऐसा नहीं कि कानून लागू होने के बाद किसी लोकसेवक के खिलाफ अदालत के माध्यम से पुलिस थाने में मुकदमा दर्ज होगा ही नहीं। अब तक होता आया है कि मुकदमा झूठा हो या सच्चा दर्ज होते ही वह मीडिया में सुर्खी बन जाता है और निर्दोष लोकसेवक को भी सामाजिक अपमान का भागी बनना पड़ता है, भले ही बाद में प्रकरण झूठा साबित हो। सरकार के मुताबिक 2013 से अब तक प्रदेश में 2.70 लाख केस दर्ज हुए। इनमें से 1.76 लाख केस झूठे पाए गए, जिनमें एफआर लग गई। लेकिन यहां सवाल यह भी है कि जब तिहत्तर फीसद केस मिथ्या थे तो झूठा इस्तगासा दायर करने वाले एक भी शख्स पर कार्रवाई क्यों नहीं हुई ? कानूनविदों का मानना है कि झूठा केस दर्ज करने पर 7 साल तक की सजा का प्रावधान पहले से लागू है। इसी कानून को और मजबूती दी जाती तो बिल लाने की जरूरत ही नहीं पड़ती। इसके अलावा बड़े अधिकारियों पर अब तक कोई कार्रवाई न देखी गई, न सुनी गई। प्रदेश में अब तक के सबसे बड़े खनन महाघोटाले में लिप्त खान विभाग के प्रमुख शासन सचिव अशोक सिंघवी और विशेष चयन में चहेतों की नियुक्ति घोटाले के आरोपी नीरज के. पवन कुछ समय बाद फिर से नए पद पर प्रतिष्ठापित हो गए। भ्रष्टाचार के मामलों में अब तक स्थिति यह है कि बीस फीसद लोकसेवकों के खिलाफ तो अभियोजन की स्वीकृति दी ही नहीं जाती। फिर जांच के नाम पर मामला ठण्डे बस्ते में बंद हो जाता है या फिर लीपापोती हो जाती है। सरकारें बदल जाती हैं और ब्यूरोक्रेट्स फिर बेताल की तरह यथा स्थान लौट आते हैं।

हाईकोर्ट की टिप्पणी

राजस्थान हाईकोर्ट ने सरकार द्वारा लाए गए अध्यादेश पर तल्ख टिप्पणी करते हुए कहा कि यह अलोकतांत्रिक है। इससे लोकतंत्र को खतरा है, ऐसा प्रयास चलने नहीं दिया जा सकता। अदालत ने सरकार से पूछा कि इसे वापस लिया जा रहा है या नहीं ? कोर्ट ने यह भी कहा कि अध्यादेश की अवधि पूरी होने तक अंडरटेकिंग दी जाए कि इसके तहत एक्शन नहीं होगा। हालांकि शासकीय स्तर पर मामले को ठण्डे बस्ते में डालने की अज़ीबोग़रीब कार्रवाई रूटीन का हिस्सा बन कर चलती ही रहती है। ऐसे ही प्रयासों के तहत प्रशासकीय प्रक्रिया बता कर राजस्थान हाईकोर्ट के न्यायाधीश गोविन्द माथुर का इलाहाबाद तबादला हो गया है। ये वही जज हैं, जिन्होंने लोकसेवकों को संरक्षण देने वाले सरकारी अध्यादेश पर तल्ख टिप्पणी की थी।

KASTURI
A RAJWADI STORE
New Seasons-New Collection
● राजपूती पौशाक ● बुटिक पैटर्न राजपूती सूट
● बुटीक पैटर्न ड्रेस मैटेरियल ● स्पेशल सिफोन साड़ी वैरायटी कलेक्शन
● डिजाइनर साड़ियाँ ● वेडिंग साड़ियाँ
● ब्रांन्डेड केटेलोग प्रिन्ट ● लहरिया एवं बन्धेज साड़ियाँ ● लहँगा
Special Attraction With us
● रिटेल-होलसेल रेट पर वाजिब दाम ● मूल्य वापसी पॉलिसी
● न्यूनतम रेट गारन्टेड ● कोई फर्जी सेल नहीं ● रविवार खुला (हमेशा)
KASTURI
102-, A-B first Floor, Hitawala Complex, Near Prabhat Spa
Panchwati Circle, udaipur (Raj.) 0294-2414550

प्रेम की स्मृति और कला का बेजोड़ नमूना

वाह ! ताज

इतिहास का 'कखग' भी न जानने वाले संकीर्ण मनोवृत्ति राजनेताओं के हमलों से गंगा-जमनी तहज़ीब की इस विरासत की चमक नहीं पड़ सकती कभी फीकी।

– सुधीर जोशी

दुनिया के सात अजूबों में शुमार है भारत का ताजमहल। अपने में समेटे है एक प्रेमगाथा। इस खूबसूरत दूधिया इमारत को लेकर जिस तरह के उत्तेजनापूर्ण बयान पिछले दिनों आए हैं, वे चिंतनीय हैं। उत्तरप्रदेश के सरधना से निर्वाचित भाजपा विधायक संगीत सोम इसे भारतीय संस्कृति पर धब्बा बता रहे हैं। अपने को ज्ञानी साबित करने की चेष्टा में वे यह भी कह गए कि सत्रहवीं शताब्दी में शाहजहां ने अपने पिता को इसी ताजमहल में कैद किया था। जबकि शाहजहां ने न अपने पिता को कैद किया और न ही ताजमहल में बंद रखा। हक़ीकत यह है कि शाहजहां को आगरे के किले में 8 साल तक कैद रखा गया था। भाजपा के ही फायरब्रांड नेता विनय कटियार भी ताजमहल को तेजोमहालय बताने से नहीं चूके। इसी पार्टी के एक अन्य विधायक जगन प्रसाद गर्ग पहले ही बयान दे चुके थे कि ताजमहल का निर्माण मंदिर को ध्वस्त कर किया गया। उसके बाद कुछ युवाओं ने ताज परिसर में शिव चालीसा का पाठ भी किया। इस मामले में केन्द्रीय संस्कृति मंत्री महेश शर्मा की भूमिका भी कंधे झटकने वाली रही। ताज पर ओछी सियासत की शुरुआत उस खबर से हुई कि राज्य सरकार ने पर्यटन स्थलों की सूची से ताजमहल को हटा दिया है। फिर तो विवाद उठना ही था। राज्य सरकार की किरकिरी भी हुई। आनन-फानन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आगरा पहुंचे। उन्होंने विवाद को थामने की गरज़ से कहा कि ताजमहल किसी ने भी बनवाया हो, उसके निर्माण में भारत के मज़दूरों का पसीना बहा है। फिर इसे लेकर नाहक विवाद खड़ा करने की जरूरत क्या है? समाजवादी पार्टी के कट्टरपंथी नेता आज़म खां और एआईएमआईएम नेता असद्दुदीन औवेसी भी कहां पीछे रहने वाले थे। वे भी सम्प्रदायों को बांटने वाली इस आग में हाथ सेकते बोले कि 'तब तो लालकिला, संसद भवन और कुतुब मीनार जैसी इमारतें भी ढहा दी जानी चाहिए, क्योंकि वे विदेशियों ने बनाई थीं।'

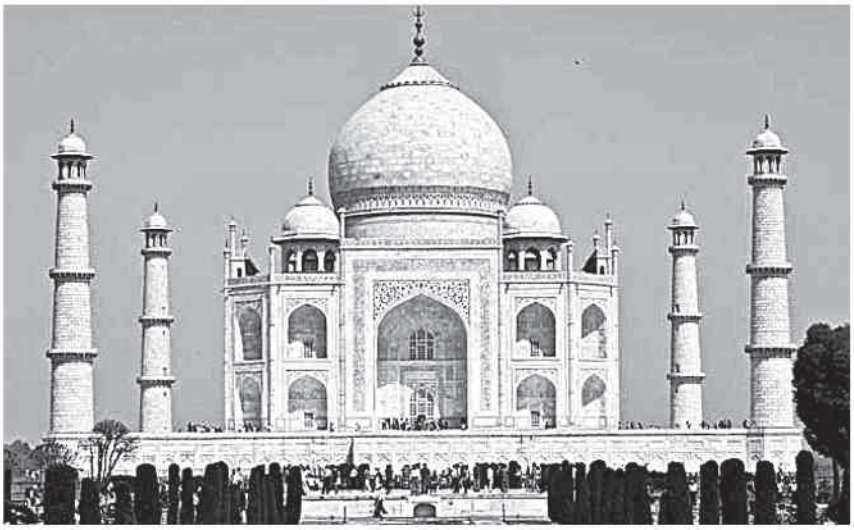

इतिहासकारों के मुताबिक मुगल बादशाह शाहजहां ने ताजमहल का निर्माण सन् 1632 में शुरू किया था। 21 साल तक 25 हजार मज़दूर तामीर में जुटे। शाहजहां ने इसका निर्माण अपनी प्रिय बेगम मुमताज की मौत के बाद उसकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए किया था। दुनिया में इसके अलावा शायद ही ऐसी कोई कब्रगाह हो, जिसे देखने प्रतिवर्ष लाखों पर्यटक आते हों। 1653 में यह प्रेम स्मारक बन कर तैयार हुआ। इस पर 3.2 करोड़ रुपये खर्च हुए। इसके अगल-बगल में रहने वाले बाशिंदे उन्हीं कलाकारों-मजदूरों के वंशज हैं। कुछ सियासी नेताओं द्वारा पिछले दिनों की गई बयानबाजी ने दुनिया भर के ताजप्रेमियों को सोते से जगा दिया।

ताज की तिजारत

ब्रिटिशराज के दौरान ऐसा ही एक तूफान गवर्नर लार्ड विलियम बेटिंग की हरकतों से भी आया, जिसने ताज के बहुमूल्य पत्थरों को इंग्लैण्ड भेजने की योजना बनाई। उसने अपने एक कथित मित्र मथुरा के सेठ लख्मीचंद को मात्र डेढ़ लाख रुपये में इसकी मिल्कियत सौंप दी। अंग्रेजपरस्त यह सेठ जब कब्जा लेने आगरा पहुंचे तो आसपास के बाशिंदों ने जबरदस्त विरोध कर उन्हें बैरंग लौटा दिया। यह वाकया सन् 1831 का है। लार्ड विलियम ने अपनी योजना को नए कलेवर के साथ फिर से क्रियान्वित करने की कोशिश की और 26 जुलाई 1831 को कलकत्ता के एक अखबार में ताज की नीलामी का इश्तिहार छपवा दिया। तय तारीख पर बोली लगाने कई अमीर आए, लेकिन मथुरा के सेठ लख्मीचंद ही सात लाख की बोली के साथ सफल रहे। इस बार ईस्ट इंडिया कंपनी ने बोली को कम मानते हुए नीलामी निरस्त कर दी। बावजूद इसके जिद् पर अड़ा लार्ड ताज की बिक्री को लेकर सेठ-साहूकारों से गुपचुप मंत्रणा करता रहा। लार्ड विलियम के मनसूबों की खबर इंग्लैण्ड की संसद में भी

गूंजी। संसद ने इसे मूर्खतापूर्ण बता कर विलियम को सख्त चेतावनी दी। इसके बाद 7 फरवरी 1900 को लार्ड कर्जन ने ताजमहल परिसर में कीमती पेंटिंग और नक्काशीदार पत्थरों को नीलाम कर दिया। इसके बाद भी ताज पर आघात होते रहे। लार्ड वारेन हेस्टिंग की बुरी नज़र से भी ताज नहीं बच सका। दीवारों से जड़े हीरे-मोतियों को निकाल कर इंग्लैण्ड भेजा गया। अंग्रेज जब तक भारत में रहे, ताज लुटता रहा। देश की आजादी के बाद भारत सरकार ने इसे नई चमक दी। उसी के कारण यह विश्व विरासत और सात अजूबों में शुमार हुआ।

विरासत सहेजने की जरूरत

प्यार-मोहब्बत की एक अजीमुश्शान यादगार, भारतीय कला-संस्कृति और इतिहास की अनमोल विरासत, विश्व धरोहर तथा दुनिया के महान आश्चर्यों में से एक है ताजमहल है। यह वास्तुशिल्प का अद्‌भुत नमूना और साझी विरासत का प्रतीक है। लगभग 350 वर्ष पूर्व की यह पुरातात्विक धरोहर देश की अर्थव्यवस्था का संबल भी है। आगरा की लगभग अधिकतर आबादी का आर्थिक जीवन प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से ताजमहल से जुड़ा है। 2017 में अब तक 6.94 लाख विदेशी और 55.4 लाख देशी पर्यटकों ने ताज के दीदार किए। यहां करीब 50 हजार पर्यटक प्रतिदिन आते हैं। केन्द्र और राज्य सरकार को हर साल करोड़ों की कमाई होती है। नामसझ हैं वे लोग जो इसे धर्म या सम्प्रदाय के चश्मे से देखते हैं। भारत आने वाला शायद ही कोई पर्यटक ऐसा हो जो ताज के दीदार बिना लौट जाए। ऐसे स्मारक मानव जाति की विरासत हैं। इसलिए ऐसे स्थलों को हमेशा सहेजने के प्रयास होते रहे हैं। धर्म के उन्मादियों के निशाने पर रही इस विश्व-विरासत को प्रदूषण से भी भारी खतरा है। राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने ताजमहल के प्रति उपेक्षा पर सरकार से गहरी नाराजगी प्रकट की है। उत्तरप्रदेश सरकार ने हाल ही 156 करोड़ रुपये ताजमहल की देखरेख और आसपास के इलाकों के विकास के लिए स्वीकृत किए हैं।

गज़ल

साथ बैठो तो कोई हल निकल आएगा

हर मुसीबत का हल निकल आएगा,
प्यार से सींचो तो फल निकल आएगा।
किसी भी बात पर यकीं इतना भी न करो,
मीठी बातों में भी कोई हल निकल आएगा।
कब ये सोचा था हमने कि मेरी ख़ातिर,
किसी की आंखों से जल निकल आएगा।
ये झगड़े, ये फ़साद, अब ये दुश्मनी छोड़ो,
साथ बैठो तो कोई हल निकल आएगा।
दुश्मनों ने तो दोस्ती निभाही मुझसे,
दोस्तों में पर कोई ख़ल निकल आएगा।

- डॉ. राजीव गुप्ता

मीठी निगाह से देखो

तुम अगर चाहते हो मुल्क की ख़ैर
न किसी हमवतन को समझो ग़ैर।
हो मुसलमान उसमें या हिन्दू,
बौद्ध मज़हब हो या के हो ब्रह्मू।
सबको मीठी निगाह से देखो,
समझो आंखों की पुतलियां सबको।

- मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली

मानुषी ने जीता 'मिस वर्ल्ड' खिताब

17 साल बाद मिस वर्ल्ड का खिताब एक बार फिर भारतीय सुंदरी को मिला है। दिल्ली में रह रहीं हरियाणा की एमबीबीएस की छात्रा मानुषी छिल्लर (20) ने मिस वर्ल्ड 2017 का ताज 118 सुंदरियों को पछाड़कर जीता है। आयोजन चीन के सनाया में 18 नवम्बर को हुआ। जूरी ने फाइनल राउंड में मानुषी से पूछा था कि किस पेशे में सबसे ज्यादा वेतन मिलना चाहिए और क्यों? जवाब में मानुषी ने कहा 'मां को सबसे ज्यादा सम्मान मिलना चाहिए।' उन्हें कैश में वेतन नहीं, इज्जत और प्यार मिलना चाहिए। मानुषी को वर्ष 2016 की मिस वर्ल्ड प्यूर्टो रिको की स्टेफनी डेल ने मिस वर्ल्ड 2017 का ताज पहनाया। 17 साल पहले वर्ष 2000 में प्रियंका चोपड़ा ने यह खिताब जीता था। उससे पूर्व 1999 में युक्ता मुखी, 1977 में डायना हेडन और 1994 में ऐश्वर्या राय 'मिस वर्ल्ड' से नवाजी गई।

ज़िन्दगी और मौत के बीच कम होता फासला

दिल्ली वालों का दिल 'स्मॉग' से बीमार

दिल्ली, एनसीआर, हरियाणा, पंजाब और यूपी के निकटवर्ती जिलों में सर्दियों की शुरुआत से ही काली धुंध का हफ्तों तक छाए रहना रुटीन जिंदगी का हिस्सा है।

देश में शहरी आबादी तेजी से बढ़ रही है। शहरों का विस्तार होता रहेगा और अनुमान है कि 2050 तक हर 100 में से 66 व्यक्ति शहरी क्षेत्रों का हिस्सा होंगे। दुनिया में वाशिंगटन जैसे गिनती के कुछ शहरों का वायु प्रदूषण स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन के तय मानकों से 10 फीसदी कम है। मगर दुनिया के बाकी हिस्सों के लोग उतने भाग्यशाली नहीं हैं। 92 फीसदी वैश्विक आबादी ऐसी जगहों पर रहती है, जहां हवा की ही सेहत खराब है। प्रतिवर्ष करीब साठ-सत्तर लाख लोगों की मौत वायु प्रदूषण की वजह से होती है। भारत में हर साल जल एवं वायु प्रदूषण के चलते 25 लाख लोगों की जान जाती है। एम्स के मुताबिक मात्र वायु प्रदूषण संबंधी बीमारियों से दिल्ली में अनुमानित तीन हजार लोग प्रतिवर्ष असमय मौत का ग्रास बनते हैं। दिल्ली, एनसीआर, हरियाणा, पंजाब और यूपी के निकटवर्ती जिलों में सर्दियों की शुरुआत से ही काली धुंध का हफ्तों तक छाए रहना रूटीन जिंदगी का हिस्सा है। सर्दी की दस्तक के साथ ही आकाश में काली धुंध की चादर दिखेगी, जिसे स्मॉग के नाम से जाना जाएगा। दिन को सूरज के दर्शन तक नहीं होंगे और रात का आलम तो रंगीन की बजाय संगीन बन जाएगा। धूम्रजनित कुहासे के कहर से जनजीवन ठहर सा जाएगा। लोग घरों से निकलना कम कर देंगे, मॉर्निंग वॉक थम जाएगी, प्रशासन पराली या कूड़ा जलाने के मत्थे दोष मढ़ेगा, स्कूल बंद कर देगा, ज्यादा हुआ तो महानगर निगम और विकास प्राधिकरण अचानक सक्रिय हो जाएगा और प्रदूषण कारकों पर अंकुश के नाम पर उगाही का एक और तंत्र विकसित कर देगा। यह सब होगा, लेकिन वह कभी नहीं होगा, जो हर साल इन्हीं महीनों में सामने आने वाले इन हालात का स्थाई समाधान सुझा सके। सच तो यह है कि वर्षों से यही रोना-धोना हो रहा है, लेकिन स्थाई हल नहीं खोज पाए। शायद इसकी जरूरत भी नहीं महसूस की, जब ग्रीनपीस की रिपोर्ट ने बताया कि वायु प्रदूषण के मामले में हमने उस चीन को भी पछाड़ दिया, जिसने अपनी बदहाली का काफी हद तक समाधान निकाल लिया है। हम तब भी नहीं चेते, जब **'स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर-2017' के आंकड़ों ने बताया कि हवा में घुले पोल्युटेंट पर्टिकुलेट मैटर से होने वाली मौतों के मामले में भारत कुछ कदम और आगे बढ़ गया है।**

राजधानी का घुटा दम!

दिल्ली में पिछले 7 नवम्बर को स्मॉग का लेवल खतरनाक अंक छू गया, जब पीएम 2.5 का लेवल 1556 रहा, जो सामान्यत: 60 होना चाहिए। यह दुनिया के सबसे प्रदूषित लंदन और टोक्यो के सालाना औसत स्तर से करीब 100 गुना ज्यादा। इससे पहले नवम्बर 2016 को यह 401 दर्ज किया गया था। पीएम 2.5 के कण अतिसूक्ष्म होने के कारण पीएम-10 से ज्यादा घातक हैं, क्योंकि ये आसानी से फेफड़ों में प्रवेश कर जाते हैं। पीएम-10 धूल कणों का मिश्रण होता है। यह शरीर में सीधे नहीं पहुंचते हैं। कैंसर, दमा, हृदय और त्वचा रोगियों के अलावा छोटे बच्चों और वृद्धों के लिए स्मॉग जानलेवा है। दिन को हवा चलने पर प्रदूषण में कुछ कमी देखी जाती है। सुबह और रात में शांत हवा और आर्द्रता के कारण लोगों की जान हथेली पर आ जाती है। ऐसे में एन-95 या पी-100 मॉस्क भी कई बार काम नहीं करते हैं। रात को बंद कमरों में भी इसका प्रवेश हो जाता है। आमतौर पर घर में सुकून मिलता है परन्तु ऐसे वातावरण में तो घर में भी महफूज नहीं। इंसान जाए तो कहां, मीलों तक स्मॉग की काली छाया पसरी है। 7 नवम्बर को दिल्ली में अब तक का सबसे प्रदूषित स्मॉग था। **जिसकी तुलना द ग्रेट स्मॉग ऑफ लंदन-1952 से की गई।**

प्रयास पार्थेनियम ग्रास कटाई जैसे

भारत में कुछ जगहों पर बहुतायत से पसर रही पार्थेनियम ग्रास को काट देने से भी उसका समूल उन्मूलन नहीं हो पा रहा, वैसे ही दिल्ली और आसपास क्षेत्रों में स्मॉग लाइलाज है। सुर्खियां बटोरने वाले सरकारी उपायों को याद करें। किसी ने राजधानी में पन्द्रह साल से ज्यादा पुराने वाहनों पर पाबंदी लगा दी, दूसरे ने डीजल पर प्रहार किया, महानगर में भारी वाहनों के प्रवेश पर

कई दिनों रोक लगाते हुए उन पर प्रदूषण टैक्स थोप दिया, निर्माण स्थलों-सड़कों पर काम रोकने के आदेश हुए, सड़कों और पेड़ों पर स्प्रे हुआ। सड़क किनारे मलबा डालने वालों पर 50 हजार तक का जुर्माना ठोक दिया। कारों के लिए 'ऑड-इवन' योजना का अवतरण हुआ, न्याय के बड़े मंदिर से ज्योति पर्व पर पटाखों की बिक्री पर प्रतिबंध का हुक्म जारी हुआ। नतीजों में हवा की गुणवत्ता में कितना सुधार हुआ? एयर फिल्टर पर चेक कर लीजिए। हालांकि 1990 के मध्य में न्यायिक सक्रियता ने असली योगदान दिया। जब सुप्रीम कोर्ट द्वारा राजधानी के सार्वजनिक व वाणिज्यिक परिवहन को सीएनजी में बदलने की पहल हुई। इससे हवा की गुणवत्ता में असाधारण सुधार हुआ। कुछ अन्य समाधान तो बहुत हताशाजनक और विचारहीन रहे। जैसे रातों-रात दिल्ली के सारे कुटीर उद्योगों को बवाना जैसे बाहरी इलाकों में भेज देना। इससे हजारों मजदूर तो बेरोजगार हुए ही, परन्तु कुछ विशेषाधिकार प्राप्त समुदाय ने अपने फैलाए प्रदूषण का बोझा, गरीब व पिछड़े लोगों पर थोप दिया।

अपनाएं जाएं तो लोग नौ साल तक ज्यादा जीवित रह सकेंगे। शायद निजी और संस्थागत दोनों ही स्तरों पर सतर्क हो जाने का सही समय है। सुप्रीम कोर्ट और एनजीटी के तमाम दिशा-निर्देशों के बावजूद प्रदूषण पर काबू नहीं हो पा रहा है। इसका मुख्य कारण बढ़ते औद्योगिक क्षेत्र, एनएचएआई के किनारे अंधाधुंध निर्माण, बढ़ते वाहन, प्लास्टिक का अंधाधुंध प्रचलन, अनियोजित आवासीय बस्तियां, वनों व पहाड़ियों की कटाई, मास्टर प्लान की उपेक्षा आदि है। एनसीआर व राजधानी की हवा आमतौर पर पूरे साल खतरनाक स्तर से ज्यादा जहरीली रहती है। लोगों का सांस लेना दुभर हो जाता है, दम घुटने लगता है। हार्ट अटैक, दमा और एलर्जी जैसी बीमारियां खतरनाक रूप ले लेती हैं। अस्पतालों में मरीजों की बढ़ती संख्या डरावनी तस्वीर पेश करती है।

विकास व पर्यावरण में संतुलन जरूरी

भारत की राजधानी दिल्ली और चीन की राजधानी बीजिंग में पिछले दिनों तकरीबन एक साथ ही स्मॉग का कहर बरपा। हमारे यहां

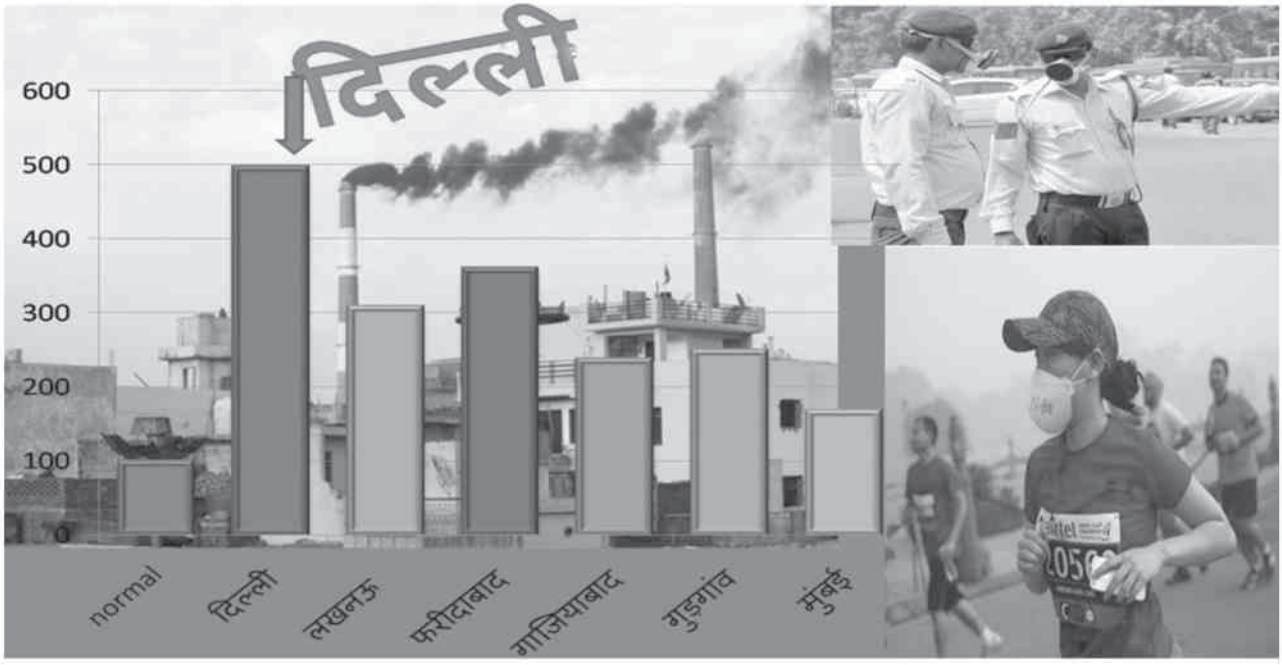

स्थाई समाधान निकले

प्रदूषण की बढ़ोतरी का ठीकरा पहले दीपावली पर आतिशबाजी पर फूटा। अब हरियाणा, पंजाब, एनसीआर और यूपी के सीमावर्ती इलाकों के किसानों को दोष दिया जा रहा है कि उनके द्वारा जलाए जाने वाली पराली के कारण प्रदूषण बढ़ रहा है। इकॉलोजिकल पोइन्ट ऑफ व्यू से सबको पता है कि सर्दियों में हवाओं का रूख उत्तर-पश्चिमी रहता है और हवा की गति बहुत कम रहती, जिससे प्रदूषण, धुंआ और धूल के कण दिल्ली के निचले वायुमंडल में ही बने रहते हैं। जब हवा की गति में तेजी आती है तो धुंध स्वत: छंट जाती है। असल बात है कि हमारी सरकारों, नेताओं और सिस्टम में इच्छाशक्ति की कमी और भ्रष्टाचार में वृद्धि होती रही है। वायु का प्रदूषण जाड़े की शुरुआत में की स्थाई समस्या है। अब तो यह रिपोर्ट भी आई है कि **लंबे समय से जारी स्मॉग और स्थाई प्रदूषण ने दिल्ली-एनसीआर में जिंदगी छह साल घटा दी है। और यह भी कि डब्ल्यूएचओ के मानक आपातकालीन उपायों के नाम पर सतही काम हुए, लेकिन चीन ने युद्धस्तर पर अपनी तकनोलॉजी के बल पर ऐसे उपाय किए जिससे तीन दिन में ही स्मॉग छंट गई।** चीन ने बीजिंग की सभी औद्योगिक इकाइयों में उत्पादन रोकने के आदेश दिए। वहां एन्टी स्मॉग हवाई तोपों द्वारा पानी का स्प्रे किया गया। बड़े-बड़े मोबाइल एयर ऑब्जर्वर लगा कर प्रदूषण को सोख लिया गया। क्लाउड सीडिंग जैसी टेक्नोलोजी में भी चीन अव्वल है। इज़राइल जैसे छोटे से देश ने भी इस दिशा में तकनीकी महारत हासिल कर ली है। भारत तो पूरा ही वायु एवं जल प्रदूषण के लिहाज़ से बेहाल है। देहाती इलाकों में जहां औद्योगीकरण, खनन या अन्य गतिविधियां चल रही है, वहां के हालात भी ठीक नहीं हैं। देश की नदियां औद्योगिक अपशिष्टों की संवाहक बना दी गई हैं। यही कारण है कि बीमारियां महामारियों का रूप ले रही है। लोग तिल-तिल कर मरने को अभिशप्त हैं।

- शिल्पा नागदा

यूआईटी चेयरमैन रवीन्द्र श्रीमाली का अभिनंदन

श्रीमाली ने दिया एक वर्ष पूरा होने पर काम का हिसाब, मेहता ने गिनाई चार वर्ष की उपलब्धियां

उदयपुर राजस्थान का सुरम्य शहर है। यहां के वाशिन्दों को लम्बे समय से सुनियोजित विकास एवं जनसुविधाओं की अपेक्षा रही है। शहर विधायक एवं राजस्थान के गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया के मार्गदर्शन और अध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली के नेतृत्व में पिछले एक वर्ष में नगर विकास प्रन्यास की उल्लेखनीय और गौरवपूर्ण उपलब्धियां रही हैं। श्रीमाली ने पिछले वर्ष 19 नवम्बर को यूआईटी चेयरमैन का पद संभाला। उन्होंने अधिकारियों तथा कर्मचारियों को प्रोत्साहित कर शहर तथा इसकी पैराफरी में आने वाले क्षेत्रों के सुनियोजित विकास की रूपरेखा बनाई तथा कार्य योजना बना कर उसे पूरा करने का संकल्प लिया। इस पर तेजी से क्रियान्वयन भी हुआ और यूआईटी ने मात्र तीन सौ पैसठ दिनों में जनता को अनेक जनसुविधाएं प्रदान की। यूआईटी सभागार में 20 नवम्बर को श्रीमाली ने जन सामान्य व मीडिया के समक्ष एक वर्ष के कार्य का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि आने वाले चन्द सालों में विकास व सौन्दर्य की दृष्टि से शहर का कायाकल्प किया जाएगा। इस अवसर पर यूआईटी सचिव रामनिवास मेहता, विशेषाधिकारी ओ. पी. बुनकर, भूमि अवासि अधिकारी पुष्पेन्द्र सिंह शेखावत सहित सभी वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इस मौके पर यूआईटी कर्मचारियों ने संघ के अध्यक्ष प्रकाश जैन व कॉन्ट्रेक्टर एसोसिएशन के अध्यक्ष सिद्धार्थ शर्मा के नेतृत्व में संवेदको ने श्रीमाली का अभिनंदन किया।

चेयरमैन श्रीमाली का अभिनन्दन करते न्यास कर्मचारी संघ के अध्यक्ष प्रकाश जैन। पास में सचिव रामनिवास मेहता, पुष्पेन्द्र सिंह शेखावत व संजीव शर्मा।

श्रीमाली ने कहा कि शहर में जरूरतमंद लोगों के आशियाने का इंतजार जल्दी ही खत्म होगा। प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत शहर के इर्द-गिर्द अब चार स्थानों पर करीब चार हजार आवास बनाए जाएंगे। पीएम और सीएम आवास-2015 योजना के तहत धोलीमगरी में 1696, सातोड़ी मगरी में 464, दक्षिण विस्तार योजना में 1152 तथा पन्नाधाय नगर योजना में 576 फ्लेट्स का निर्माण तथा आवंटन भी पूरा हो गया है। बहुत जल्द लाभार्थियों का अपने आशियाने में रहने का सपना पूरा होगा।

शहर में यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए रोड नेटवर्क प्रोजेक्ट पर तेजी से अमल चल रहा है। दुर्गा नर्सरी-कुम्हारों का भट्टा, बसंत विहार-स्वामीनगर, दक्षिण विस्तार योजना के मध्य सड़क निर्माण पूरा हो गया है। वहीं शहर के छह जगह कार्य प्रगति पर है और चार जगह सड़क निर्माण प्रस्तावित हैं। पुलिया तथा अण्डरपास के चार कार्य पूरे हो चुके हैं और तीन पर काम चल रहा है। नगरीय परिधि में आने वाले ग्रामों में सात जगह विकास कार्य चल रहे हैं। दस जगह ड्रेनेज कार्य, तीन जगह तालाब व प्राकृतिक सौन्दर्य स्थलों का सौन्दर्यकरण हो चुका तथा कई पर काम प्रस्तावित है। उद्यानों का विकास, सौन्दर्यकरण एवं वृक्षारोपण पर काम चल रहा है। पूरे शहर में योजनाबद्ध रूप से जनसुविधाओं के विस्तार पर समुचित ध्यान दिया जा रहा है। गृहमंत्री गुलाब चन्द कटारिया व शहरवासियों के सपनों को साकार करते हुए आयड़ नदी का कायाकल्प किया जा रहा है। आयड़ नदी की सफाई व साज-सज्जा का पहली बार प्रभावी काम हो रहा है। शहर के मध्य बहने वाली यह गटर लगती नदी अब नए अंदाज और मूल स्वरूप में स्वच्छ व आकर्षक बन जाएगी। आयड़ से निकलने वाले दो करोड़ लीटर गंदे पानी को एसटीपी में प्रोसेस कर ट्रीटेड किया जा रहा है तथा और भी नये एसटीपी बनाए जा रहे हैं। अतिक्रमण और अवैध निर्माण पर बिना भेदभाव किए हथौड़ा चलने से शहर का सुनियोजित विकास आकार ले रहा है।

यूआईटी के जुझारू और दूरदृष्टा सचिव रामनिवास मेहता ने विश्वास जताया कि हमारे सभी प्रयासों पर शहर की जनता का पूरा समर्थन मिल रहा है। राजस्थान सरकार और खासकर गृहमंत्री गुलाब चन्द कटारिया के मार्ग निर्देशन में जल्द ही उदयपुर शहर की तस्वीर बदलने वाली है और आवागमन के लिए सिटी बसों सहित अन्य सुविधाएं बढ़ाई जाएगी। इससे आने वाले समय में उदयपुर शहर का स्मार्ट सिटी बनने की राह प्रशस्त हो सकेगी।

उन्होंने बताया कि प्रन्यास के विगत चार वर्ष में विकास कार्यों एवं जन सुविधाओं पर 3 अरब 88 करोड़ 87 लाख रुपए खर्च किए हैं। कार्यक्रम में अधिशासी अभियंता संजीव शर्मा, अनित माथुर, नीरज माथुर, मुकेश जानी, मुख्य लेखाधिकारी दलपत सिंह राठौड़, विधि अधिकारी शंकर सिंह देवड़ा आदि भी मौजूद थे।

प्रस्तुति : नंद किशोर

N.D.D.B. EXCELLENCE AWARD (26 Sept. 2017)

सम्पूर्ण देश में सहकारिता क्षेत्र के 218 दुग्ध संघों में भीलवाड़ा डेयरी को प्रबन्धन उत्कृष्टता में **प्रथम पुरस्कार** प्राप्त करते हुए

हार्दिक शुभकामनाएं

भीलवाड़ा दुग्ध संघ
अन्तर्राष्ट्रीय मानक प्राप्त संस्था
(ISO 9001& 22000)
EMS & GMP Certified Organisation)

सरस का नया उत्पाद अब बाजार में उपलब्ध

200/500gm

200gm/1kg.

200/500gm

200 ml में उपलब्ध

Real Milk....
Real Icecream...

–: संचालक मण्डल सदस्य :–

निम्बाराम गुर्जर | मालवेन्द्र प्रताप सिंह | काली देवी माली | परसराम शर्मा | गोपाल कुमावत | भैरुलाल जाट | मूलचन्द्र गुर्जर | भैरुलाल जाट | बादाम देवी | रामकरण जाट | रमेश जाट

हम अपने उपभोक्ताओं को उच्च गुणवत्ता के दूध एवं दूध उत्पाद उपलब्ध कराने हेतु संकल्पित एवं समस्त पशुपालकों के आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान की ओर सदैव तत्पर।

सरस भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड

5 कि.मी.,अजमेर रोड,भीलवाड़ा (राज.) फोन नं. 01482–264318,265370,265380,265341
E-mail : Bhlmu-rj@gov.in www.bhilwaradairy.com

सर्दी है तो क्या हुआ?

मौसम बदलने पर सर्दी, जुकाम, खांसी, गला खराब रहना आदि समस्याएं आम हो जाती हैं। डायबिटीज, बीपी, एलर्जी आदि से पीड़ित व्यक्तियों के बीमार होने की आशंका भी बढ़ जाती है। ऐसे में जरूरी है कि विशेष सावधानी बरती जाए।

सर्दियों में बीमारियों से बचने के लिए सबसे पहला कदम है डाइट। यदि डाइट संतुलित और आवश्यकतानुसार होगी तो बीमारियां दूर ही रहेंगी। सर्दियों की डाइट में विशेषकर ऐसे पदार्थों को शामिल करना चाहिए। जिनमें विटामिन-सी भरपूर मात्रा में हो। विटामिन-सी शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में सहायक होता है। इसके लिए डाइट में मौसमी, संतरा, नींबू, ब्रोकली आदि को शामिल किया जा सकता है। इनका जूस बनाकर भी सेवन करें।

एक्सरसाइज न भूलें

सर्दियों में रोगमुक्त रहना है तो एक्सरसाइज से मुंह न मोड़ें। सर्दियों में नियमित व्यायाम का असर लंबे समय तक रहता है और यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बनाये रखता है। व्यायाम डाइट को भी बनाये रखता है। व्यायाम से भूख ज्यादा लगेगी और भूख ज्यादा लगने से आप ज्यादा खायेंगे। ज्यादा खाने से शरीर को आवश्यकतानुसार पोषक तत्व मिलेंगे, जो संक्रमण से लड़ने में सहायक होंगे। तेज चाल से चलनेवाले लोग बीमार कम होते हैं। सप्ताह में पांच दिन रोजाना बीस मिनट व्यायाम से अन्य दिनों की तुलना में सर्दियों में लोग कम बीमार पड़ते हैं।

सोशल एक्टिविटी

सर्दियों में आराम की बजाय घरेलु, व्यापार अथवा सोशल एक्टिविटी में व्यस्त रहें तो यह स्वास्थ्य के लिए ज्यादा अच्छा है। यह तनाव तो कम करता ही है साथ ही शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बनी रहती है। यदि आप सर्दियों में रजाई में दुबके रहने के लोभ में पड़ गए तो सेहत पर बुरा असर पड़ सकता है। सर्दियों में अधिक आराम को तवज्जो देने के बजाय काम करते रहें।

खांसी से परेशानी ज्यादा

सर्दी में सबसे ज्यादा परेशान करने वाला रोग खांसी है। यह किसी भी उम्र के व्यक्ति में कभी भी हो सकती है। सामान्यतया बच्चों में थोड़ी सी ठण्ड लगने से होने वाला यह रोग वृद्धों को भी जल्दी ही अपनी गिरफ्त में लेता है। सर्दियों में ठण्डे पानी से नहाने, गर्म कपड़े न पहनने, ठण्डी हवा में घूमने और ठण्डे पेय पदार्थ पीने-खाने या जीवाणुओं के संक्रमण, धूल, धुंआ अथवा प्रदूषित स्थल पर अधिक समय तक रहने पर खांसी हो जाती है। खांसी से बचने के लिए घरेलू उपाय करें। तुलसी-अदरक का उबला पानी लें, गुड़-आटे की रबड़ी, मुलेठी-पीपल का क्वाथ बना कर पीएं। बाजरे की खिचड़ी गुड़ के साथ खाना भी लाभदायक है। यूं एलोपैथी, होम्योपैथी, आयुर्वेद आदि में कई दवाएं है, जिन्हें डॉक्टर-वैद्य की सलाह पर ही लें।

साफ-सफाई का ध्यान

सर्दियों में ज्यादा बैक्टीरिया और वायरस हाथों के माध्यम से ही शरीर के भीतर पहुंचते हैं। बीमारियों को फैलने से रोकने का सबसे अच्छा उपाय है - छींकने या खांसने के बाद हाथों को एंटीबैक्टीरियल साबुन से अच्छी तरह साफ करें। खाना खाने से पहले और बाद में हाथ धोना न भूलें।

अच्छी नींद

अच्छी नींद की कमी शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता पर असर डालती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने से आप आसानी से सर्दियों में होने वाली बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं। कम नींद लेने से हमारे शरीर में सफेद रक्त कोशिकाएं कम हो जाती हैं और शरीर संक्रमण से लड़ने में कमजोर होता है। सोने का समय निर्धारित करें। हल्का संगीत सुनें, सोने से पहले गर्म पानी से स्नान करें अथवा हाथ, पांव, मुंह धोएं। सोने से पहले कम्प्यूटर का प्रयोग बिल्कुल न करें, क्योंकि यह दिमाग में मेलाटोनिन का स्तर बढ़ा देता है।

-डॉ. ओ.पी. महात्मा

100% VIRGIN PLASTICS
CE
www.italicafurniture.com
An ISO 9001:2008 Company

ITALICA
MOULDED FURNITURE

9201

9111

9803

4120

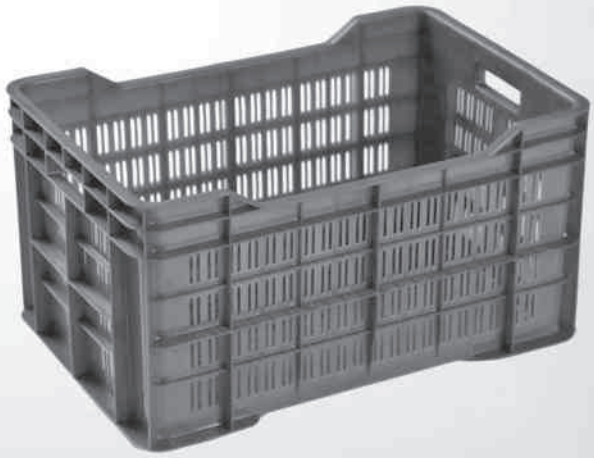
FP543629S

PIL ITALICA LIFESTYLE LIMITED
(An ISO 9001:2015 Certified Company)

Kodiyat Road, Sisarma, Udaipur - 313003 (Raj.) India,
Tel: +91 9649971111
Website: www.italicafurniture.com

Customer Care: +91 9314411101
Email: customercare@italicafurniture.com
ItalicaFurniture ItalicaFur +91 9314411101

2020 तक सड़क हादसों में 50 फीसदी कमी का लक्ष्य

नए साल से होगा लागू नया सड़क सुरक्षा कोड

केन्द्र सरकार सड़क हादसों में कमी लाने और परिवहन के क्षेत्र में व्यापक सुधार के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा कोड बना रही है। केन्द्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी का यह भी कहना है कि अगले 5-7 वर्षों में ई-गाड़ियों का इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार हो जाएगा। इसका उद्देश्य प्रदूषण कम करने के साथ ही दुर्घटनाओं पर भी अंकुश लगाना है।

देश में सड़क सुरक्षा और परिवहन क्षेत्र में सुधार लाने के उद्देश्य से सरकार पहली बार राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा कोड(एनआरएससी) बनाने जा रही है। इसका मकसद 2020 तक सड़क हादसों में 50 फीसदी तक कमी लाना है। सड़क सुरक्षा कोड नए साल में लागू हो सकते हैं। सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्रालय ने डेढ़ माह पूर्व अधिसूचना जारी कर राज्यों के परिवहन मंत्रियों के समूह का गठन कर लिया था।

यह समूह सड़क परिवहन के तमाम विषयों, विशेषकर राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा कोड बनाने का खाका तैयार कर उसे अन्तिम रूप देने में जुटा है। सड़क सुरक्षा कोड बनाने के लिए समूह परिवहन क्षेत्र सहित वाहन निर्माता कंपनियों व सड़क सुरक्षा विशेषज्ञों से मशविरा कर रहा है। यह अपनी सिफारिशें संभवत: चालू माह में सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्रालय को सौंप देगा। इसके पश्चात् मंत्रालय सड़क सुरक्षा कोड के तहत नए नियम जारी करेगा।

मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार वर्तमान में कार, ट्रक, एम्बुलेन्स, क्रेन निर्माण, वाहनों की रफ्तार, राष्ट्रीय राजमार्ग निर्माण, राजमार्ग निर्माण संबंधी योजनाएं, सड़क यातायात, राजमार्ग किनारे यात्री सुविधाएं, हाईवे पेट्रोलिंग, हाईवे पर आपदा प्रबंधन, हाईवे किनारे स्वास्थ्य सुविधाएं के लिए पृथक कोड हैं। नए राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा कोड में सभी क्षेत्रों के कोड को समायोजित किया जा रहा है। इसके अलावा इसमें ट्रक, कार, बस, टूरिस्ट-स्कूल बस की रफ्तार, ड्राइवरों का व्यवहार, पार्किंग स्थल, साइकिल-पैदल राहगीर आदि के लिए दिशा-निर्देश शामिल भी किए जा रहे हैं।

एक नज़र

- 2016 के सरकारी आंकड़ों के मुताबिक देश में प्रति वर्ष पांच लाख से अधिक सड़क हादसे होते हैं। इसमें तीन लाख लोग अपंगता का शिकार होते हैं। जबकि डेढ़ लाख लोगों की असमय मौत हो जाती है।
- सड़क हादसों के कारण हर साल देश को 60,000 करोड़ का नुकसान होता है। यह देश की जीडीपी का लगभग 3 फीसदी है।
- सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने सड़क सुरक्षा व परिवहन क्षेत्र में सुधार के लिए 11,000 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। यह धनराशि पांच सालों में खर्च की जाएगी।

चार साल से फांक रहा धूल

परिवहन क्षेत्र के विशेषज्ञों का कहना है कि दक्षिण अफ्रीका के विकासशील देशों में 2005 में राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा कोड लागू किए जा चुके हैं। 2016 में कई देशों ने सड़क सुरक्षा कोड के संशोधित संस्करण भी लागू कर दिए थे। परिवहन क्षेत्र की शिखर संस्था इंडियन रोड कांग्रेस (आरआरसी) ने विश्व बैंक की सहायता से 2013 में ही राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा कोड तैयार कर लिया था, जो पिछले चार साल से धूल फांक रहा है।

100 फीसदी इलेक्ट्रिक वाहनों का दौर

भारत में अगले 5-7 वर्षों में ई-गाड़ियों का इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार हो जाएगा।

केन्द्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है कि 2022 तक भारत में 100 फीसदी ई-गाड़ियां ही चलेगी। इसी वर्ष मई में नीति आयोग भी इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सहायता और डीजल-पेट्रोल गाड़ियों के रजिस्ट्रेशन घटाने के लिए माहौल बनाने की सलाह दे चुका है।

एयर बैग्स अनिवार्य

जुलाई, 2019 से सभी कारों में एयरबैग्स, सीट बेल्ट रिमाइंडर्स, 80 किमी प्रति घंटे से अधिक पर अलर्ट करने वाला स्पीड वॉर्निंग सिस्टम, रिवर्स पार्किंग अलर्ट्स, मैनुअल ओवरराइड सिस्टम आदि फीचर्स देना अनिवार्य हो जाएगा। परिवहन मंत्रालय ने इस पर मुहर लगा दी है।

टेस्टिंग के बाद रेटिंग

एक जुलाई, 2019 से निर्माताओं के लिए सभी कारों में एआईएस-145 मानक सुरक्षा फीचर देना अनिवार्य होगा। कारों की सुरक्षा के परीक्षण के लिए प्रस्तावित भारत न्यू कार एसेसमेंट प्रोग्राम के तहत इन फीचर वाली सभी कारों को सुरक्षा की फाइव स्टार रेटिंग प्रदान की जाएगी।

दूर बहुत मंजिल

वाहन उद्योग का कहना है कि इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए विनिर्माताओं को 2030 में करीब 1 से 1.5 करोड़ इलेक्ट्रिक कार बेचनी होंगी, जो 2015 में दुनिया भर में बिकी इलेक्ट्रिक कारों की 8 से 10 गुना होगी। भारत में तो अभी साल में बमुश्किल 22,000 इलेक्ट्रिक वाहन बिकते हैं।

– नितेश सर्राफ

क्यों जरूरी

एयर बैग्स अनिवार्य : पेरिस समझौते के तहत 2030 तक कार्बन उत्सर्जन घटाना। तेल की मांग घटाने को : 82 फीसदी तेल का आयात होता है अभी। 2018 में 5.51 लाख करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान।

चुनौती

चार्जिंग स्टेशन : देश में अभी 25 चार्जिंग स्टेशन हैं। 400 स्टेशन खोजने की अनुमति दी है।

महंगी गाड़ियां : कार की लागत में 30-40 फीसदी हिस्स बैटरी का ही होता है। इसमें कमी लानी होगी।

समाधान

- **पहले बड़े शहरों में पेट्रोल पम्प पर चार्जिंग की सुविधा दी जाएगी। फिर छोटे शहरों और गांव तक पहुंचेंगे।**
- **सौर ऊर्जा की तरह ही गाड़ियों की महंगाई घटेगी। बड़ी कंपनियों के इस क्षेत्र में आने से दाम घटेंगे।**

कीर्ति शेष

सो गए ठुमरी के मीठे सुर

सुर साधिका गिरिजा देवी का 25 अक्तूबर को कोलकाता में निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार उनके पैतृक नगर वाराणसी में हुआ। गिरिजा देवी का बचपन गंगा किनारे अपने शहर वाराणसी में ही बीता। पंडित सूरज प्रसाद से शुरूआती तालीम ली, फिर ख्यातनाम संगीताचार्य पंडित श्रीचंद मिश्र के सान्निध्य में शास्त्रीय संगीत व सुरों की साधना की। वे संगीत के हर पक्ष की बारीकी से जानकारी रखने वाली और संगीत को सहज भाव में प्रस्तुत करने की कला में माहिर थीं। छंद, प्रबंध, निबंध, धमार, ख़्याल, टप्पा, ठुमरी, कजरी, चेता-चैती आदि विधाओं का ज्ञान हासिल करने के बाद उन्होंने सुर-साधना को ही अपनी पूजा बना लिया। शास्त्रीय संगीत विधा को उन्होंने नई ऊंचाइया देकर खूब संजोया-बढ़ाया।

गिरिजा देवी

वे प्राय: कहती थीं कि 'संगीत ही वह विधा है, जिसमें गुरु-शिष्य परम्परा का गरिमा के साथ निर्वाह होता है।' संगीतज्ञ पिता से बेटा-बेटी भी दीक्षा लेकर और गंडा बंधवाकर ही संगीत साधना शुरू करते और रियाज करते हैं। दीक्षा संस्कार के बाद ही उन्हें शिष्य रूप में गुरु स्वीकार करता है। संतान माता-पिता से संपत्ति और संस्कार ले सकती हैं, लेकिन संगीत तो ईश्वरीय देन है। जब तक रियाज नहीं होगा, समर्पण नहीं आएगा।'

संगीत तो वैसे भी आस्था से जुड़ा है। ऐसे में बड़ों का आशीर्वाद, उनकी सीख ही किसी संगीतकार को सार्थक मुकाम दिला सकती है। संगीतज्ञ होना और विधा में माहिर होना दोनों अलग बातें हैं। गिरिजा देवी का देहावसान भारतीय शास्त्रीय संगीत के उस अध्याय का पटाक्षेप है, जिसने रागों को नए अर्थ दिए। यह एक पूरे संगीत युग का समापन भी है। अपने स्नेहियों व आत्मीयजनों में 'अप्पाजी' के नाम से मशहूर गिरिजा देवी को देश ने भरपूर आत्मीयता दी। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' से नवाजा। काशी तो जैसे उनका दिल था। वहां एक ऐसा संगीत केन्द्र चाहती थीं, जहां वे अंतिम समय तक शास्त्रीय संगीत की तालीम देती रहें। ठुमरी साम्राज्ञी की यह ख़्वाहिश पूरी न हो सकी। बनारस में संगीत अकादमी होती तो उन्हें शिव की नगरी छोड़कर कोलकाता की आइटीसी म्युजिक रिसर्च अकादमी नहीं जाना पड़ता। मशहूर शास्त्रीय गायक पंडित छन्नूलाल मिश्र ने कहा कि उनके जीवित रहते उनकी यह इच्छा पूरी होनी चाहिए थी। वे बनारस की ही नहीं, भारत की शान और संगीत की आत्मा थीं। बनारस ने बिसमिल्लाह खान, बिरजू महाराज और गिरिजा देवी जैसे संगीत अनमोल नगीने दिए हैं। संगीत के इस परम्परागत गढ़ में ऐसी अकादमी होनी ही चाहिए जो यहां के संगीत की अलग-अलग शैलियां पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करती रहे। सरकारें पता नहीं किस मिट्टी की बनी हैं, जिन पर संगीत, कला, साहित्य, संस्कृति जैसे कोई रंग चढ़ते ही नहीं। गिरिजा देवी को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने पहुंचे सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बनारस के सांस्कृतिक संकुल को गिरिजा देवी की स्मृति को समर्पित करने की घोषणा की है। साहित्य, कला और संस्कृति की समृद्ध परम्पराओं को अक्षुण्ण रखने के लिए ज़रूरी है कि सरकारें 'अकादमियों' की रेवड़ियां राजनेताओं के चाटुकारों को बांटने की बजाय निष्णात-विशेषज्ञों को सौंपे।

– विवेक

खुदक़शी समस्या का हल नहीं

परिस्थितियों से हारकर पलायन करना सिर्फ कायरता और परिवार को संकट में डालने वाला फैसला है। आत्महत्या की बढ़ती घटनाएं समाज के लिए चिंता का विषय है। भारतीय जीवन पद्धति दायित्वों अथवा परेशानियों से पलायन की स्वीकृति भी नहीं देती। चौरासी लाख यौनियों में भटकने के बाद जीव को मानव देह का उपहार मिलता है। जीवन तो एक उत्सव है, जिसे हर पल हंसी-खुशी के साथ मनाया जाए। आत्मघात समस्या का हल नहीं। जीवन तो संघर्ष है, उसके बिना जीने का मज़ा भी क्या?

हाल के कुछ महीनों में समाज में प्रतिष्ठित व्यक्तियों की आत्महत्याएं काफी चर्चा में रहीं। कुछ माह पूर्व बिहार के बक्सर में तैनात जिलाधिकारी मुकेश पांडेय ने जिन्दगी से तंग आने और अच्छाई से विश्वास उठ जाने की बात कह कर ट्रेन के आगे कूद कर जान दे दी। 23 अक्टूबर को उदयपुर निवासी सेवानिवृत्त आरएएस ने निज मंदिर के कमरे में कथित रूप से पहले हाथ की नसें काटी, फिर दूसरे कमरे में फंदे पर लटक कर जान दे दी। 9 अक्टूबर को उदयपुर के ही प्रतापनगर में शिक्षक ने परिवार के चार लोगों के साथ ज़हर पीकर आत्महत्या कर ली। बताया जा रहा है कि बड़ी बेटी के अस्वीकार्य प्रेम प्रसंग के चलते परिजनों ने सामाजिक प्रतिष्ठा की खातिर खुदक़शी कर ली। व्यक्ति हालातों से मुकाबला करने में कितना ही मजबूत दिखाई पड़े परन्तु घर की छोटी सी परेशानी उसे पस्त कर देती है।

जीवन अमूल्य है, इसलिए वह खूबसूरत भी है। जीवन है, तो दु:ख और सुख दोनों होंगे। जिंदगी में एक और एक का जोड़ हमेशा दो नहीं होता, कई बार ग्यारह भी हो जाता है, तो कई बार शून्य हाथ लगता है। हर स्थिति में मस्त और प्रसन्न रहने की आदत ही सुखी रहने का एकमात्र तरीका है। असफलता का विश्लेषण ज़रूर करें, लेकिन रोते रहने या मुश्किलों से भागना तो समस्या का कोई हल नहीं निकल सकता। विषम स्थिति में पल भर रुकें, विचार करें और नए सिरे से हौसले को मज़बूती दें। यही सकारात्मक जीवन दर्शन है। नकारात्मक विचार तो विनाश की ओर ही ले जाता है। इसलिए अपनी हर सांस के साथ एक ताज़ा शुरूआत करें।

क्यों करते हैं आत्महत्या?

भारत में आत्महत्या के आंकड़े काफी भयावह हैं। यहां हर घंटे 15 लोग आत्महत्या करते हैं। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार आत्महत्या करने वालों में सत्तर फीसद से ज्यादा लोगों की वार्षिक आय एक लाख रुपये से कम थी। यानी बदहाली भी एक बड़ा कारण है। खुदकुशी के कारणों में पारिवारिक समस्या, बीमारी, वैवाहिक मुद्दे, मानसिक अवसाद, प्रेम प्रसंग, नशाखोरी, बेरोजगारी, ग़रीबी, संपत्ति बंटवारे, ऋणग्रस्तता, परीक्षा में असफलता, दहेज प्रताड़ना आदि के बाह्य मुद्दे अहम् बनते हैं। इसके अलावा आभ्यंतरिक मुद्दों में सामाजिक प्रतिष्ठा का क्षरण, प्रिय की मृत्यु का आघात, रिश्तों में अविश्वास नपुंसकता, तलाक़, अन्तरजातीय वैवाहिक सम्बन्ध जैसे अन्य कारक भी प्रमुखता से सामने आते हैं। बात यहीं तक सीमित नहीं है, बहुत सारे और भी कारक हैं जिनसे व्यक्ति भीतर ही भीतर घुटता है और एक दिन आकस्मिक रूप से खुदकुशी जैसा जघन्य कदम उठा लेता है।

हाऊ मच लैंड यू रिक्वायर्ड?

वैश्वीकरण के माहौल में 'मार्केट बेस्ड कल्चर' ने इंसान को चूहादौड़ में उलझा दिया है। हर व्यक्ति मुनाफा बढ़ाने और पैसा कमाने की कभी न खत्म होने वाली दौड़ में शरीक है या होना चाहता है। भागमभाग की अंधी दौड़ स्पर्द्धा में एक क्षण भी रुक कर सिंहावलोकन की व्यक्ति को फुर्सत नहीं। जीवन रोबोट है, जिसे बिना रूके काम में जुटे रहना है। यही कारण है कि लोग अपनी अनगिनत इच्छाओं की पूर्ति में लगे रहते हैं टालस्टॉय की एक कहानी है 'हाऊ मच लैंड यू रिक्वायर्ड'। रूस का एक जमींदार लम्बी-चौड़ी जमीन पाने की लालसा में साइबेरिया पहुंचा, जहां मुफ़्त में ही जितनी चाहो, ज़मीन मिल जाती थी। साइबेरियावासियों ने उससे कहा सूर्योदय से सूर्यास्त तक जितनी ज़मीन पर वह अपने झण्डे गाड़ देगा, वह नि:शुल्क उसे मिल जाएगी, पर शर्त यह थी कि जहां से वह शुरू करेगा उसे सूर्यास्त के ठीक समय वहीं पहुंचना होगा। अन्यथा उसे इंच भर जमीन भी नहीं मिलेगी। बेशुमार भूमि की आस में वह अगले दिन बिना रुके व थके जमीन पर लैंडमार्क करता रहा। न खाया, न पिया और न ही पल भर विश्राम किया। स्टार्ट पॉइंट पर सूर्यास्त के ठीक समय वापस पहुंचने के लिए वह दौड़ता रहा। परन्तु जैसे ही शुरुआती बिन्दु से चार कदम पीछे था कि वह निढाल गिर पड़ा। हालांकि उसने स्टार्ट पॉइंट को हाथ फैलाकर उंगलियों से स्पर्श तो कर दिया, परन्तु प्राण न बचा सका।

आत्महत्या सिर्फ कायरता

आत्महत्या कायरता नहीं तो क्या है ? बावजूद इसके बीमारी से जूझते लोगों के लिए 'इच्छामृत्यु' की वकालत हो रही है। किसानों, मजदूरों, सामाजिक, कार्यकर्ताओं, ब्यूरोक्रेट्स, प्रतियोगी परीक्षाओं के छात्रों, रोज़गार के लिए

संघर्षरत युवाओं की आत्महत्याएं विचलित करती हैं। 'थ्री इडियट' फिल्म में इंजीनियरिंग छात्र की आत्महत्या पर फिल्म का अन्य पात्र रैंचो कहता है, 'यह आत्महत्या नहीं हत्या है, क्योंकि प्रेशर गले पर नहीं दिमाग पर था।' यह प्रेशर किसी मनोविकार का नहीं, बल्कि आज की सामाजिक आर्थिक संरचना ने पैदा किया है। ब्लू व्हेल जैसे खतरनाक गेम्स के चक्कर में युवाओं का आत्महत्या की ओर बढ़ना भी चिंता का विषय है।

मात्र मनोवैज्ञानिक कारण नहीं

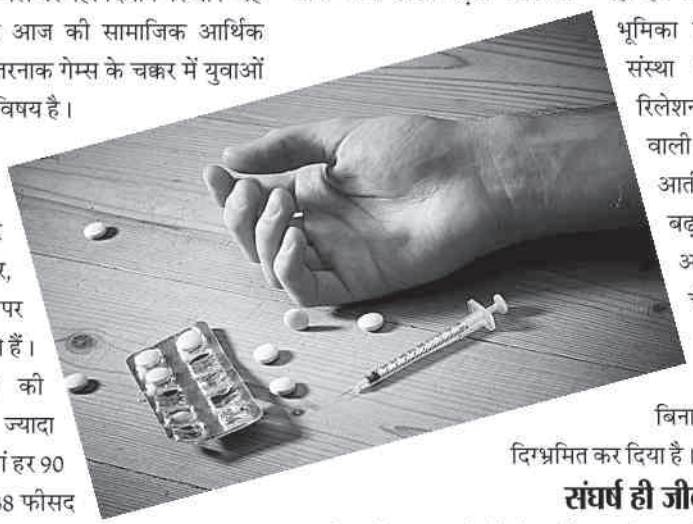

ध्यान देने वाली बात है कि आत्महत्या के पीछे कोई न कोई सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक कारक होता है। प्राय: सरकार, समाजशास्त्री और चिकित्सक खुदक़शी पर मन:स्थितियों कारणों पर ही ज्यादा गौर करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की रिपोर्ट कहती है कि भारत में सबसे ज्यादा आत्महत्याएं स्वरोजगार क्षेत्र में होती है। यहां हर 90 मिनट में एक युवा आत्महत्या कर रहा है। 38 फीसद युवाओं में यह विनाशक प्रवृत्ति है और इनमें से 15 से 35 वर्ष की आयु वर्ग के लोग शामिल हैं।

पिछले डेढ़ दशक में दस से पन्द्रह साल के बच्चों की आत्महत्या के मामले में 75 फीसद की वृद्धि दर्ज की गई है। जो समाज और सरकार को उनकी असफलता का आईना दिखा रही है। परिवार, मित्र, विवाह, संगी-साथी, शिक्षा संस्थान, स्वयंसेवी संस्थान, धार्मिक प्रवचनकर्ता, उपदेशक और तथाकथित प्रबंधन गुरु भी इस आत्मघात को रोक नहीं पा रहे हैं। विपरीत स्थितियों में जूझने और संयम का हुनर तार-तार हो रहा है। जीवन जीने के ज़रूरी धैर्य और अदम्य साहस को क़ायम रखने में नातेदारी और परिवार का ताना-बाना ढीला पड़ता नज़र आ रहा है। बिखराव रोकने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला विवाह जैसी संस्था भी इन दिनों 'लिव इन रिलेशन' जैसी क्षणिक कांसेप्ट वाली विचारधारा से डरी हुई नज़र आती है। फूहड़ फिल्मों, टीआरपी बढ़ाने के मोहपाश में बंधे अपसंस्कृति के संवाहक चैनल्स, गड़े-मुर्दे उखाड़ने वाले इंटरनेट के सर्च इंजन और सोशल मीडिया के बिना लगाम के घोड़े ने लोगों को दिग्भ्रमित कर दिया है।

संघर्ष ही जीवन

मानसिक रोग आज लोगों को पूर्वापेक्षा अधिक चपेट में ले रहे हैं। दुनिया भर में पैंतालीस करोड़ से अधिक लोग इसकी चपेट में हैं। भारत में पांच करोड़ से ज्यादा मनोरोगी हैं। मानसिक अवसाद या तनाव संहारक बन रहा है। डिप्रेशन में कुछ लोग खुदक़शी की राह बढ़ जाते हैं। ऐसे वक़्त में अकेलापन अधिक उकसाता है। बदनामी और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रश्न अक्सर तनाव का कारण बनता है। समाज के प्रबुद्ध लोगों व धर्माचार्यों को आत्महत्याएं रोकने के लिए पहल करनी चाहिए।

-जगदीश सालवी

LAXMI ENGINEERING WORKS

FEW OF OUR OTHER PRODUCT

✦ Jaw Crusher ✦ Bucket Elevator ✦ Belt Conveyor ✦ 3,4 Roller Mill
✦ Hammer Mill ✦ Ball Mill ✦ Whizzer Classifier ✦ Screw Conveyor
✦ Microzine Plant for 15 & 20 ✦ Microns ✦ Material Handling Equipments

OUR SPECIALTY : CUSTOM BUILT PLANTS & MACHINERY

E- 176, Road No. 5, Mewar Industrial Area, Madri, Udaipur - 313003 Tel. : 0294-2490060, 2490735
E-mail : info@laxmiengineering.com | govind@laxmiengineeering.com Website : www.laxmiengineering.com

ज़िद और ज़िंदादिली यानी कृष्णा सोबती

हिन्दी की प्रख्यात लेखिका कृष्णा सोबती(92) को साल 2017 का प्रतिष्ठित ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया जाएगा। भारतीय ज्ञानपीठ के निर्णायक मंडल की हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक डॉक्टर नामवर सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक में यह निर्णय हुआ। 53वां ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाली सोबती की पहचान स्त्री मुद्दों पर बेबाक लिखने वालों में है। उन्हें पुरस्कार में 11 लाख रुपये, प्रशस्ति पत्र, वाग्देवी की प्रतिमा तथा प्रतीक चिह्न प्रदान किया जाएगा। पिछले साल यह पुरस्कार बांग्ला के मशहूर कवि शंख घोष को दिया गया था।

-वेद व्यास

भारतीय साहित्य का समसामयिक परिदृश्य बहुत उत्साहवर्द्धक नहीं है क्योंकि वह उपनिवेशवाद, सामंतवाद और स्वतंत्र भारत की जाति, धर्म से पीड़ित चेतना से लड़ते-लड़ते अब बाजारवाद, लोकतांत्रिक अधिनायकवाद और असहिष्णुता से भरी गैर बराबरी के संघर्ष में लहुलुहान है। वह महाभारत के अर्जुन की तरह नहीं अपितु द्रोपदी और कर्ण अथवा अभिमन्यु की तरह घेरा और मारा जा रहा है। शब्द संसार का न्याय प्रिय इतिहास हजारों साल से शापित है। फिर भी साहित्य और सामाजिक संवेदना का सच ये है कि मनुष्य की मुक्ति चेतना कभी हारती है लेकिन कभी मरती नहीं है। ज्ञानपीठ का सर्वोच्च सम्मान हिन्दी की सुप्रसिद्ध लेखिका कृष्णा सोबती को दिए जाने की घोषणा सुनकर मेरा मन फिर एक आशा के साथ कहता है कि वर्षों बाद किसी नारी चेतना को पुरस्कृत कर भारत की मनीषा ने मानवता के उज्जवल भविष्य को रेखांकित किया है और सृजन का गौरव बढ़ाया है।

मुझे याद पड़ता है कि भारतीय ज्ञानपीठ, इससे पहले कर्तुल ऐन हैदर, महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम और महाश्वेता देवी को भी इसी तरह सम्मानित कर चुका है और ये सभी रचनाकार आज हमारे साहित्य की गरिमा के अनुकरणीय प्रतीक हैं। लेखकों की लंबी कतार में इन कुछ लेखिकाओं का स्थापित होना साहित्य को एक बेहतर और ईमानदार दुनिया का विकल्प देता है। कृष्णा सोबती की रचनाएं मैंने एक पाठक की तरह पढ़ी हैं और इसीलिए कहना चाहता हूं कि वे भारत के बदलते समाज का आईना हैं। कर्तुल ऐन हैदर(उर्दू), महादेवी वर्मा (हिन्दी), महाश्वेता देवी(बंगला), अमृता प्रीतम(पंजाबी) विभिन्न भारतीय भाषाओं के समाज, संस्कार, स्वभाव और अंधेरे से लड़ती हुई देश की आधी आबादी का हलफनामा पेश करती हैं और कहती हैं कि सभ्यताओं के विकास में हजारों साल बाद भी नारी मुक्ति का एक सपना, युद्ध और शांति के सभी अध्याय लिख रहा है। गुलाम भारत से आजाद भारत तक की स्त्रियों की शब्द यात्रा-मीरा बाई की मुक्ति परम्परा को चुपचाप आगे बढ़ा रही हैं।कृष्णा जी विभाजन के बाद दिल्ली में आकर बस गई। 1966 में अपने उपन्यास और कहानी लेखन (मित्रो मरजानी, सिक्का बदल गया - बादलों के घेरे आदि) को लेकर साहित्य चर्चा में आई। कृष्णा जी आज 92 वर्ष की हैं और जीवन की जिद और जिंदादिली के लिए जानी जाती हैं। आपको याद होगा कि इन्होंने अपनी पुस्तक 'जिंदगीनामा' को लेकर अमृता

ज़िंदगीनामा

जन्म - 18 फरवरी 1925, गुजरात(अब पाकिस्तान में)

कृतियां

डार से बिछुड़ी, मित्रो मरजानी, यारों के यार-तीन पहाड़, बादलों के घेरे, सूरजमुखी अंधेरे के, ज़िंदगीनामा, ऐ लड़की, दिलो दानिश, हम हशमत, गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिन्दुस्तान(हाल ही में प्रकाशित)

सम्मान

- 1980 में 'ज़िंदगीनामा' के लिए साहित्य अकादमी और 1996 में साहित्य अकादमी की फेलोशिप।
- 1991 में लाइफटाइम लिटरेरी अचीवमेंट अवार्ड।
- 1981 में शिरोमणि पुरस्कार।
- 1982 में हिन्दी अकादमी पुरस्कार।
- 1996 में साहित्य अकादमी पुरस्कार।
- केके बिड़ला फाउंडेशन का व्यास सम्मान।
- हिन्दी अकादमी दिल्ली का शलाका सम्मान 2000-2002 के लिए।

प्रीतम के इसी नाम से छपे उपन्यास 'जिन्दगीनामा' के खिलाफ अदालतों में 25 साल तक मुकदमा लड़ा। एक लेखक अपने सच और मौलिकता को लेकर कितना संवेदनशील हो सकता है, यह उसकी नाक की लड़ाई का उदाहरण है। मैं अपनी समझ से वर्तमान में साहित्य जगत की पुरस्कार सम्मान और अनुदान प्रणाली को देखकर पुरस्कार देने वाली सरकार और संस्थानों से एक लेखक को बड़ा मानता हूं। इससे भी आगे जो लेखक अपनी असहमति से कोई सम्मान ठुकरा देता है तो मैं उस लेखक को साहसी मानता हूं।

सत्ता और व्यवस्था के पिंजरे में कोई रचनाकार यदि पुरस्कार देने वाले को अस्वीकार करता है तो उसकी चेतना का अपना औचित्य है। कैफी आजमी और गुलाब रब्बानी तांबा ने पद्मश्री लौटाकर तब सरकार की साम्प्रदायिक राजनीति का विरोध किया था तो 2010 में कृष्णा सोबती ने भी पद्मश्री सम्मान लेने से मना कर दिया था। कृष्णा सोबती का जुझारूपन जहां इनकी सभी रचनाओं में बेबाकी से देखा जा सकता है वहां उनकी कृतियों में विस्थापन का दर्द और मानवीय रिश्तों की घनीभूत संवेदना भी उनकी विशेषता है।

केन्द्रीय साहित्य अकादमी से भी सम्मानित कृष्णा सोबती का सम्मान एक बार फिर देश-प्रदेश में 'स्त्री विमर्श' को नया आधार दे सकता है क्योंकि हमारा नया-पुराना सोच और चिंतन परम्परा आज भी महिलाओं को लेकर उदार नहीं है तथा हिंसक और दमनकारी है। यहां हर लेखिका को सामाजिक वर्जनाओं को तोड़कर ही आगे आना पड़ता है क्योंकि भारत में दलित-आदिवासी तथा अल्पसंख्यक लेखन तथा लेखक को घोर उपेक्षाओं का सामना करना पड़ता है। इनके लिए समर्पण और समझौता ही विकास का

कृष्णा सोबती के बहाने मैं आंखों देखी और कानों सुनी ये बात भी कहना चाहता हूँ कि हम और हमारा समय लगातार बदल रहा है। सभी तरफ नारी चेतना का संघर्ष और सम्मान भी बढ़ रहा है। लेकिन सोचने वाली बात ये है कि साहित्य में वर्चस्व, सम्मान, पुरस्कार और अनुदान के अखाड़े आज भी पुरुष प्रधान हैं लेखिकाओं के सृजन संसार को आसानी से महत्व नहीं दे रहे।

रास्ता है। कृष्णा सोबती के बहाने हम अपनी आंखों देखी और कानों सुनी ये बात भी कहना चाहते हैं कि हम और हमारा समय लगातार बदल रहा है।

सभी तरफ नारी चेतना का संघर्ष और सम्मान भी बढ़ रहा है। लेकिन सोचने की बात ये है कि साहित्य में वर्चस्व, सम्मान, पुरस्कर और अनुदान के अखाड़े आज भी पुरुष प्रधान हैं लेखिकाओं के सृजन संसार को आसानी से महत्व नहीं दे रहे हैं। हमने आज तक मीराबाई को भी मुक्ति की जगह भक्तिधारा में ही बांध रखा है। कृष्णा सोबती, कर्तुल ऐन हैदर, महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम और महाश्वेता देवी की युग चेतना को जानकर ही हम कहना चाहते हैं कि साहित्य जगत में उत्कृष्टता, विशिष्टता, विविधता और व्यापक संवेदनाओं का इन्द्रधनुष लेखिकाओं के भीतर ही बसता है। अत: चेतना का निर्माण और बदलते समय का संसार कृष्णा सोबती के साथ हमें फिर से पढ़ना चाहिए।

Mahendra Jain
+91 93527 98887

With Best Compliments

Prateek Jain
+91 94601 84445

Modern Ayurvedalaya

Modern Ayurvedic

O/s Delhi Gate, Hummad House,
Udaipur - 313001, Ph. : 0294-3292890
E-mail : modern_ayurvedics@yahoo.com

Modern Ayurvedic Centre

Ayurvedic Clinic & Consultancy Services
Ayurvedic Medicines & Herbal Products
House No. 2, Shri Niwas, Lane No. 3, Near Manglam
Fun Square, Durga Nursery Road, Udaipur - 313 001

सर्दियों में भी खूबसूरती कायम

- निष्ठा शर्मा

सौन्दर्य व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। सुन्दरता केवल स्वयं को नहीं वरन् आपकी मौजूदगी के परिवेश को भी सुखानुभूति प्रदान करती है। सर्दियों के मौसम में ठंडी हवा से त्वचा शुष्क हो जाती है और उसकी देखभाल में लापरवाही से न सिर्फ चेहरे की त्वचा रूखी, बेजान व झुर्रीदार बन जाती है बल्कि हाथ-पांव की त्वचा भी फटने लगती है। इनमें सबसे अधिक प्रभावित होती हैं, एड़ियां। सर्दियों में तेल ग्रंथियां निष्क्रिय हो जाती हैं। जरा सी सावधानी से आप चेहरे को दमकाए और एड़ियों को भी आकर्षक और खूबसूरत बनाए रख सकती हैं।

- सर्दी के मौसम में ठंडी हवाओं से चेहरा रूखा और कांतिहीन हो जाता है। अतः साबुन का उपयोग कम से कम किया जाए, क्योंकि साबुन में मौजूद कास्टिक सोडा त्वचा को और ज्यादा रूखा बना देता है।
- मलाई में चुटकी भर हल्दी व एक-दो बूंदें नींबू की मिलाकर पेस्ट तैयार कर लें व चेहरे पर लगाएं।
- नारियल व जैतून के तेल की मालिश करने से त्वचा सामान्य रहेगी व खुश्की दूर हो जाएगी।
- सूखी ब्रेड के किनारे तोड़कर दूध में रात को भिगो दें। प्रातः इसमें शहद मिलाकर चेहरे पर मलें। दो-चार दिन के नियमित प्रयोग से चेहरे पर कांति लौट आएगी।
- पपीते के छिलकों को सुखाकर अच्छी तरह पीसकर चूण बना लें। इस चूर्ण में ग्लिसरीन मिलाकर चेहरे पर मलें व 15-20 मिनट के बाद गुनगुने पानी से धो लें। शुष्कता दूर हो जाएगी।
- भोजन में विटामिन 'ए' की मात्रा अधिक रखें। गाजर, टमाटर, मौसमी, हरी सब्जियां, सलाद, दूध व मक्खन आदि ज्यादा खाएं। विटामिन 'ए' में किसी भी प्रकार की खुश्की व उससे होने वाली जलन को दूर करने की शक्ति है।
- ग्लिसरीन में नींबू व गुलाब जल मिलाकर मिश्रण तैयार कर लें व रात को सोने से पहले चेहरे पर मलें। त्वचा मखमल-सी लगने लगेगी।
- ठण्डी हवाओं के कारण चेहरे की त्वचा में ढीलापन आ जाता है। अण्डे की सफेदी में हल्दी, शहद व मुलतानी मिट्टी मिलाकर पेस्ट बना लें व चेहरे पर लगाएं तथा सूख जाने के पश्चात् पानी से धोकर, तौलिए से अच्छी तरह पोंछ लें। त्वचा में कसाव आ जाएगा।

फटी एड़ियों को दें आराम

अन्य तत्वों के समान कैल्शियम भी शरीर के लिए आवश्यक तत्व है। इस तत्व के अभाव में एड़ियां फटती हैं। नंगे पांव चलने और अधिक देर तक पानी में रहने से एड़ियां फटती हैं। यदि आप एड़ियों को फटने से बचाना चाहती हैं तो घर पर भी नंगे पांव न रहें। यदि एड़ियां फट गई हैं, चलने में पीड़ा है या दरारों से खून निकलता है तो निम्न सावधानियां बरतें।

- पानी में बोरेक्स पाउडर या नमक मिलाकर उसमें करीब 5 मिनट तक पांवों को रखें। फिर उन्हें धोकर व तौलिए से अच्छी तरह पोंछकर जैतून का तेल लगाएं।
- एक चम्मच एरंड का तेल, एक चम्मच नींबू का रस तथा एक चम्मच गुलाब जल को एक साथ मिला लें। रात को सोते समय इस मिश्रण से एड़ियों की मालिश करें।
- बिवाइयों पर मेंहदी का लेप लगाएं।
- आम की गुठली का महीन पाउडर नारियल तेल में मिलाकर बिवाइयों पर लगाएं। इससे दरारें भरेंगी और एड़ियों का कालापन भी दूर होगा।
- एक चम्मच शुद्ध घी तथा एक चम्मच शुद्ध मोम लेकर एक साथ किसी पात्र में गर्म करें। जब दोनों मिलकर एकसार हो जाएं तो उतार लें तथा गर्म-गर्म द्रव को रूई से दरारों पर टपकाएं। कुछ दिन यह प्रयोग करने से एड़ियां ठीक हो जाएंगी।
- यदि फटी एड़ियों से खून निकलता हो तो वैसलीन लगाकर गर्म कपड़े से सेक करें। विटामिन बी कॉम्पलेक्स का सेवन करें।
- एड़ियों की दरार गहरी हो तो स्प्रिट में रूई भिगो थोड़ी-थोड़ी देर बाद एड़ियों पर रखें।
- रात को सोते समय गुनगुने नारियल का तेल बिवाइयों पर लगाएं व मोजे पहनकर सोएं। सुबह पैरों को गर्म पानी में डुबाए रखें। फिर ब्रश रगड़कर तलवे के फटे हिस्सों को साफ करके पोंछ लें और वैसलीन लगा लें।
- किसी बर्तन में 100 ग्राम वनस्पति घी गर्म करें। उसमें करीब 300 ग्राम मेहंदी की हरी पत्तियां डालकर धीमी आंच पर गर्म करें। बीच-बीच में चलाते रहें। जब मेहंदी की पत्तियां ब्राउन हो जाएं तो उसे आंच से उतारकर ठंडा करें। अब पत्तियों को निकाल कर निचोड़ लें और घी को किसी पात्र में रख लें। इसे रोज एक बार एड़ियों पर लगाएं। इसके इस्तेमाल से सालों फटी रहने वाली एड़ियां भी ठीक हो जाती हैं।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

मोहनलाल शिवलाल जैन

झाड़ू के निर्माता

झाड़ू, ब्रुश, हाउस कीपिंग, लकड़ी के सामान एवं
जनरल सामान के विक्रेता

13, देहलीगेट अन्दर, उदयपुर (राज.)

भोजन और स्वास्थ्य

भोजन हर प्राणी के लिए जरूरी है। भोजन और स्वास्थ्य का अन्योन्याश्रित संबंध है। भोजन के दौरान एवं उसके बाद छोटी-छोटी बातों का ध्यान निश्चित रूप से हमें जीवन भर चुस्त, दुरुस्त और स्वस्थ बनाए रख सकता है।

भोजन में सिर्फ उचित मात्रा में पोषक तत्व शामिल कर लेने से स्वास्थ्य ठीक रहने का भरोसा नहीं किया जा सकता। स्वास्थ्य संबंधी अनेक परेशानियां भोजन के समय उचित सावधानी न बरतने से पैदा होती हैं। इसी तरह भोजन के बाद सैर को लेकर भी सही जानकारी न होने से कई परेशानियां होती हैं।

जब हम भोजन का निवाला मुंह में रखते हैं, तब लार भोजन में उपस्थित स्टार्च को छोटे-छोटे कणों में विभाजित करती है। इसके बाद आहार इसोफैगस यानी भोजन नली के माध्यम से पेट में पहुंचता है। पेट की अंदरूनी परत भोजन को पचाने के लिए पाचक रस यानी डाइजेस्टिव जूसेज बनाती है। इसमें से एक स्टमक एसिड है। कई लोगों में निचली भोजन नली ठीक से बंद नहीं होती। अक्सर खुली रह जाती है, जिससे पेट का रसायन वापस बह कर इसोफैगस में चला जाता है। इससे छाती में दर्द और तेज जलन होती है। इसे ही जीईआरडी या एसिड रिफ्लक्स कहते हैं। कभी न कभी हर किसी को इस समस्या का सामना करना पड़ जाता है। शहरी लोगों ने अपने को इतना व्यस्त कर लिया है कि वे न तो समय पर भोजन कर पाते हैं और न उनके सोने-जागने का कोई समय निश्चित है। दफ्तर के लिए जाते हड़बड़ी में नाश्ता करते हैं। तली, भुनी चीज़ें खाना, देर शाम भोजन करना और सो जाना। इन सब कारणों से सेहत बिगड़ती है। जबकि तमाम व्यस्तताओं के बीच अगर थोड़ा भी सतर्क रहें तो स्वस्थ जीवन जीया जा सकता है।

सावधानियां

तरल पदार्थ न लें : भोजन से आधा घंटा पहले और बाद में या भोजन के दौरान कोई तरल पदार्थ न लें। शरीर विज्ञान कहता है कि खाने से आधा घंटा पहले, बाद में या भोजन करते समय अगर हम कोई तरल पदार्थ पीते हैं तो हमारे शरीर के पाचक रसायन यानी डाइजेस्टिव जूसेज उसमें घुल जाते हैं और भोजन को पचने में वक्त लगता है।

कब पिएं पानी ? आमतौर पर खाना खाने के 50 मिनट पहले पानी पिया जा सकता है या इतने ही समय बाद पानी पिया जा सकता है। रुक्ष या चटपटा खाने के दौरान या गले में खाना अटकने पर दो या चार घूंट पानी पिया जा सकता है।

चबा-चबा कर खाएं : भोजन के पचने की प्रक्रिया मुंह से ही शुरू हो जाती है। हम उसे जितना चबाते हैं, उसे पचाने में उतनी ही आसानी होती है।

भोजन करते ही न सोएं : अधिकतर लोग भोजन के तुरंत बाद लेट जाते या फिर सो जाते हैं। स्वास्थ्य के नज़रिए से भोजन के बाद तुरंत सोने से खाना पचाने के लिए पाचन क्रिया को अधिक मेहनत करनी पड़ती है। और फिर अपच, वजन बढ़ने जैसी समस्याएं होने लगती हैं।

भोजन के तुरंत बाद न नहाएं : भोजन के तुरंत बाद नहाने से शरीर का तापमान कम हो जाता है। वैसे भोजन के बाद रक्त का प्रवाह पाचन क्रिया की ओर होना चाहिए, लेकिन नहाने से रक्त प्रवाह त्वचा की ओर होने लगता है, जिससे पाचन क्रिया बिगड़ जाती है।

धूम्रपान न करें : खाना खाने के तुरंत बाद धूम्रपान से टार और निकोटीन की वजह से पेट में अल्सर की समस्या हो सकती है।

भोजन के तुरंत बाद फल न खाएं : दोपहर या रात के भोजन के बाद फल खाने पर उनका पाचन देर से होता है, जिसके चलते गैस, अपच, जलन, एसिडिटी जैसी समस्याएं होती हैं।

भोजन करते ही न लगें टहलने : खाना खाने के बाद टहलना अच्छी आदत है, लेकिन कम से कम भोजन के बीस से पच्चीस मिनट बाद टहलना शुरू करना चाहिए। इससे खाना आराम से पच जाएगा।

खाने के बाद बेल्ट ढीली न करें : खाने के बाद अक्सर लोग अपनी बेल्ट ढीली कर लेते हैं। हर बार खाने के बाद अगर आप ऐसा करते रहे, तो कमर का आकार बढ़ जाएगा और तोंद निकल आएगी। बेल्ट हमारे पेट की मांसपेशियों को बांध कर रखती है, जिससे उसका आकार बेडौल नहीं होता।

चाय-कॉफी न लें : कुछ लोग खाने के साथ या खाने के तुरंत बाद चाय या कॉफी पीते हैं। यह ठीक नहीं है। चाय में पोलीफेनोल और टैनिन्स होते हैं, जो शरीर में आयरन के अवशोषण को रोक देते हैं। महिलाओं को आयरन की बेहद जरूरत होती है। ऐसे में जिन महिलाओं में आयरन की पहले से कमी है, उनकी यह आदत बड़ी मुसीबत खड़ी कर सकती है।

गरम पानी पीएं : गरम पानी पीने से पाचन क्रिया ठीक रहती है। यह खाने को जल्दी तोड़ देता है, जिसकी वजह से खाना पचने में कम समय लेता है। इसलिए खाने के बाद हमेशा हल्का गुनगुना या गरम पानी ही पीना चाहिए।

सूर्यास्त से पहले करें भोजन

सूर्यास्त से पहले किया गया भोजन ठीक से पचता है, वैज्ञानिक रूप से सिद्ध भी हो चुका है कि सूर्य का प्रकाश भोजन पचाने में सहायक बनता है। चिकित्सक भी मानते हैं कि शाम का भोजन जितना जल्दी हो कर लिया जाए ताकि खाने और सोने के बीच पर्याप्त अन्तराल से पाचन क्रिया ठीक रहेगी।

- पुष्कर जोशी

श्रीमती मानबाई मुर्डिया

शान्तिराज हॉस्पीटल प्रा. लि.

मल्टी एवं सुपर स्पेश्यलिटी हॉस्पीटल

बेरियाट्रीक (मोटापा) सर्जरी का एकमात्र स्थान

हिरण मगरी, सेक्टर– 11, उदयपुर
Ph:0294-2481084-85, 9799119446

रियायती पैकेज दरों पर अब आपकी सेवा में शुरु हो चुका है।

UDAIPUR IVF
Test Tube Baby Centre

उदयपुर टेस्ट ट्यूब बेबी सेन्टर

1st फ्लोर, मोती टॉवर, हिरण मगरी सेक्टर– 11, उदयपुर (राज.)

Mo. 7230086191, 9406607757
E-Mail: info@udaipurivf.in
www.udaipurivf.in

PRAN

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

कमल भावसार
94141–57241
96360–50631

KTH

कमल टेन्ट हाऊस

बेस्ट वर्क, चुन्नी डेकोरेशन, टेन्ट, लाईट डेकोरेशन, केटरिंग मंडप, फ्लॉवर स्टेज एवं शादी-पार्टी सम्बन्धित कार्य किए जाते हैं

किराये पर गार्डन सुविधा उपलब्ध है।

आकार कॉम्पलेक्स के सामने, युनिवरसिटी मेन रोड, उदयपुर

'पद्मावती' को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई से इन्कार कर दिया है। कोर्ट का कहना है कि सेंसर बोर्ड ने अभी निर्णय नहीं किया है। ऐसे में कोर्ट दखल नहीं दे सकता। दूसरी ओर फिल्म प्रमाणीकरण प्रक्रिया को तेज करने सम्बन्धी फिल्म निर्माताओं की मांग को सेंसर बोर्ड ने खारिज कर दिया है। दूसरी ओर वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने दावा किया है कि फिल्म में विरोध करने जैसा कुछ भी नहीं है। इसी बीच फिल्म का विरोध चरम पर पहुंच गया है। राजस्थान, पंजाब, गुजरात, मध्यप्रदेश, गुजरात आदि कुछ राज्यों ने फिल्म के प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगा दिया है।

पद्मावती पर महाभारत

विष्णु शर्मा हितैषी

सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई से किया इनकार, सेन्सर बोर्ड ने कहा - 'संतुलित निर्णय' में लगेगा समय

राजस्थान सहित कुछ राज्यों में फिल्म के प्रदर्शन पर लगा बैन

फिल्म 'पद्मावती' में महारानी पद्मावती के कथित रूप से गलत चित्रण और ऐतिहासिक तथ्यों के साथ छेड़छाड़ के विरोध में राजनीतिक दलों, सामाजिक संगठनों, मेवाड़ सहित राजस्थान के सभी पूर्व राजघरानों, हिन्दू संगठन एवं सर्वसमाज के राष्ट्रव्यापी आन्दोलन व विरोध के बाद फिल्म निर्माता संजय लीला भंसाली द्वारा पूर्व घोषित 1 दिसम्बर 2017 को फिल्म का प्रदर्शन टाल दिए जाने का स्वागत किया जाना चाहिए। फिल्म के विरोध में जो भी तथ्य और तर्क दिए जा रहे हैं, निर्माता का दायित्व है कि वे फिल्म विरोधी पक्ष से रूबरू होकर आपत्तियों का जवाब दें और यदि फिल्म में इतिहास को तोड़-मरोड़कर भारतीयता और भारतीय नारी के गौरव और सम्मान पर चोट की गई है तो ऐसे तमाम दृश्य हटाए जाकर इतिहासकारों, हिन्दू संगठनों और सर्वसमाज के प्रतिनिधियों की सहमति पर ही फिल्म का प्रदर्शन किया जाय। फिल्म में जैसा कि भंसाली कह रहे हैं कि विरोध करने जैसा कुछ भी नहीं हैं तो फिर फिल्म विरोधी मंच को फिल्म देखने का आमंत्रण क्यूं नहीं देते ? सेंसर बोर्ड से पास कराए बिना देश भर में फिल्म के 'प्रोमो' दिखाकर जनमानस को उद्वेलित क्यों रहे हैं ? फिल्म समाज के लिए होती है और ऐसी कोई भी फिल्म कैसे स्वीकार्य हो सकती है, जो समाज के किसी भी वर्ग की भावनाओं को आहत करे। इतिहास को तोड़ मरोड़कर फिल्म के रूप में उसे अपने लिए 'चांदी की टकसाल' बना लेने का अधिकार तो हरगिज फिल्मकार के पास नहीं है। फिल्म 'पद्मावती' मेवाड़ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है, जिसका ट्रैलर पिछले कई दिनों से देश के संचार माध्यमों में प्रदर्शित होने के साथ गुस्से की लहर पैदा कर चुका है। फिल्म की शूटिंग इसी साल फरवरी में राजस्थान के नाहरगढ़ में भी हुई थी। जहां फिल्म निर्माता सहित यूनिट के कई सदस्यों से मारपीट की गई तथा फिल्म का महंगा सेट तोड़ दिया गया था। फिल्म पूरी होने के बाद पिछले दो माह से फिल्म के विरोध को लेकर पूरा देश आन्दोलित है।

पद्मिनी काल्पनिक पात्र नहीं

इतिहास गवाह है कि गुजरात में चालुक्यों की राजधानी और उसके बाद चौहानों की राजधानी रणथंबौर जीत लेने के बाद अलाउद्दीन खिलजी का आगामी लक्ष्य मेवाड़ के महान हिन्दू राज्य को जीत लेना ही था। वह साजिशपूर्वक साम्राज्य विस्तार में लगा था। उसने दिल्ली से मेवाड़ पहुंचने के लिए बनास नदी घाटी मार्ग को चुना, क्योंकि मारवाड़ के प्रतापी रजवाड़ों ने अलाउद्दीन से संगठित होकर मुकाबले की ठानी थी। खिलजी उनसे उलझना नहीं चाहता था। वह सत्ता हथियाने का संकल्प लेकर ही नहीं चला, अपितु उसका उद्देश्य भारत की संस्कृति व गौरव को सर्वथा नष्ट करना भी था। उसकी कुदृष्टि रानी पद्मिनी पर थी। वह उसे हर हाल में पाना चाहता था। विक्रम संवत 1360 को माघ सुदी नवमी को वह चित्तौड़ पहुंचा। 6 माह तक किले को घेरे रहा और अन्त में रावल रत्नसिंह के पास कुटिलाई से संधि प्रस्ताव भेजा। रावल ने व्यावहारिकता के नाते उसे किले में आमंत्रित किया लेकिन खिलजी ने छलपूर्वक रावल को बंदी बना लिया और रिहाई के बदले रानी पद्मिनी को मांगा। इस पर राजपूत सरदार आग बबूला हो उठे, उन्होंने तलवारें म्यानों से बाहर खींच ली। उनके लिए यह शर्त राजपूती आन, बान, शान के खिलाफ थी। क्षत्रिय सरदारों और रानी पद्मिनी ने भी कूटनीति का सहारा लिया। गोरा-बादल सहित युवा क्षत्रियों ने पालकी में बैठ कर खिलजी के शिविर में पहुंच कर धावा बोल रावल रत्न सिंह को छुड़ा लिया। अलाउद्दीन ने विशाल सेना एकत्र कर दुबारा किले पर हमला किया। राजपूतों ने अदम्य वीरता दिखाई, परन्तु विशाल मुगल सेना से लड़ते हुए खेत रहे। खिलजी की सेना जब किले में प्रवेश करने लगी तो मेवाड़ कुल की सन्नारी रानी पद्मिनी सोलह हजार वीरांगनाओं के साथ सतीत्व बचाने की खातिर जौहर की ज्वाला में कूद पड़ी। अलाउद्दीन हाथ मलता रह गया। उसे मेवाड़ की क्षत्राणियों की राख के ही दर्शन हो पाए। संजय लीला भंसाली ने 'पद्मावती' फिल्म में जिन बातों को कथित रूप से आधार बनाया है, वह मलिक मोहम्मद जायसी के महाकाव्य 'पद्मावत' पर आधारित है। जायसी ने यह काव्य खिलजी के 237 वर्ष बाद सन् 1540 में लिखा, जो पूरी तरह कल्पना पर आधारित है। कहा जा रहा है कि एक अन्य कवि अमीर खुसरो की 'तारीख-ए-इलाही' में भी पद्मिनी का उल्लेख नहीं है। अबुल फजल कृत 'आईने अकबरी' जियाउद्दीन बर्नी, इसामी, राज प्रशस्ति, भाग विजय, मुहम्मद कासिम कृत 'तारीख फरिश्ता' आदि ग्रंथों में भी इसका तथ्यात्मक विवरण नहीं है। उल्लेख होगा भी कहां से, क्योंकि इनके सभी ग्रंथकार राज्याश्रित थे। ब्रितानिया हुकूमत में भी जो इतिहासकार थे, वे भी इन्हीं संग्रहित व उपलब्ध तथ्यों पर ही निर्भर रहे। यहां तक कि कर्नल टॉड द्वारा लिखित 'एनल्स एंड एंटीक्वीटिज ऑफ राजस्थान' पुस्तक में भी इतिहास को तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया है।

दीपिका बोली - 'विरोध शर्मनाक'

फिल्म 'पद्मावती' में इतिहास की उपेक्षा और मनमाने ढंग से दृश्य फिल्माए जाकर 'रानी पद्मावती' और भारत के गौरव को नीचा दिखाए जाने के विरोध में हो रहे प्रदर्शनों को फिल्म में 'पद्मावती' का किरदार निभाने वाली दीपिका पादुकोण ने 'शर्मनाक' बताया है। उनके इस कथन से निर्माता भंसाली की मुश्किलें और बढ़ गई हैं। करणी सेना की धमकी के बाद दीपिका की सुरक्षा भी बढ़ा दी गई है। जब पहली बार वे सेट पर गई तो उन्होंने कैसा महसूस किया, सुनिए खुद उनकी जुबां से। 'जब वे पहली बार 'पद्मावती' के सेट पर गई तो घूमर डांस से उनकी शुरुआत हुई। ये बड़ा मुश्किल था क्योंकि तब वो रानी पद्मावती के किरदार को समझने की कोशिश कर रही थी। वो किरदार कैसा है, रानी कौन थी, उनका रूप कैसा था, वो कैसे डांस करती थी, उनकी बॉडी लैंग्वेज और हाव-भाव कैसे थे। मुझे सीधा ले जाकर सेट पर खड़ा कर दिया गया।' पाली में जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष यशपाल सिंह कुम्पावत ने दीपिका व भंसाली के खिलाफ परिवाद पेश किया है।

अख्तर के बयान पर परिवाद

प्रमुख मुस्लिम संगठन डॉ. ज़ाकिर हुसेन सोशल एंड वेलफेयर सोसायटी ने जावेद अख्तर के बयान को राजपूत ही नहीं पूरे राजस्थान के लोगों का अपमान बताया है। साथ ही माफी नहीं मांगने तक उन्हें राजस्थान में नहीं घुसने देने की चेतावनी दी है। सोसायटी की जयपुर में हुई बैठक में कहा गया कि उनके बयान से सम्पूर्ण प्रदेश व मुस्लिम समुदाय आहत है। जयपुर में करणी सेना ने जावेद अख्तर के पुतले के साथ प्रदर्शन किया। जिलाध्यक्ष नारायण सिंह दिवराला ने कहा, राजपूतों ने अपने खून से इतिहास बनाया है। जावेद माफी मांगे अन्यथा भूलकर भी राजस्थान का रुख न करें। विवादित टिप्पणी को लेकर राजपूत समाज ने जयपुर के सिंधी कैम्प थाने में जावेद के खिलाफ परिवाद भी दिया है।

इतिहास से न हो खिलवाड़

संजय लीला भंसाली का कहना है कि इतिहास के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की गई है। वे ऐसे किसी दृश्य से भी इनकार कर रहे हैं जिस पर हिन्दू संगठनों को आपत्ति हो। फिल्म के गीत और संवाद लेखक जावेद अख्तर तो लोगों की भावनाएं भड़काने वाला तर्क दे रहे हैं। उनका कहना है 'मुगल-ए-आज़म' फिल्म में भी सलीम और अनारकली की ऐसी ही कहानी थी। उसमें जोधाबाई और अकबर के दृश्य थे, परन्तु इतिहास की दृष्टि से जोधाबाई अकबर की पत्नी थी ही नहीं। बस फिल्म से किस्सा मशहूर हो गया। उनका यह भी कहना है कि फिल्मों को इतिहास मत समझिए और इतिहास को भी फिल्म के नजरिए से मत देखिए। उनके कथन का शायद यह आशय है कि पद्मिनी ऐतिहासिक नहीं अपितु मननगढ़त पात्र है। जिसे किसी भी एंगल से प्रदर्शित करने का निर्माता को पूरा हक़ है। जबकि इतिहास में स्पष्ट है कि वह रावल रत्नसिंह की पत्नी थी। रानी पद्मिनी का जौहर, अलाउद्दीन खिलजी का आक्रमण, गोरा-बादल और अन्य राजपूत सेनानियों का बलिदान इतिहासजन्य है। पद्मिनी ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए असंख्य क्षत्राणियों के साथ जौहर की धधकती ज्वाला में कूद कर अपनी अस्मिता व मेवाड़ के गौरव की रक्षा की थी। खिलजी जैसे क्रूर और विधर्मी के स्वप्न दृश्य में रानी का फिल्मांकन राष्ट्र गौरव को धूल-धूसरित करने का प्रयत्न नहीं तो क्या है?

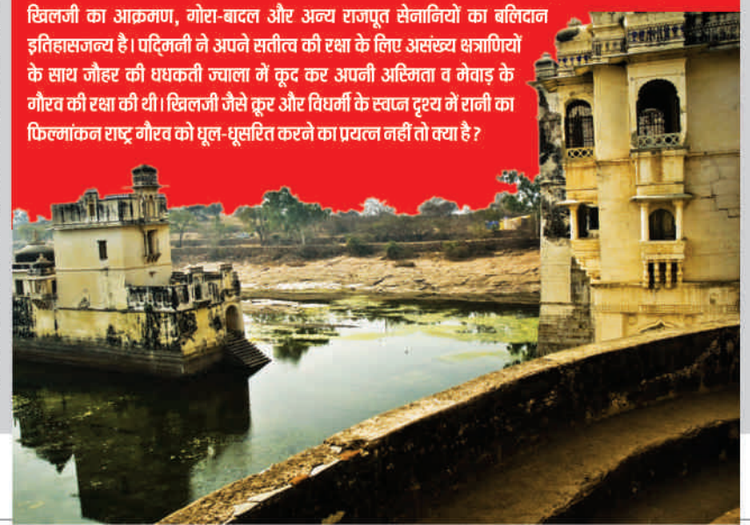

सभी पक्ष बरतें संयम

फिल्म 'पद्मावती' 1 दिसम्बर को महंगे अख़बारी विज्ञापनों और इलेक्ट्रॉनिक प्रचार अभियानों के साथ रिलीज होनी थी, किन्तु देश भर में विरोध के उठते स्वरों के कारण रिलीज की तारीख को टाल दिया गया है। राजस्थान सहित देशभर के हिन्दू संगठनों और क्षत्रिय समाज के कड़े तेवर ने संदेश दे दिया था कि फिल्म किसी भी कीमत पर रिलीज नहीं होने दी जाएगी। इन्होंने साझा मंच से फिल्म से विवादित दृश्य हटाने की मांग की है। राजपूत करणी सेना के संरक्षक लोकेन्द्र सिंह कालवी ने इस मसले पर आर-पार की लड़ाई का ऐलान किया है तथा राजस्थान राजपूत महासभा सहित अनेक संगठनों ने फिल्म को रोकने की मांग की है। इस सम्बन्ध में मेवाड़ राजवंश के भ्रातादय महेन्द्रसिंह मेवाड़ एवं अरविन्द सिंह मेवाड़ ने कहा कि मेवाड़ का इतिहास आन, बान, शान का रहा है, जिसे कलंकित करने का हक़ किसी को भी नहीं दिया जा सकता। हमारे कुलधर्म और वंश परम्परा पर कोई भी फिल्म बनाने से पहले हमसे पूछा जाना चाहिए था। रानी पद्मिनी हमारे लिए दैवी स्वरूपा है और उसका मनमाफिक चित्रण हर्गिज मंजूर नहीं। केन्द्रीय मंत्री गिरिराज सिंह व स्मृति ईरानी समेत कई नेताओं ने भी फिल्म से अवांछित दृश्य हटाने की मांग की है। राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे व गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने कहा है कि फिल्म में भारतीय समाज को लांछित करने का कोई भी प्रयास वांछित नहीं है। राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब आदि राज्यों ने फिल्म पर बैन लगा दिया है। वल्लभनगर विधायक एवं मीणडर राजघराने के रणधीरसिंह ने कहा कि कानून व्यवस्था बनी रहनी चाहिए, लेकिन कोई कुलधर्म और क्षत्रियत्व की मान-मर्यादा को तार-तार करने की हिमाकत करेगा तो किसी भी हद तक जाकर हम उसकी रक्षा करेंगे। वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेदप्रताप वैदिक कहते हैं कि 'उन्होंने पूरी फिल्म काफी गौर से देखी है। इसमें आपत्तिजनक कुछ भी नहीं लगा। हाँ, एकाध जगह उसे बेहतर बनाने का सुझाव दिया है। पद्मावती के सौन्दर्य, शौर्य और रणनीति-कौशल को इतना तेजस्वी और अनुकरणीय रूप दिया गया है कि देश की प्रत्येक महिला उस पर गर्व कर सकती है। उधर फिल्म सेन्सर बोर्ड के अध्यक्ष प्रसून जोशी इस बात से नाराज हैं कि फिल्म सेंसर बोर्ड में जमा कराने के साथ-साथ उन्होंने चैनल्स पर उसके 'प्रोमो' भी दिखाने के अवसर जुटाए। फिल्म को समीक्षा के तौर पर समूह में देखा तो जा सकता है लेकिन उसके किसी भी अंश का प्रदर्शन ठीक नहीं है। केन्द्र सरकार, फिल्म सेंसर बोर्ड और सम्बन्धित संस्थाओं की जिम्मेदारी बनती है कि भारतीय संस्कृति, धर्म व समाज पर सदियों से होते आ रहे आघातों को रोकने की दिशा में सकारात्मक और प्रभावी कदम उठाएं। फिल्म को जब तक भारतीय प्रमाणन बोर्ड से प्रदर्शन के लिए स्वीकृति न मिले, वह विदेशों में भी रिलीज नहीं होना चाहिए जैसा कि 'पद्मावती' फिल्म को ब्रिटेन में प्रदर्शन की हरी झण्डी मिल गई है। यदि फिल्म में कुछ आपत्तिजनक है तो विदेशों में भारतीय छवि को ही आघात पहुंचेगा। 'पद्मावती' फिल्म का विरोध किसी एक जाति, समुदाय या प्रांत का सवाल नहीं है। यह राष्ट्रीय अस्मिता का सुलगता सवाल है। समय रहते इस पर चिन्तन, मनन एवं प्रभावी कार्रवाई नहीं हुई और बहुसंख्यक जनता की भावना तथा इतिहास की अवमानना हुई तो मुद्दा ज्वालामुखी बनकर अनर्थकारी स्थितियां पैदा कर सकता है। विरोध करने वालों की भी जिम्मेदारी बनती है कि विरोध करना लोकतांत्रिक अधिकार है, परन्तु यह संविधान के दायरे में रह कर ही किया जाना चाहिए। उम्मीद की जानी चाहिए कि सभी पक्ष समझदारी से काम लेकर इस अप्रिय विवाद का पटाक्षेप करेंगे।

MIRAJ GROUP
तन भी शुद्ध, मन भी शुद्ध... तो वस्त्र क्यों रहें अशुद्ध !
मिराज शुद्ध
ऑयल सोप
100% पशु चर्बी रहित
MIRAJ
Family Pack
MIRAJ TRADECOM PVT. LTD.
Miraj Campus, Nathdwara - 313 301 (Raj.) India / Email : fmcg@mirajgroup.in / Web: www.mirajgroup.in
Contact us at : 88759 92317, 88759 33370

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा
AADHAR PRODUCTS
डिसाइड
वाशिंग पाउडर, डिटर्जेंट टिकिया एवं बर्तन बार
वाशिंग पाउडर
एडवाइज़
बर्तन बार
Decide
Mfd. & Mktd. by : AADHAR PRODUCTS PVT. LTD., UDAIPUR
Trade Enquiry 7727864004 | visit us at : www.aadharproducts.in

With Best Compliments From

Universal
Power Industries

Engineers & Manufacturer :

✦ Monoblock Pump ✦ Power Factor Correction ✦ AMF Panel ✦ Synchronizing of DG ✦ Switch Gear LT/HT ✦ Power Control Panel ✦ Motor Control Panel ✦ Stone Process Machine Panel ✦ Automation Panel ✦ Automatic Power Factor Panel

1, SPL. Com, Industrial Estate, Pratap Nagar, Udaipur-313 001
Ph. : 0294-2490230 (W) 2490373 (R)

Telemecanique
Square D
Merlin Gerin

Authorised Service Contractors
Schneider Electric India Pvt. Ltd.

पास न जाएं

ये पौधे ज़हरीले हैं

आकर्षक रंगों के फूल-पत्तियों वाले कुछ पौधे ऐसे भी हैं, जो पहली नज़र में ही हर किसी को लुभाते अपने सौन्दर्य को निहारने के लिए अपने पास बुलाते से प्रतीत होते हैं। लेकिन भूलकर भी आप इनकी खूबसूरती पर फिदा न हों। क्योंकि इनमें से कुछ ज़हरीले भी होते हैं। जिन्हें छूने, फूलों की सुगंध या पत्तियों का स्वाद लेने से आपकी जान तक को खतरा हो सकता है। आइये, जाने कुछ ऐसे ही खूबसूरत किन्तु विष बुझे देशी-विदेशी पौधों के बारे में।

– पूनम गोस्वामी

फॉक्सग्लोव

लगभग तीन फीट की ऊंचाई तक बढ़ने वाले इस पौधे के फूल, गुलाबी, बैंगनी व सफेद होते हैं। जिनके अंदर छोटे-छोटे गोल घेरे बने होते हैं। मेडिकल क्षेत्र में यह हार्ट ड्रग तैयार करने में काम आता है, लेकिन पौधे का कोई भी हिस्सा गलती से मुंह में जाने पर आपके लिए बड़ी परेशानी खड़ी कर सकता है। हार्ट प्रॉब्लम के अलावा इससे चक्कर आने, उलटी, मांसपेशियों में ऐठन, डायरिया और मुंह में तेज दर्द जैसी समस्याएं होती हैं। डॉक्टर इस पौधे के शिकार लोगों के पेट को पंप कर जहरीले द्रव्य का असर कम करते हैं। ऐसे मौके पर दिल की धड़कन पर भी पैनी निगाह रखी जाती है।

हाइड्रेंजिया

यह पौधा 15 फीट की ऊंचाई तक बढ़ता है। इसके फूलों का रंग गहरा नीला, हरा अथवा सफेद होता है। इस पेड़ की पत्तियों या फूल के खाने के कुछ घंटों बाद इसका असर त्वचा में ऐंठन, उल्टी और कमजोरी के रूप में देखने में आता है। कई बार तो शिकार का ब्लड सर्कुलेशन गिर जाता है और वह कोमा में चला जाता है। सौभाग्य से हाइड्रेंजिया का एंटी ड्रग मेडिकल साइंस ने तैयार कर लिया है और इसको लेने से जल्द ही राहत मिल जाती है। यह पौधा चीन, जापान, हिमालय की तराई और इंडोनेशिया में बहुतायत में पाया जाता है। उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका के देशों में भी यह मिलता है।

लिली ऑफ द वैली

इस पौधे को मे-फ्लावर्स के नाम से भी जाना जाता है। इसके घंटी के आकार वाले सफेद फूल सर्वाधिक विषाक्त होते हैं। जो पानी में गिरने पर उसे भी जहरीला बना देते हैं। इस पौधे का जहर किसी भी रूप में शरीर में पहुंचने पर एबडॉम्नल पेन, डायरिया और मांसपेशियों में ऐंठन आ जाती है। ज्यादा मात्रा में जहर शरीर में पहुंचने पर उल्टी, चक्कर आना और बेहोशी जैसे लक्षण भी देखे गए हैं। ठंडा माहौल इस पौधे को रास आता है। यह एशिया और अमेरिका में पाया जाता है।

आंथुरियम

इस पौधे की पत्तियां हृदय के आकार की होती हैं। फ्लेमिंगो फ्लावर्स और पिगटेल प्लांट का नाम भी इसे दिया गया है। इस पौधे की पत्तियां खाने पर ऐसा अहसास होता है मानो पूरा मुंह जल गया हो। बाद में मुंह में सूजन आ जाती है। इससे खाना निगलने के अलावा बोलने में भी कठिनाई होती है। समय के साथ इसका असर कम होता जाता है। दर्द निरोधक दवाओं, ठंडे पेय पदार्थ लेने से राहत मिलती है।

प्रस्तुति : मदन पटेल

PACIFIC UNIVERSITY

20 YEARS 1997-2017

20 Years of Excellence

100 Acre Campus

500 Faculty

15,000 Students

Record Placements in 2016-17

Placements : 2460

No. Of Companies : 87

Highest Package 6.6 Lakh P.A.

amazon

MARCO POLO

oppo

3T

AVILLION

AtoS

metacube

& Many More ...

Best Engineering Campus award – 2016
"Awarded by Edu Destination, New Delhi".

Times Education Achievers Award - 2016-17
(Dental, Commerce, Management, Pharmacy, Education)

Workshop on Remote Controlled
Aircraft Modelling 2016-17

Consecutive Winner (thrices) in Simulated
Management Games Contest of AIMA, New Delhi held
among top 270 Management Institute of the Country.

Pacificians at yet another milestone
by achieving 1st Prize in Audacity – 2017
"Conducted by IIM, Udaipur".

4th place in west zone inter university
Hockey Tournament 2013 - 14

ADMISSION OPEN 2017-18

ENGINEERING (AICTE Approved)
B.Tech. : Civil / Mechanical / Electrical / ECE / CSE / Mining
M.Tech.
Mob. : 766 501 7791

POLYTECHNIC DIPLOMA (AICTE Approved)
Diploma : Civil / Mechanical / Electrical / Mining / CSE
Mob.: 953 036 0191

HOTEL MANAGEMENT (AICTE Approved)
Trade Diploma in Hotel Management
Diploma: Diploma in Hotel Management
B.Sc. Hotel Management
Bachelor of Hotel Management & Catering Technology (BHMCT)
Master of Tourism and Hotel Management (MTHM)
Mob.: 967 297 8016

COMPUTER APPLICATION
BCA / BCA+MCA / PGDCA
MCA / M.Sc. IT / MCA in 2 Yrs. (Eligibility: BCA with Maths)
Mob.: 958 789 2884

AGRICULTURE
B.Sc. (Hons.) Agriculture
M.Sc. Agriculture
Mob.: 766 501 7854

EDUCATION & PHYSICAL EDUCATION
D.El.Ed., B.Ed.,
B.P.Ed., M.P.Ed.
Mob.: 967 297 8055

MANAGEMENT (AICTE Approved)
MBA (Dual Specialization) / **MBA** (Executive)
MBA : Hospital and Healthcare Management
MBA (International Business Management)
Mob.: 967 297 8034

DAIRY TECHNOLOGY & FOOD TECHNOLOGY
B.Tech. Dairy Technology
B.Tech. Food Technology
B.Sc. Nutrition & Dietetics
Diploma Clinical Nutrition & Dietetics
Certificate Nutrition & Fitness
Mob.: 967 291 7869

LAW (BCI Approved)
L.L.B.
B.A.+L.L.B.
B.Com.+L.L.B.
L.L.M. (1 Yr.)
L.L.M. (2 Yrs.)
Free IAS coaching & other tutorial classes
Mob.: 982 985 5566

YOGA
Certificate, Diploma, PG Diploma & M.Sc. in Yoga
Mob.: 766 501 7752

GYM TRAINING & MANAGEMENT
Certificate, Diploma, PG Diploma (Personal Trainer & Gym Management)
Mob.: 823 911 0077

DENTAL (DCI Approved)
B.D.S., M.D.S.
Mob.: 766 501 7760

SOCIAL SCIENCES AND HUMANITIES
B.A. / B.A. (Hons.)
(Free Coaching for Competitive Exams like IAS, RAS, RPSC, SSC, BANK, PO, CDS, PSI, CONSTABLE, PATWARI & CLERICAL EXAMS)
M.A. / M.S.W.
Mob.: 967 297 0962

COMMERCE
BBA: Global Business Management
(Two Educational Foreign tour every year)
B.Com. (Synchronised with competitive exams)
BBA (Synchronised with competitive exams)
B.Com. (Hons.) (Synchronised with CA / CS)
M.Com.
Mob.: 988 726 2020

MASS COMMUNICATION
Diploma Journalism and Mass Communication (DJMC)
BA (Journalism and Mass Communication)
MA (Journalism and Mass Communication)
Mob.: 988 726 2020

BASIC SCIENCE
B.Sc. (Both Maths & Bio Group)
B.Sc. (Hons.) (Physics / Chemistry / Maths / Computer Science / Statistics / Botany / Zoology)
M.Sc. (Physics/Chemistry/Maths/Computer Science/Statistics)
Mob.: 766 501 7783

PHARMACY (PCI Approved)
B.Pharma
M.Pharma
Mob.: 766 501 7717

FIRE AND SAFETY MANAGEMENT
B.Sc.: Fire & Industrial Safety Management
Diploma: Fire & Safety Management / Industrial Safety & Disaster Mgmt. / Health Safety & Environment
PG Diploma: Industrial Safety Management / Fire & Safety Management / Health, Safety & Environment
Mob.: 967 297 0953

FASHION TECHNOLOGY
Diploma: Fashion Designing / Jewellery Designing / Textile Designing / Fine Arts & Graphics
Interior Designing
Drama / Acting / Graphic Web Designing / Modelling / Animation / Accessory Designing / Event Management / Architecture
B.Sc. & M.Sc.: Fashion Designing / Interior Designing / Jewellery Designing / Textile Designing / Fine Arts & Graphics
MBA : Design Management / Fashion Designing / Textile Designing
Mob.: 967 297 8017

RESEARCH AND DOCTORATE
M.Phil. & Ph.D. (In all the streams listed above)
Mob.: 967 297 8030

PACIFIC UNIVERSITY | Pacific Hills, Pratapnagar Extension, Airport Road, Debari, Udaipur - 313024 | Email : info@pacific-university.ac.in | Ph : 0294-3065000, 9672970940, 7665017787, 9672927863 | www.pacific-university.ac.in

लिखें तरक्की की इबारत

डेयरी फार्मिंग

– संजीव कुमार सिंह

भारत कृषि प्रधान देश है। अधिकतर आबादी गांवों में बसती है या यूं कहें कि गांवों में ही भारत बसता है। ग्रामीण भारत के किसानों और कमज़ोर तबकों के आर्थिक विकास में डेयरी सेक्टर ने अहम भूमिका का निर्वाह किया है। यदि डेयरी फार्मिंग के साथ योजनाबद्ध ढंग से जुड़ा जाए तो यह काफी फायदे का रोजगार है। यही वजह है कि यह क्षेत्र डिग्रीधारी युवाओं को भी आकर्षित करने लगा है।

एक समय ऐसा था, जब देश में लोग शौक के चलते पशुपालन करते थे। लेकिन आज यह विकसित उद्योग का रूप ले चुका है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों की आर्थिक संरचना तेजी से मज़बूत हो रही है। आधुनिक तकनीकों से लैस इस व्यवसाय ने युवाओं को तेजी से अपनी ओर खींचा है। लोग इंजीनियरिंग व मैनेजमेंट की डिग्री लेकर इस क्षेत्र में कदम रख रहे हैं। कई ऐसे युवा हैं, जिन्होंने जमी-जमाई नौकरी छोड़ कर इस पेशे को अपनाया और कॉमर्शियल डेयरी फार्मिंग ने उनकी उम्मीदों को परवान चढ़ाया। आज भारत दुनिया के सबसे बड़े दुग्ध उत्पादक देशों में से एक है तथा दुग्ध उत्पादों का निर्माण भी यहां प्रचुर मात्रा में हो रहा है। एसोचैम इकोनॉमिक्स रिसर्च ब्यूरो के एक अध्ययन के अनुसार, पूरे देश में डेयरी इकाइयां 60,255 करोड़ रुपये का बिजनेस करती हैं। पूरे देश में वार्षिक दुग्ध उत्पादन 121 मिलियन टन के करीब है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था होती है सुदृढ़

नई दिल्ली में आयोजित गौशालाओं पर राष्ट्रीय सम्मेलन में केन्द्रीय कृषि मंत्री ने पशुधन को ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ बताते हुए ऐसी योजनाओं को तैयार करने का भरोसा दिलाया, जिससे जलवायु परिवर्तन के कारण आने वाली चुनौतियों का मुकाबला किया जा सके। उन्होंने देसी नस्ल की गायों के दूध की गुणवत्ता और प्रतिरोधक क्षमता को बनाए रखने के लिए अलग से डेयरी प्लांट की स्थापना पर भी बल दिया। भारतीय दुग्ध उत्पादन से जुड़े सांख्यिकी आंकड़ों के अनुसार देश में 70 प्रतिशत दूध की आपूर्ति छोटे व सीमांत भूमिहीन किसानों से होती है। इसी कारण इसे 'ग्रामीण उद्योग' भी कहा जाता है। एक रिपोर्ट के अनुसार, डेयरी फार्मिंग ने ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी उन्मूलन में भी काफी योगदान दिया है, क्योंकि सूखे के दौरान 75-80 प्रतिशत आय वंचित परिवारों को दुग्ध उत्पादकों से ही प्राप्त हुई थी।

शुरुआत से पहले

डेयरी फार्मिंग शुरू करने से पहले रणनीति, उद्देश्य और योजनाओं को निर्धारित करने की जरूरत रहती है। व्यापारियों के लिए सबसे पहला और महत्वपूर्ण उद्देश्य कच्चे दूध और दुग्ध उत्पादकों की सुरक्षा और गुणवत्ता होनी चाहिए। पशुओं को रोगों से बचाने के लिए इनकी देखभाल पर सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए। योजना बनाते समय पेशेवर विशेषज्ञों और एकाउंटेंट की सलाह लेना बेहतर है। व्यापार शुरू करते समय बुनियादी ढांचा जैसे पशु प्रजातियां, आवश्यक पूंजी, चारे व पानी की व्यवस्था, स्वच्छता, कुशल कर्मचारी, अनुकूल वातावरण, प्रभावी नियंत्रक उपायों की जानकारी के अलावा कचरा प्रबंधन की उपयुक्त व्यवस्था होनी चाहिए। इसके अलावा पशुओं का चयन, आहार, स्वच्छता व देखरेख, दूध निकालने की प्रक्रिया, डेयरी उत्पादों का विक्रय, अपशिष्ट प्रबंधन आदि कई ऐसी प्रक्रियाएं हैं, जिनकी जानकारी डेयरी संचालक या डेयरी मैनेजर को होनी चाहिए।

क्या है डेयरी फार्मिंग

डेयरी फार्मिंग (दुग्ध उत्पादन) सीधे तौर पर पशुपालन से जुड़ा उद्योग है। इसमें मवेशियों का प्रजनन तथा देखभाल, दूध की खरीद तथा डेयरी उत्पादों के प्रोसेसिंग संबंधी कार्य आते हैं। कृषि व डेयरी फार्मिंग के बीच परस्पर निर्भरता वाला संबंध है। कृषि उत्पादों से मवेशियों के लिए भोजन और चारा उपलब्ध होता है और डेयरी फार्मिंग में विभिन्न प्रकार के दुग्ध उत्पादों जैसे दूध-दही, मक्खन, पनीर, खोया, संघनित दूध व दूध के पाउडर आदि का उत्पादन होता है।

कोर्स से मिलेगी मदद

डेयरी फार्मिंग में शिक्षित व अशिक्षित सभी खुद को आजमा सकते हैं। लेकिन बाकायदा कोर्स करके इस क्षेत्र में उतरते हैं तो तकनीक व बाजार के ट्रेंड को समझने में मदद मिलती है, साथ ही हिसाब-किताब रखने के अलावा कस्टमर डीलिंग में भी आसानी रहती है। इसमें स्नातक से लेकर पीजी लेवल तक पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। प्रवेश परीक्षा के आधार पर दाखिल मिलता है। बीएससी सरीखे कोर्स के लिए गणित/बायो विषय से 10+2 होना चाहिए। डेयरी प्रोडक्शन के पीजी डिप्लोमा कोर्स के लिए बीएससी (6 0 प्रतिशत अंकों के साथ) होना चाहिए।

सरकारी योजनाओं से बढ़े अवसर

डेयरी फार्मिंग का कोर्स करने वालों के लिए सरकारी व गैर सरकारी दोनों जगह अवसर हैं। इम्प्लीमेंटिंग, प्लानिंग, फाइनेंस

व कृषि व्यवसाय से संबंधित एनडीडीबी, नेस्ले, कैडबरी, कैलॉग्स, केएफसी, एचएलएल, हेरिटेज फूड्स जैसी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अच्छे पैकेज पर डेयरी टेक्नोलॉजिस्ट, प्लांट मैनेजर या डेयरी मैनेजर को रखती हैं। गांवों व शहरों में दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए केन्द्र व राज्य सरकारें डेयरी योजनाओं के विकास पर काम कर रही है। सरकारी व गैर सरकारी संस्थाएं डेयरी व्यवसाय के लिए 10 लाख रुपये तक का लोन प्रदान कर रही हैं।

कुछ प्रमुख योजनाएं

दुधारू मेवशी योजना : गरीबी रेखा के नीचे गुजर-बसर करने वाले ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के लिए दुधारू मवेशी योजना के तहत दुग्ध उत्पादन करने वाले को 50 प्रतिशत अनुदान व 50 प्रतिशत ऋण पर दो दुधारू मवेशी दिए जाते हैं। योजना लागत में जानवर की खरीद के लिए 70 हजार रुपये और गौशाला के निर्माण के लिए 15 हजार रुपये दिए जाते हैं। जानवरों का तीन वर्ष का बीमा भी कराया जाता है।

मिनी डेयरी योजना (दस मवेशी के लिए) : इसमें दुग्ध उत्पादन के लिए 10 दुधारू मवेशी दिये जाते हैं। इस योजना का लाभ स्वयं सहायता समूह उठा सकते हैं।

डेयरी व्यवसाय के फायदे

- ईको फ्रेंडली होने से पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुंचता।
- दूसरे व्यवसायों की बजाय कम योग्यता।
- दुग्ध उत्पाद पूरे साल बिकते हैं।
- डेयरी फार्मिंग कम लागत में शुरू होने वाला व्यवसाय।
- पूरी व्यवस्था आसानी से जुटाई जा सकती है।
- पशुओं के बीमे की भी है सुविधा।

पाठक पीठ

इंदिराजी पर आलेख अच्छा लगा

प्रत्यूष के नवम्बर अंक में प्रकाशित 'इन्दु से अद्भुत इंदिरा बनने का कठिन सफ़र' लाजवाब था। नपे-तुले शब्दों और प्रवाहमान शैली में लिखा गया यह आलेख व इस अंक की जान था। आलेख निश्चय ही संग्रहणीय है। इन्दिराजी ने देश की एकता व अखण्डता व विकास के लिए जितना कुछ किया, उतना उनके बाद का कोई प्रधानमंत्री नहीं कर पाया।

- एन. के. पुरोहित, उद्योगपति

पार्टियां दें चन्दे का हिसाब

बेनामी सम्पत्तियों पर सरकार की नज़र टेढ़ी है और कार्रवाई भी हो रही है। बेनामी सम्पत्तियां भ्रष्टाचार ही तो हैं, लेकिन राजनैतिक दल उन्हें मिलने वाले चन्दे का हिसाब देने से क्यों कतरा रहे हैं। इस सम्बन्ध में 'प्रत्यूष' के नवम्बर अंक के पृष्ठ 12 पर प्रकाशित आलेख जो सवाल उठा रहा है, उसका जवाब राजनैतिक दलों अथवा सरकार की ओर से अपेक्षित है।

- मोहन माखीजा, उद्योगपति

दुर्लभ होते वन्य जीव

'दुर्लभ हुई गोरैया' आलेख पढ़ा। निश्चय ही अनेक वन्य जीव व पक्षी दुर्लभ होते जा रहे हैं। राष्ट्रीय पक्षी मोर और राजस्थान के खूबसूरत राज्यपक्षी गोडावण भी अब बहुत कम दिखते हैं। केन्द्र व राज्य सरकारों को इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाने चाहिए।

- डॉ. स्वीटी छाबड़ा, सौंदर्य एवं हीलिंग विशेषज्ञ

पेट्रो-उत्पादों के बढ़ते दाम समझ से परे

जब सारे देश में समान कर व्यवस्था लागू की गई है तो पेट्रो उत्पाद को जीएसटी के दायरे से बाहर रखने का क्या तुक है? विश्व बाज़ार में तेल के भाव गिरने के बावजूद हमारे यहां वे बढ़ते ही रहे हैं? ऐसा क्यों? महंगाई घटाने के लिए पेट्रो उत्पादों के दाम घटाने की बजाय हाल ही रसोई गैस सिलेण्डर के दाम 100-150 रुपये और बढ़ा दिए गए हैं। इस सम्बन्ध में पिछले अंक में प्रकाशित 'केन्द्र और राज्य दोनों ही काट रहे जेबें' आलेख सामयिक था।

- कुणाल सिंह यादव, शिक्षाविद्

वंडर गर्ल को पांचवां स्वर्ण

हर पदक संघर्ष की दास्तान

मेरा हर पदक संघर्ष की दास्तान है लेकिन एशियाई चैंपियनशिप का पांचवां स्वर्ण पदक इसलिए भी खास है क्योंकि पिछले एक साल में रिंग के बाहर कई भूमिकाएं निभाने के बावजूद यह हासिल हुआ है।

मेरे सभी पदकों के पीछे संघर्ष की कहानियां हैं। हर पदक के पीछे नया संघर्ष रहा। मुझे उम्मीद है कि सांसद बनने के बाद मिला यह पदक मेरी साख में बढ़ोतरी करेगा। मैं सक्रिय सांसद हूं। नियमित रूप से संसद जा रही हूं और चैंपियनशिप के लिए भी कड़ी तैयारी की। चूंकि मैं सरकारी पर्यवेक्षक हूं तो सारी बैठकों में भी भाग लेना होता है। उम्मीद है कि लोग समझेंगे कि यह कितना कठिन है।'

- मेरी कॉम

- भरत कुमावत

पांच बार की विश्व चैम्पियन और ओलम्पिक कांस्य पदक विजेता भारत की मेरीकॉम (48 किलो) ने नवम्बर 2017 के पहले सप्ताह में वियतनाम में आयोजित एशियाई मुक्केबाजी चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक अपने नाम कर इतिहास रच दिया। भारतीय मुक्केबाजी की 'वंडर गर्ल' एम सी मेरीकॉम (48 किलो) ने एशियाई मुक्केबाजी में पांचवीं बार स्वर्ण पदक अपने नाम कर लिया। सोनिया लाथेर(57 किलो) को रजत पदक से ही संतोष करना पड़ा।

पांच बार की विश्व चैंपियन और ओलंपिक कांस्य पदक विजेता मेरीकॉम ने उत्तर कोरिया की किम ह्यांग मि को 5-0 से हराया। सन् 2014 के एशियाई खेलों के बाद मेरीकॉम का यह पहला अंतरराष्ट्रीय स्वर्ण पदक है और एक साल में उनका पहला पदक है। विश्व चैंपियनशिप की रजत पदक विजेता सोनिया को रजत पदक से संतोष करना पड़ा। वह बंटे हुए फैसले में चीन की यिन जोंहुआ से हार गई। भारत को इस टूर्नामेंट में एक स्वर्ण, एक रजत और पांच कांस्य पदक मिल। मेरीकॉम ने इस जीत के साथ टूर्नामेंट में अपना शानदार रेकार्ड बरकरार रखा। वह छह बार फाइनल में पहुंची और बस एक बार रजत पदक से संतोष करना पड़ा। उसने 2003, 2005, 2010 और 2012 में भी इसमें पीला तमगा जीता था। पैंतीस बरस की मेरीकॉम का सामना मि के रूप में सबसे आक्रामक प्रतिद्वंद्वी से था, लेकिन वह इस चुनौती के लिये तैयार थी।

अब तक पहले तीन मिनट एक-दूसरे को आंकने में जाते रहे थे, लेकिन इस मुकाबले में शुरुआती पलों से ही खेल आक्रामक रहा। मेरीकॉम ने अपनी प्रतिद्वंद्वी के हर वार का माकूल जवाब दिया। दोनों ओर से तेज पंच लगाए गए। मेरीकॉम उसके किसी भी वार से विचलित नहीं हुई और सब्र के साथ खेलते हुए जीत दर्ज की। दूसरी ओर सोनिया का मुकाबला काफी थकाने वाला था। जोंहुआ ने संतुलित जवाबी हमले किए और अच्छे पंच भी लगाए। मणिपुर के कांगेथेई के गरीब परिवार से निकली इस बेमिसाल मुक्केबाज को रिंग में उतरने की तमन्ना को परवान चढ़ाने के लिए पहले पारिवारिक जंग लड़नी पड़ी। महिला होकर वह मुक्केबाजी में जौहर दिखाने

वंडर सीमेन्ट के साथ : 7 क्रिकेट महोत्सव

उदयपुर। वंडर सीमेन्ट के साथ : 7 क्रिकेट महोत्सव का शुभारम्भ 10 नवम्बर को एक साथ तीन राज्यों में हुआ। उदयपुर में इस का आगाज वंडर सीमेन्ट के निदेशक विवेक पाटनी, प्रेसीडेंट मार्केटिंग शैलेष मेहता एवं मैनेजिंग डायरेक्टर जगदीशचंद तोषनीवाल ने किया। उन्होंने फतहपुरा स्थित वंडर सीमेन्ट मुख्यालय पर झंडी दिखाकर गाड़ियों के काफिले को रवाना किया। पाटनी ने बताया कि यह आयोजन राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश में एक साथ हो रहा है, जिसमें 300 जगहों पर गाड़ियों के साथ रोड शो का आयाजेन होगा। दूसरे सत्र के इस टूर्नामेंट का उद्घाटन पूर्व क्रिकेटर कपिल देव ने दिल्ली में किया। उन्होंने अपनी ओर से फाइनल मैच के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी को एक लाख रुपए का पुरस्कार देने की घोषणा की जो उदयपुर में 24 दिसम्बर 2017 को खेला जाएगा। चालीस लाख की ईनामी राशि के साथ इस साल के वंडर सीमेंट साथ : 7 क्रिकेट महोत्सव में कुल 48,000 प्रतिभागी भाग लेंगे तथा तीनों राज्यों में कुल 300 मैच खेले जाएंगे।

का सपना पाले, यह उसके पिता को मंजूर नहीं था। वे मुक्केबाजी को महिलाओं के लिए असंगत मानते थे। मुक्केबाजी के प्रति मैरी के जुनून को देखकर पिता कई बार आगबबूला होते थे, उनका मत था कि यदि मैरी ने मुक्केबाजी को अपनाया तो उसकी शादी नहीं होगी। लेकिन उनके चचेरे भाइयों ने चाचा को समझाया तब कहीं जाकर उसे अपना साकार करने की इज़ाजत मिल पाई।

ओलंपिक की तैयारी के सिलसिले में मैरी ज्यादातर समय घर से अपने तीन बच्चों से दूर रही। एक पुत्र की लंदन ओलंपिक से दो साल पहले हार्ट सर्जरी हुई थी, बावजूद इसके वह बच्चों के प्रति दायित्व और ममत्व को मुक्केबाजी में देश के लिए उपलब्धियां जुटाने पर कुर्बान कर रही थी। बेटों की देखभाल का जिम्मा उनके नाना उठा रहे थे। त्याग, समर्पण और साधना के इस जज्बे ने ही मैरी को अद्भुत क्षमताओं का धनी बनाया। मेरीकॉम इंफाल में बॉक्सिंग अकादमी भी चलाती हैं, जिसकी देखरेख में उनके पति ओनलेर भी मदद करते हैं।

राष्ट्रीय पैरा स्वीमिंग
महाराष्ट्र ने जीता खिताब

उदयपुर। दिव्यांगों, निराश्रित एवं निर्धन लोगों की सेवा एवं नि:शुल्क चिकित्सा में पिछले 32 वर्षों से संलग्न नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर ने इस बार दिव्यांगों की राष्ट्रीय स्तर पर तैराकी प्रतियोगिता आयोजित कर सेवा के अपने इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया। भारतीय पैरालिम्पिक कमेटी, पैरा स्पोर्ट्स एसोसिएशन राजस्थान और महाराणा प्रताप खेलगांव सोसायटी के सहयोग से खेलगावं के तरणताल पर 4 से 7 नवम्बर 2017 तक आयोजित इस 17वीं राष्ट्रीय पैरा तैराकी चैम्पियनशिप में देश के 25 राज्यों के करीब 325 दिव्यांग स्त्री-पुरुष तैराकों ने भाग लिया। चैम्पियनशिप का खिताब महाराष्ट्र की टीम ने जीता। पश्चिम बंगाल दूसरे और कर्नाटक तीसरे स्थान पर रहा। राजस्थान ने छठा स्थान पाया।

चैम्पियनशिप का उद्घाटन केन्द्रीय योजना एवं उर्वरक राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) राव इन्द्रजीत सिंह, नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक कैलाश 'मानव' व महाराष्ट्र के दिव्यांग तैराक मोईन एम. जुनैद ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर जिला कलेक्टर विष्णु चरण मल्लिक भी मौजूद थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान सिंधी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष हरीश राजानी ने की। राव इन्द्रजीत सिंह ने 'दिव्यांग तैराकी महाकुंभ'को बेहतर सुविधाओं के साथ आयोजित करने के लिए संस्थापक कैलाश 'मानव', अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल व उनकी टीम की सराहना की। समापन समारोह के मुख्य अतिथि गृहमंत्री गुलाब चंद कटारिया ने विजेताओं को ट्रॉफी प्रदान की एवं विशिष्ट खिलाड़ियों व सहयोगियों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, विधायक फूलसिंह मीणा, पैरालिम्पिक कमेटी ऑफ इंडिया के सीईओ शमशाद खान, तकनीकी निदेशक वी.के. डवास, जिला एवं सत्र न्यायाधीश देवेन्द्र कच्छावा, जिला खेल अधिकारी ललित सिंह झाला, राज्य क्रीड़ा परिषद् के अध्यक्ष के. सी. मोहन्ती, तैराकी कोच महेश पालीवाल भी उपस्थित थे।

प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ियों को पदक देने वालों में केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, सांसद अर्जुन मीणा, उदयपुर जिला ओलम्पिक संघ के अध्यक्ष सुधीर बख्शी, यूआईटी चेयरमैन रवीन्द्र श्रीमाली, सचिव रामनिवास मेहता, राजस्थान तैराकी संघ के उपाध्यक्ष विनोद सनाढ्य भी शामिल थे।

स्विमिंग ने बदल दी जिंदगी

स्कूल के दिनों में ही तैराकी शुरू कर दी। स्वीमिंग ने एक प्रकार से जीना सिखाया। शुरूआत में तैराकी में काफी तकलीफ होती थी, तकलीफ से हार नहीं मानी 2003 में पहली बार नेशनल लेवल पर खेला और उसके बाद कभी रूकने का नाम नहीं लिया। मैडल जीतना जीत नहीं होता है, जीवन में परेशानी आए तो उभर कर दिखाना वास्तविक जीत है।

- शरद् गायकवाड़, कर्नाटक

तालाब ने बना दिया तैराक

पांव तो बचपन में चले गए थे, लेकिन हौसला कायम था। गांव के तालाब में छलांगें लगाकर तैराकी सीख ली। 2014 में पहली बार नेशनल खेला और उदयपुर में यह चौथी नेशनल प्रतियोगिता है। पूरे घर की जिम्मेदारी भी है। सरकारों को दिव्यांगों पर्याप्त सहायता देनी चाहिए।

- रामचंद्र केवर, छत्तीसगढ़

दो साहित्य साधकों के निधन से सूना हुआ हिन्दी संसार

पिछले एक पखवाड़े में उत्तरप्रदेश के फ़ैजाबाद में जन्मे दो शीर्षस्थ हिन्दी साहित्यकारों का निधन हो गया। 8 नवम्बर को मनु शर्मा और 15 नवम्बर को कुंवर नारायण के रूप में दो जाज्वल्यमान नक्षत्र अस्ताचल की ओर बढ़ गए। संयोग से दोनों का जन्म एक ही क्षेत्र में हुआ और जन्म भी आसपास ही था। 'प्रत्यूष' की ओर से दोनों को श्रद्धासुमन।

कुंवर नारायण सा दूसरा नहीं

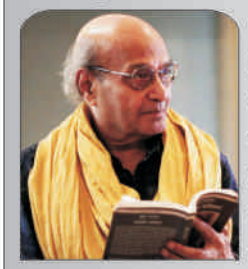

सरलता, सादगी और एक बेलौस-सी ईमानदारी न केवल कुंवर नारायण के व्यक्तित्व की विशेषताएं रहीं, बल्कि यही उनकी कविताओं का आधार भी है। दुनिया चाहे जितनी बदल जाए, हमारी बुनियादी मानवीय अनुभूतियां वही रहती हैं। जीवन व मृत्यु, सत्य व असत्य, प्रेम व घृणा। कुंवरजी की कविताएं इन्हीं अनुभूतियों को नए-नए नामों से लगाई गई पुकार है।

15 नवम्बर को नई कविता आन्दोलन के मज़बूत स्तंभ कुंवर नारायण का निधन हो गया। 19 सितम्बर 1927 को उत्तरप्रदेश के फ़ैजाबाद जिले में जन्मे कुंवर नारायण ने पांच दशक तक मां भारती की सेवा करते हुए अपनी रचनाओं से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। वर्ष 1956 में आए उनके कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' ने उन्हें जन-जन का कवि बना दिया। उन्होंने कविता के अलावा कहानी एवं आलोचना विधाओं में नए कीर्तिमान गढ़े। उनके कविता संग्रहों में 'आत्मजयी', 'बाजश्रवा के बहाने', 'चक्रव्यूह', 'परिवेश : हम तुम', 'अपने सामने', 'कोई दूसरा नहीं', 'इन दिनों', 'हाशिए का गवाह' प्रमुख हैं। 'आकारों के आसपास' उनका कहानी संग्रह है। 'आज और आज से पहले' आलोचना ग्रंथ है। कुंवर नारायण पद्मभूषण, ज्ञानपीठ और साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किए गए। इन्हें हिन्दुस्तानी अकादमी पुरस्कार, प्रेमचंद पुरस्कार, तुलसी पुरस्कार, व्यास सम्मान, श्लाका सम्मान, कबीर सम्मान सहित अन्य पुरस्कार भी मिले।

कुंवर जी हिन्दी के अहम विचारक थे। अज्ञेय के बाद की नई कविता को जिन लोगों ने समृद्ध किया, उनमें कुंवर नारायण प्रमुख हैं। भूत और वर्तमान तथा दर्शन और काव्य का अद्‌भुत मेल इनकी रचनाओं में प्रस्फुटित हुआ है। उनकी रचनाओं का अनुवाद अंग्रेजी, इतालवी, फ्रांसीसी, पोलिश सहित विभिन्न भाषाओं में हुआ है। अस्वस्थता वाले दिनों में भी उनके होठों पर दुनिया की खूबसूरती में यकीन रखने वाली कविताएं थीं। वे मनुष्यता के चबूतरे पर खड़े होकर राजनीति को देखा करते थे। ऐसे समय में जब कवि, कवि होने की बजाय सब कुछ बन जाना चाहता है, कुंवर नारायण ने खुद को कवि ही बनाए रखा और यही हमारे साहित्य-समाज में कुंवर नारायण होने की गरिमा है। जाने कितने पाठक हैं, जिनके लिए संकट के क्षणों में उनकी कविताओं ने औषध सी भूमिका निभाई। 'कोई दु:ख मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं / हारा वही, जो लड़ा नहीं' जैसी उनकी पंक्तियां महज शब्द नहीं, हमारी जिजीविषा की जिद्दी मोबबत्तियां हैं।

संस्कृति और साहित्य मनीषी मनु शर्मा

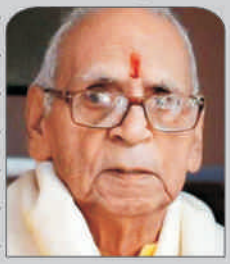

वह श्रीकृष्ण नहीं थे, पर कृष्ण का अन्तर्द्वन्द्व उन्होंने महसूस किया। वह कर्ण भी नहीं थे किन्तु कर्ण की वेदना को अनुभूत किया। वह तो द्रोपदी भी नहीं थे पर उसकी पीड़ा को जीवंत किया। श्रीकृष्ण से जुड़ा प्रत्येक चरित्र अपने आप में एक गीता है। अपनी इसी सोच को साकार करने के लिए ही उन्होंने गांधारी और द्रोणाचार्य की भी आत्मकथाएं लिखीं।

8 नवम्बर को हिन्दी साहित्य का जाज्वल्यमान नक्षत्र मनु शर्मा ओझल हो गया। इनका जन्म फैजाबाद जिले के अकबरपुरा तहसील के शहजादपुर में 28 अक्टूबर 1928 को हुआ। बचपन, जवानी और बुढ़ापा बाबा विश्वनाथ की नगरी वाराणसी में बीता। लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यास, दो सौ से अधिक कहानियों और सात हजार से अधिक कविताओं के सृजनकर्ता मनु शर्मा की साहित्य साधना खेमाबंदी से दूर अपने ही रास्ते पर बढ़ती रही। तीन हजार पृष्ठ के उपन्यास 'कृष्ण की आत्मकथा' में उन्होंने मैक्सिम गोर्की के 'युद्ध और शांति' के मर्म को आगे बढ़ाया है। आठ खंडों में विभाजित इस आत्मकथा उपन्यास से इन्हें सर्वाधिक ख्याति मिली। गीता में कृष्ण की उक्ति 'वृक्षों में मैं पीपल हूँ' उन्हें सदा आकर्षित करती रही। 'कृष्ण की आत्मकथा' को लोकार्पित करते हुए पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ने कहा था कि 'इस रचना को पढ़ते हुए इतना खो गया कि कई जरूरी काम भूल गया। पहली बार कृष्ण कथा को इतना व्यापक आयाम दिया गया है। कृष्ण के मुंह से क्या कहलावाया जाय यह आसान काम नहीं था।' उनका पहला उपन्यास 'राणा सांगा' 1955 में आया। उन्होंने देवासुर संग्राम पर आधारित कच और देवयानी की प्रेमकथा पर 'अभिशप्त कथा' और 'एकलिंग का दीवान', शिवाजी का आशीर्वाद', 'तीन प्रश्न' और 'बप्पा रावल', उपन्यास भी लिखे। 'मरीचिका', 'लक्ष्मण रेखा', 'पोस्टर उखड़ गया', 'विवशता', 'गांधी लौटे' कृतियां भी चर्चित रहीं। इन्हें 'पद्मश्री', 'लोहिया सम्मान', 'सुब्रमण्यम भारती', 'यश भारती', 'मैथिली शरण गुप्त' पुरस्कार भी मिले। हाल ही में इन्हें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छता अभियान के नौ रत्नों में समाहित किया था।

वे हिन्दी साहित्य जगत के चमकते सितारे थे। महाभारत उनके चिंतन, मनन और सृजना का अक्षय स्रोत रहा। भारतीय, पौराणिक, ऐतिहासिक, सन्दर्भों के अद्वितीय व्याख्याता मनु शर्मा के जाने से सनातन संस्कृति का एक उज्जवल आयाम खो गया है।

– **प्रस्तुति : डॉ. जय प्रकाश भाटी 'नीरव'**

Rama Krishna
TEXTILES

DEALS IN:
Manufacture & Exporters of
All Kinds of Silk, Linen,
Cotton & Brocades,
Kashmiri Shawls,
Soft Furnishing &
Hand Embroidery Bead &
Jari Works to Measure Clothings

Babu Lal Soni
94141 63573

Opp. Sehelion Ki Badi, 8, New Fatehpura, Above Silver Art Palace Udaipur,
Phone +91-294-2419662, +91-294-2413964, ramakrishnatextiles@gmail.com

Raju Bhai
99833 43575

Silver Art Palace
OLD SILVER & GOLDEN JEWELLER

OUR PRODUCTS :
Gold Jewellery with Precious Stones,
Precious & semi precious Stone Jewellery
Silver Jewellery with Stones,
Plain Gold Jewellery,
Victorian Jewellery
Kundan, Meena & Silver Jewellery,
Silver Articles,Silver Furniture,
Indian Handicrafts

Opp. Sahelion Ki Bari,8, New Fatehpura, Mewar Art Wali Gali, Udaipur (Raj.) INDIA
Telefax : +91 294 2414334, 2420914 (S) Email : silverartpalace@rediffmail.com
web : www.silverartpalace.com

ईसा एक 'जीवन शैली'

उनकी तालीम सब सीमाओं से परे हर इंसान के लिए एक 'रूहानी रोशनी है, ऊर्जा है, प्रेरणा है, ताकत है, जो जिंदगी के सफर को सुचारू रूप से तय करने के लिए पाथेय है।

महीने भर मानसिक तैयारी के साथ 25 दिसम्बर को ईसाई निजी जिंदगी, परिवार, देश और समाज में ईसा और उनके मूल्यों का पुन: फिर स्वागत करते हैं और नए साल के साथ नई जिंदगी शुरू करने की कामना करते हैं। वे सिर्फ ईसाई समुदाय के लिए ही नहीं, सम्पूर्ण समाज के लिए दुआएं मांगते हैं। इस विचार से ईसा-जयंती ईसाइयों अथवा ईसा को 'कुछ खास' मानने वाले सब लोगों का महापर्व है। ईसा-जयंती असल में 'सर्वधर्म मिलन भाव' का पर्व है। इस अवसर पर दूसरे धर्म-समुदायों के लोग, खासतौर पर युवा, वह भी लाखों की तादाद में, ईसा की झांकियां देखने के लिए गिरजाघर आते और बालक ईसा का आशीष पाते दिखाई देते हैं।

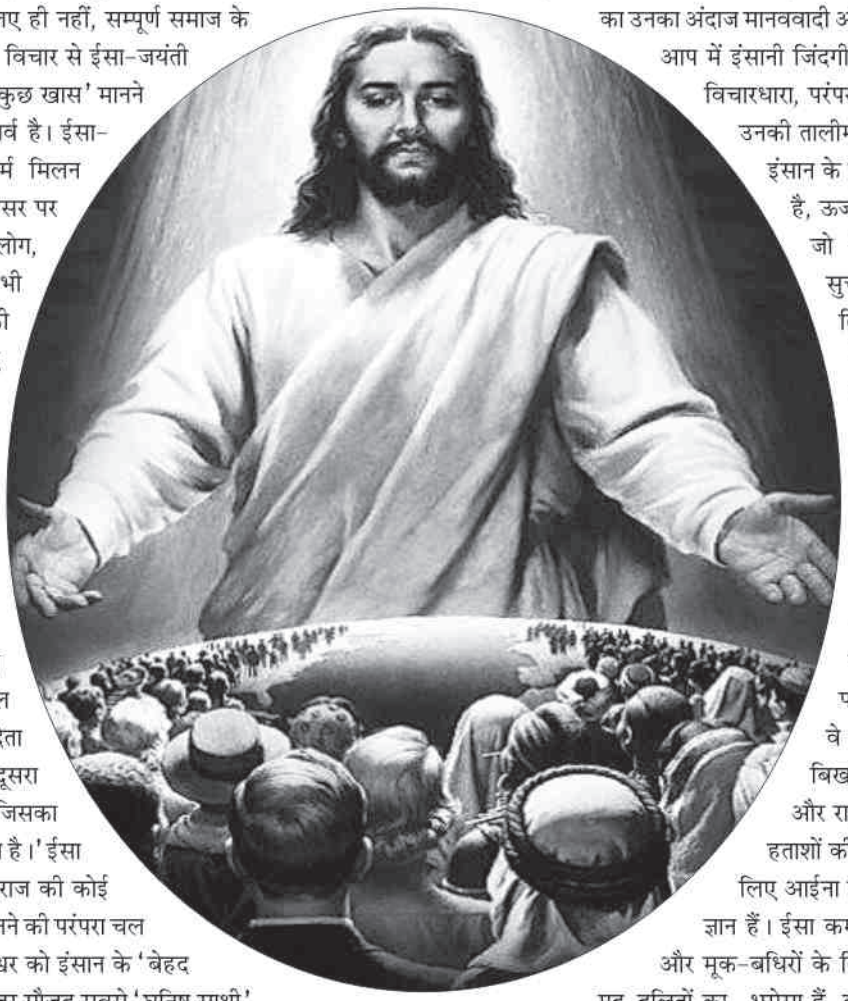

'ईसा' नाम में एक सार्वभौम अर्थ निहित है। 'ईसा' शब्द 'येहोशुआ' या 'जोशुआ' धातु से बना है, जिसका अर्थ है - 'ईश्वर खयाल करता है' या 'ईश्वर मुक्ति देता है।' 'ईसा' शब्द का एक दूसरा स्रोत 'इम्मानुएल' है, जिसका मतलब है 'ईश्वर हमारे साथ है।' ईसा के समय में ईश्वर को दूरदराज की कोई निराकार सत्ता के रूप में मानने की परंपरा चल रही थी, लेकिन ईसा ने ईश्वर को इंसान के 'बेहद करीब' ही नहीं, उसके भीतर मौजूद सबसे 'घनिष्ठ साथी' के रूप में घटित किया। और तो और, वह खुदा 'पिता' सरीखा है, जिसके साथ 'बेटा-बेटी' जैसा रिश्ता कायम किया जा सकता है। मतलब है, खुदा से डरने की कोई जरूरत नहीं है। उसके साथ औलाद की हैसियत से सहज रूप से जुड़ने की 'आजादी और नजदीकी' का भाव है। ईसा का करिश्मा यह रहा कि उन्होंने इंसान को 'खुदा कौन है', इस राज का एहसास कराया, जो किसी भी परंपरा की हद में कैद नहीं हो सकता। ईसा-जयंती इस हकीकत का यादगार समारोह है।

ईसा का रिश्ता हर इन्सान और जीव से था, है और रहेगा। ईसा अन्य पैगंबरों, नबियों तथा देवदूतों की तरह 'इंसानी समाज की साझी धरोहर' हैं। उस अहसास को भुला कर उन्हें एक सम्प्रदाय में कैद करना ईसा के साथ ही नहीं, मानव समाज के साथ भी नाइंसाफी है। सच तो यह है कि जीने का उनका अंदाज मानववादी और रूहानी था। ईसा अपने आप में इंसानी जिंदगी का एक 'नया नजरिया, विचारधारा, परंपरा और जीवन-शैली' है। उनकी तालीम सब सीमाओं से परे हर इंसान के लिए एक 'रूहानी रोशनी है, ऊर्जा है, प्रेरणा है, ताकत है, जो जिंदगी के सफर को सुचारू रूप से तय करने के लिए पाथेय है। ईसा एक 'खुशखबरी' है, जो हर इन्सान को कुछ न कुछ देने की क्षमता रखती है। वे बीमारों के लिए चंगाई हैं, कैदियों के लिए रिहाई हैं और खोए हुओं के खोजकर्ता हैं। वे भूखों का खाना हैं, प्यासों का पानी हैं और पनाहहीनों की रिहाइश हैं। वे अधूरों की पूर्णिमा हैं, बिखरे हुओं के संयोजक हैं और राहगीरों के संकेतक हैं। वे हताशों की उम्मीद हैं, गुनहगारों के लिए आईना हैं और नासमझों के लिए ज्ञान हैं। ईसा कमजोरों के लिए ताकत हैं और मूक-बधिरों के लिए स्वर व ध्वनि हैं। वे पद-दलितों का भरोसा हैं, दर्द भोगने वालों के लिए सांत्वना हैं। वे सब के लिए सब कुछ न कुछ हैं और जिसको जो चाहिए, वह देने वाले हैं।

फकत ईसा में मौजूद 'मसीहा' को पहचानने की समझ की जरूरत है, उन्हें परखने के विवेक की जरूरत है और उनके पदचिह्नों पर चल कर अपने जीवन को धन्य बनाने की जरूरत है। ईसा जयंती का अहम पैगाम है - प्यार, सेवा, माफी, भाईचारा, तालमेल और शांति। ये बातें ईसा द्वारा जिए और दिए हुए इंसानियत के मूल्य हैं।

- डॉ. एम. डी. थॉमस

पी.आई.एम.एस. हॉस्पिटल, उमरड़ा, उदयपुर

PIMS पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

बाल एवं शिशु शल्य रोग विभाग

डॉ. प्रवीण झंवर

एम.एस. (जनरल सर्जरी)
एम.सी.एच. (पिडियाट्रिक सर्जरी)
From Lady Harding Medical College &
Kalawati Saran Children Hospital, New Delhi
बाल शल्य चिकित्सक

नवजात शिशु के ऑपरेशन

+ भोजन नली व श्वास नली का जुड़ा होना (TEF)
+ पेशाब के रास्ते जन्म से रूकावट (PUV)
+ आँतो का पूरा ना बनना (Intestinal Atresia)
+ लेट्रिंग का रास्ता नहीं बनना (Imperforate Anus/Anorectal Malformation)
+ लीवर, पेट व पेशाब संबंधी
+ गर्भ में बच्चे के विकार सम्बंधी काउंसलिंग (Fetal Counseling)

बच्चों के पेट के ऑपरेशन

+ अपेंडिक्स
+ आँतो में रूकावट
+ हर्निया, हाइड्रोसील
+ अण्डकोषो का नीचे ना होना
+ पीलिया के सर्जिकल कारण (Choledochal Cyst, EHBA)

बच्चों के गुर्दे/पेशाब संबधी इलाज

+ गुर्दो में रूकावट + पाइलोप्लास्टी + पेशाब में रूकावट + पथरी + हाइपोस्पेडियास, एपीस्पेडियास (लिंग में विकार)

ICU • ICCU • PICU • NICU • SICU • BURN ICU

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत 3 लाख तक का नि:शुल्क उपचार

कैशलेस सुविधा | तुरन्त भर्ती एवं जॉच | तुरन्त उपचार | नि:शुल्क दवाईयाँ

सेवाओं में विस्तार के साथ निम्न इंश्योरेन्स कम्पनियों हेतू टी.पी.ए. विपुल मेड कोर्प द्वारा अधिकृत संस्थान

साई तिरूपति यूनिवर्सिटी
उदयपुर

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज	MBBS	0294-3010000, 9587890082
वेन्केटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग	B.Sc., M.Sc.	0294-3010015, 9587890063
वेन्केटेश्वर स्कूल ऑफ नर्सिंग	GNM	0294-3010015, 9587890063
वेन्केटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी	D. Pharma	0294-3010015, 9587890082

अम्बुआ रोड, ग्राम-उमरड़ा, तहसीलः गीर्वा, उदयपुर (राज.)
+91-294-3010000, +91-9587890122, +91-8696440666

चुस्त रहें, मस्त रहें
खूब खाएं मेवा

प्रोटीन, फाइबर, एंटी ऑक्सीडेंट्स से भरपूर सूखे मेवे स्वास्थ्य के लिए पुष्टिवर्द्धक हैं, जो दीर्घायु भी बनाते हैं। दिसम्बर का महीना है, मजे की सर्दी पड़ रही है। इस सर्दी को और भी सेहतमंद बनाने के लिए प्रस्तुत है, मेवों के मिश्रण से बनने वाले कुछ आसान और लज़ीज व्यंजन।

– रेणु शर्मा

बादाम शोरबा

सामग्री : मैदा – एक छोटा चम्मच, मक्खन–एक छोटा चम्मच, वेजिटेबल स्टॉक–दो कप, बादाम 10–15 भीगे व छीले हुए, ताजा क्रीम–दो बड़े चम्मच, जायफल पाउडर–एक चौथाई छोटा चम्मच, नमक व काली मिर्च–स्वादानुसार।

यूं बनाएं : भीगे व छिले बादाम को मिक्सी में पिस कर पेस्ट बना लें। अब पैन में मक्खन व मैदा डालकर हल्का गुलाबी होने तक सेकें, फिर इसमें वेजिटेबल स्टॉक, बादाम का पेस्ट डालकर पांच–सात मिनट पकने दें। अब इसमें, नमक, जायफल व काली मिर्च पाउडर मिलाएं। अन्त में ताजा क्रीम मिलाकर गैस बंद करें। तैयार बादाम शोरबे को गर्मागर्म सर्व करें।

ड्राई फ्रूट हलवा

सामग्री : गेहूं का आटा–आधा कप, बादाम आधा कप, काजू–आधा कप, पिस्ता–आधा कप, चिरौंजी–आधा कप, मूंगफली–आधा कप, नारियल बूरा–आधा कप, केसर व इलायची–एक–एक छोटा चम्मच, चीनी–पौन कप, देशी घी–पौन कप।

यूं बनाएं : सबसे पहले चीन में डेढ़ कप पानी मिलाकर गेस पर रखें तथा चीनी घुल जाने पर इसमें केसर व इलायची मिलाकर गैस बंद कर दें। अब काजू, बादाम, पिस्ता, चिरौंजी, मूंगफली को मिक्सी में पीस कर पाउडर बना लें। पैन में देशी घी गर्म करें व आटा डालकर धीमी आंच पर लगातार हिलाते हुए पकाएं। जब आटा सिक कर सुनहरे रंग का होने लगे तो इसमें तैयार सूखे मेवे का पाउडर व नारियल बूरा मिलाकर हल्का सेकें। अब तैयार केसर व इलायची वाली चाशनी को थोड़ी–थोड़ी मात्रा में इसमें मिलाते जाएं, लेकिन ध्यान रहे हाथ रुकने न पाए, लगातार चलता रहे। इसी तरह सारी चाशनी मिला दें। जब मिश्रण पक कर किनारे छोड़ एक जगह इकट्ठा होने लगे तो गैस बंद कर दें। तैयार हलवे को बादाम–पिस्ता की कतरन से सजाकर गर्मागर्म सर्व करें।

ड्राई फ्रूट चिक्की

सामग्री : बादाम–आधा कप, काजू–आधा कप, पिस्ता–आधा कप, चीनी–एक कप, खसखस–दो छोटे चम्मच, पिसी इलायची–एक छोटा चम्मच।

यूं बनाएं : सबसे पहले काजू, बादाम, पिस्ता को बारीक–बारीक काट लें। पैन में बिना पानी के चीनी डालकर धीमी आंच पर लगातार हाथ चलाते हुए पकाएं। जब चीनी पूरी तरह घुल जाए तो इसमें बारीक कटे सारे मेवे, खसखस व इलायची पाउडर मिलाएं। तेजी से हाथ चलाएं, जब सारी सामग्री आपस में अच्छी तरह मिल जाए तो इसे चिकनी थाली में पलट दें। मनचाहे आकार में काटें।

निशास्ता

सामग्री : दूध–तीन कप, काजू व पिस्ता 10–15, खसखस–एक छोटा चम्मच, बादाम भीगे व छीले हुए–दस बारह, काली मिर्च–पांच सात, हरी इलायची–तीन चार, अदरक–एक छोटा टुकड़ा, जायफल–एक चुटकी, केसर–आधा छोटा चम्मच, देशी घी–एक छोटा चम्मच, चीनी–दो तीन बड़े चम्मच।

यूं बनाएं : भीगे व छिले बादाम, पिस्ता, काजू, काली मिर्च, खसखस, केसर, हरी इलायची, जायफल, अदरक को मिक्सी में पीसकर महीने पेस्ट बना लें। अब पैन में देशी घी गर्म कर इसमें तैयार पेस्ट डालकर हल्का भूनें। दूध डालकर 8–10 मिनट पकाएं। फिर इसमें चीनी मिला कर अच्छी तरह उबालें। तैयार निशास्ता को गर्मागर्म सर्व करें।

UDAIPUR HOTEL

(APPROVED BY GOVT. OF RAJASTHAN)

SPECIALITY & FACILITIES

- Parking
- A/C & Cooler Rooms
- Situated in Heart of City
- T.V. With Cable Connection
- Homely Atmosphere
- Near to bus & Railway Station
- Rooms Connected with Telephone

Surajpole, Udaipur-313001 (Raj.)
Telephone Number :- 0294-2417115-116

Mob.-98280-60789
94141-60789

।। श्री नाकोड़ा भैरवाय नमः ।।

प्रतापसिंह सरूपरिया (गोपजी)
R.T.O. एजेंट
यातायात एवं परिवहन सलाहकार

वेलकम यातायात एजेन्सी

हमारे यहां R.T.O. सम्बन्धित परमिट, फिटनैस, रजिस्ट्रेशन, ड्राइविंग लाइसेन्स, कंडक्टर लाइसेन्स, इन्टरनेशनल लाइसेन्स, चालान कम्पाउण्ड व बीमा आदि सभी प्रकार का कार्य किया जाता है।

ऑफिस : R.T.O. ऑफिस रोड, द्वारकेश कॉम्पलेक्स, प्रतापनगर-सुखेर बायपास, उदयपुर
घर :- प्लॉट नं. 27, न्यू डोरेनगर, बजाज सेवाश्रम के पीछे (नदी के पास) उदयपुर (राज.)
Email id :- welcomeyatayat.ps@gmail.com

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

माह का पूर्वार्द्ध व्यावसायिक बाधाएं डाल सकता है। जीवन साथी का सहयोग आगे बढ़ने में मदद करेगा। साझेदारी लाभ देगी, यात्राओं के योग बनेंगे, अधूरे कार्यों को गति मिलेगी, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, सन्तान पक्ष से सुसमाचार एवं भाग्यपूर्ण रूप से साथ देगा। बड़ों का सहयोग प्राप्त होगा।

वृषभ

माह का उत्तरार्द्ध खिन्नता से परिपूर्ण रह सकता है। तय कार्यक्रम टालने पड़ सकते हैं। निकटवर्ती ही नाराज हो सकते हैं, कार्य क्षेत्र भी प्रभावित होगा, सन्तान पक्ष से कष्ट, स्वास्थ्य ठीक रहेगा, जीवन साथी से मधुरता, विद्यार्थी वर्ग की एकाग्रता प्रभावित होगी, मित्र सहयोग की अपेक्षा करेंगे।

मिथुन

राशि स्वामी का वक्री होकर अस्त होना आपके हर कार्य में कमी का अनुभव करायेगा, विरोधी सक्रिय होंगे, परन्तु हानि नहीं पहुंचा सकेंगे। नये सम्पर्कों से लाभ मिलेगा, कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी, आय पक्ष ठीक, कमर से नीचे के भाग में रोग संभव, पूर्व में किये गये कार्य एवं योजनाएं अब सकारात्मक परिणाम देंगी।

कर्क

विचारों में अस्थिरता, दाम्पत्य जीवन मनमुटाव युक्त किन्तु व्यावसायिक एवं कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। पैतृक मामले सुलझेंगे, खर्च में कमी, शासकीय कार्यों में सफलता एवं पदोन्नति की सम्भावनाएं। स्वास्थ्य उत्तम, सन्तान पक्ष की चिन्ताओं से मुक्ति, आय पक्ष श्रेष्ठ।

सिंह

शासकीय एवं न्यायिक कार्यों में सफलता रहेगी, आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे, परन्तु पूर्व में की गई गलतियों से सीख लेकर ही आगे बढ़ें, नौकरी के लिए प्रयासरत जातकों को सफलता मिलेगी, साझेदारी अनुकूल नहीं है। स्वास्थ्य उत्तम, दाम्पत्य जीवन श्रेष्ठ व सन्तान पक्ष मध्यम है। कोई नई जिम्मेदारी मिल सकती है।

कन्या

कार्य क्षेत्र में व्यापक अवसर मिलेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य, भाग्य साथ देगा तथा अटके काम बनेंगे। कार्य क्षेत्र में अधिकारियों से तालमेल में कमी, स्वास्थ्य मध्यम व सन्तान पक्ष कष्टकारक है। यात्राओं की अधिकता रहेगी, मन में उच्चाटन की स्थिति।

तुला

कार्य क्षेत्र में अधीनस्थों में आपके प्रति विरोधी स्वर मुखर होंगे। गुस्से एवं चिड़चिड़ेपन पर काबू रखें। स्थान परिवर्तन सम्भव है। वर्तमान की योजनाएं दीर्घकालिक फल देगी। आय पक्ष सुदृढ़, सन्तान पक्ष सामान्य एवं भौतिक सुख-सुविधाओं में कमी के कारण परेशानी सम्भव।

वृश्चिक

नये प्रेम सम्बन्धों का अंकुरण, शादी के योग्य जातकों की इच्छा पूरी होगी। कार्य क्षेत्र में सफलता, राजकीय एवं न्यायिक मसलों का हल पक्ष में संभव। स्वास्थ्य उत्तम, कोई नई योजना प्रारम्भ कर सकते हैं किन्तु अपने से बड़ों या अनुभवियों से परामर्श अवश्य लेवें।

धनु

आय पक्ष सुदृढ़ है, छोटे-छोटे कार्यों से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। पुराने मित्रों से मुलाकात संभव, भाग्य मध्यम, मांगलिक कार्यों में खर्च एवं व्यस्तता तथा जोखिम भरे कार्यों में रूचि रहेगी। स्वास्थ्य उत्तम, दाम्पत्य जीवन श्रेष्ठ, सन्तान पक्ष में हर्षोल्लास, भाई-बहिनों में मतभेद दूर होंगे।

मकर

स्वयं के विचारों से कुछ क्षेत्रों में टकराव, व्यवसाय एवं आर्थिक मामलों में सफलता, दाम्पत्य जीवन भी टकरावपूर्ण रहेगा, शासकीय कार्यों में सफलता मिलेगी, सन्तान पक्ष श्रेष्ठ रहेगा, अटका धन प्राप्त हो सकता है, कोई नया कार्यारम्भ भी संभव।

कुम्भ

प्रभावशाली लोगों से सम्पर्क, सार्वजनिक क्षेत्र में मान-सम्मान। गुप्त रोग परेशान करेगा एवं शत्रु प्रभावी होने की कोशिश करेंगे, संतान पक्ष उत्तम, भौतिक सुखों में विस्तार, शुभ कार्यों में खर्च, न्यायालय सम्बन्धी मसलों का निपटारा पक्ष में होगा।

मीन

स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का शमन, विवादों का निपटारा, कोई सकारात्मक योजना बनेगी, जो दीर्घकालिक फल देगी। प्रत्येक समस्या का समाधान सही ढंग से कर पायेंगे। व्यापार एवं कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलेगी। संतान पक्ष से मतभेद, स्वहित से ऊपर उठें वरना कष्ट पायेंगे।

प्रत्यूष समाचार

एक्वेरियम का लोकार्पण

उदयपुर। फतहसागर की पाल पर गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने पिछले दिनों नगर विकास प्रन्यास द्वारा सवा दो करोड़ रुपये की लागत से निर्मित 125 मीटर लम्बे आकर्षक एक्वेरियम का लोकार्पण किया। जिसमें 150 से अधिक प्रजातियों की मछलियां हैं, प्रन्यास चेयरमैन रवीन्द्र श्रीमाली ने बताया कि एक्वेरियम की स्थापना से रात्रिकालीन पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। प्रन्यास सचिव आर. एन. मेहता के अनुसार एक्वेरियम संचालन का अनुबंध मंशापूर्ण करणी माता रोप-वे के कैलाश खंडेलवाल से किया गया है। जिससे सवा दो लाख रुपए माहवार की यूआईटी को आमदनी होगी। कार्यक्रम में महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, विधायक फूलसिंह मीणा, एमपीयूटी के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा, पार्षद अतुल चंडालिया, गजेन्द्र जैन आदि भी उपस्थित थे।

एक्वेरियम का उद्घाटन करते गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया, साथ में विधायक फूल सिंह मीणा व संचालक कैलाश खंडेलवाल एवं अन्य।

बैंक ऑफ बड़ौदा इंटर स्कूल फुटबाल प्रतियोगिता : बीएन और द स्टडी जीते

उदयपुर। फीफा विश्व कप फुटबाल अंडर-17 के आयोजन सहायक बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा विश्व कप फुटबाल को प्रोत्साहन एवं भारत में फुटबाल को बढ़ावा देने के लिए जिला फुटबाल संघ उदयपुर के सहयोग से गांधी ग्राउंड में इंटर स्कूल फुटबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के स्पॉन्सर बैंक ऑफ बड़ौदा, उदयपुर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख अशोक डंगायच ने बताया कि प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग में बीएन पब्लिक स्कूल ने सेंट पॉल स्कूल को 1-0 से तथा महिला वर्ग ने द स्टडी स्कूल ने डीएवी जावर माइंस स्कूल को 1-0 से हरा कर प्रतियोगिता जीती। इस अवसर पर मुख्य अतिथि जिला खेल अधिकारी ललित सिंह झाला, बैंक ऑफ बड़ौदा उदयपुर क्षेत्र के उप क्षेत्रीय प्रमुख हरीश पालीवाल आदि उपस्थित थे।

जिंक यूनियन का रजत जयंती समारोह

चित्तौड़गढ़। चन्देरिया लेड जिंक स्मेल्टर मजदूर संघ का रजत जयन्ती समारोह पिछले दिनों यू. एम. शंकरदास की अध्यक्षता एवं लक्ष्मण सिंह शेखावत के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। शंकरदास ने कहा कि प्रबंधन एवं श्रमिकों में सामंजस्य ही औद्योगिक विकास का आधार है। मुख्य अतिथि शेखावत ने मजदूर यूनियन के रचनात्मक सहयोग की प्रशंसा करते हुए सुरक्षित कार्यप्रणाली पर बल दिया। विशिष्ट अतिथि पंकज कुमार सिंह मुख्य प्रचालन अधिकारी ने विश्व प्रतिस्पर्द्धात्मक वातावरण में कार्य कुशलता की उत्कृष्टता बढ़ाने को भावी चुनौती बताया। साईट प्रेसीडेन्ट राजेश कुण्डु ने मजदूर संघ के सहयोगात्मक एवं सद्भावपूर्ण रवैये को पूरे जिले में मिसाल बताया। कम्पनी के हेड एचआर दिलीप पटनायक ने मजदूर संघ के श्रमिक कल्याण के साथ-साथ कम्पनी के प्रति सामंजस्य दृष्टिकोण को दोनों पक्षों के लिए हितकारी बताया।संघ के महासचिव एवं समारोह के मुख्य मेजबान घनश्याम सिंह राणावत ने अपनी 25 वर्षों की यात्रा के मिश्रित संस्मरण याद करते हुए सभी के सहयोग एवं विश्वास को अपनी शक्ति बताया। प्रारम्भ में वरिष्ठ उपाध्यक्ष सत्येन्द्र कुमार मौड़ ने अतिथियों का स्वागत किया। जबकि संघ पदाधिकारी रणजीत सिंह भाटी ने आभार व्यक्त किया। समारोह में 25 वर्षों की विकास यात्रा पर आधारित प्रजेन्टेशन संघ कोषाध्यक्ष जी.एन.एस. चौहान के नेतृत्व में आर.पी. जैन एवं डॉ. चेतन खमेसरा द्वारा दिया गया। रजत जयन्ती समारोह को मांगीलाल अहीर, गौतम मीणा, रफीक आलम, कांग्रेस जिलाध्यक्ष मांगीलाल धाकड़ ने भी सम्बोधित किया। प्रकाश श्रीमाल, मदनेश लोढ़ा भी उपस्थित थे।

डीपीएस फुटबॉल स्पर्द्धा

उदयपुर। दिल्ली पब्लिक स्कूल में डीपीएस सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 5वें और 7वें जोन के त्रिदिवसीय ओपन फुटबॉल टूर्नामेंट का समापन 15 अक्टूबर को हुआ। जिसमें मेजबान सहित पांच टीमों को राष्ट्रीय स्तर पर खेलने के लिए चयनित किया गया। उद्घाटन 12 अकटूबर को डीपीएस सोसायटी, नई दिल्ली के खेल निदेशक डॉ. डी. आर. सैनी व बृजेश सोनी के सान्निध्य में हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजीव बिजलानी और अतिरिक्त जिला न्यायाधीश अनुपमा बिजलानी, विशिष्ट अतिथि केन्द्रीय विद्यालय नं. 2 के प्राचार्य ओमप्रकाश यादव

थे। अध्यक्षता प्रबंधन समिति सदस्य दीपक अग्रवाल ने की। शाला प्रभारी प्राचार्य संजय नरवरिया ने आभार जताया। राजेश धाबाई ने छात्राओं को शुभकामनाएं दी।

सस्टेनेबल माइनिंग विषयक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला

उदयपुर। विज्ञान, तकनीकी व लोकतंत्र में आस्था, नवाचार एवं समुदाय के प्रति संवेदनशीलता के साथ उच्च खान उत्पादकता व पर्यावरणीय संरक्षण दोनों को सुनिश्चित किया जा सकता है। यह विचार प्रसिद्ध उद्योगपति एवं यूसीसीआई के संरक्षक अरविन्द सिंघल ने पिछले दिनों 'एनवायरमेन्टली सस्टेनेबल माइनिंग' विषयक दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन पर व्यक्त किए। सिंघल ने कहा कि स्वैच्छिक संस्थाओं की समुदाय विकास एवं पारिस्थितिक संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसे नजरअंदाज नहीं करते हुए उन्हें सामुदायिक विकास की प्रक्रिया में सहभागी बनना चाहिए। लेकिन यह सावधानी भी जरूरी है कि कोई एजेन्सी स्वार्थवश अथवा गलत उद्देश्यों को लेकर खान उद्यमियों व समुदाय को टकराव की स्थिति में न ले जाए। कार्यशाला में देश के विभिन्न भागों के जाने-माने माइनिंग विशेषज्ञ, भूगर्भ शास्त्री, पर्यावरणविद् वैज्ञानिक, अनुसंधानकर्ता, शिक्षाविद् के अलावा बड़ी संख्या में मिनरल उत्खनन एवं प्रसंस्करण से जुड़े उद्यमियों एवं व्यवसायियों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला का आयोजन उदयपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री द्वारा राष्ट्रमण्डल वैज्ञानिक एवं औद्योगिक शोध संगठन, ऑस्ट्रेलिया, विद्या भवन सोसायटी, माईनिंग फैडरेशन ऑफ

यूसीसीआई संरक्षक अरविन्द सिंघल विशेषज्ञों से चर्चा करते हुए।

इंडिया एण्ड राजस्थान, माईनिंग इंजीनियर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया एवं इंडियन सोप स्टोन प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। सीएसआईआरओ, ऑस्ट्रेलिया के डॉ. साइमन आप्टे ने 'पर्यावरण जोखिम प्रबन्धन' पर जानकारी दी। कार्यशाला में उद्यमी व वैज्ञानिक अनिल वर्डिया, उद्योगपति आर. आर. हरलालका, आर. डी. सक्सेना, शोध वैज्ञानिक डॉ. टी. पी. शर्मा, डॉ. सबा खान, डॉ. अनिता जैन, डॉ. मनीष रावल, अभियन्ता गौरांग शर्मा, मनीषा शर्मा आदि ने भी विचार रखे।

भट्ट को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

अवार्ड प्राप्त करते ज्योतिष पं. निरंजन भट्ट

उदयपुर। मॉडर्न एस्ट्रो रिसर्च सोसायटी एवं जीवाजी यूनिवर्सिटी के ज्योतिष संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलन में वरिष्ठ ज्योतिष पं. निरंजन भट्ट को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया। यह अवार्ड पूर्व मंत्री व मुरैना सांसद अनूप मिश्रा, दंदरौआ धाम के महंत महामंडलेश्वर रामदास महाराज, ज्योतिषाचार्य अजय भांबी, संस्था के अध्यक्ष रमेश वायगांवकर एवं सचिव डॉ. सुनील शर्मा ने प्रदान किया।

सेवा से जोड़ने की पहल

उदयपुर। आशाधाम ने द यूनिवर्सल सीनियर सेकेंडरी स्कूल फतहपुरा के बच्चों को नेक और सामाजिक कार्यों से जोड़ने की मुहिम शुरू की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सिस्टर डेमियन, विशिष्ट अतिथि फादर नॉर्बेर्ट हरमन थे। अध्यक्षता रोटरी मेवाड़ के पूर्व अध्यक्ष संदीप सिंघटवाड़िया ने की। प्राचार्य अनुभा माथुर ने बताया कि विद्यालय के दो हजार बच्चों को मुहिम से जोड़ा गया।

फोटो जर्नलिस्ट ताराचंद को मिला अन्तर्राष्ट्रीय गौरव

उदयपुर। लेकसिटी ने इस बार फोटोग्राफी की दुनिया में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुकाम हासिल कर न सिर्फ राजस्थान अपितु देश को गौरवान्वित किया है। इस गौरव को प्रदान करने के माध्यम बने हैं उदयपुर के युवा फोटो जर्नलिस्ट ताराचंद गवारिया। जिन्होंने दुनिया के सर्वश्रेष्ठ 72 फोटोग्राफर्स में अपना स्थान बनाया है। इटली की अन्तर्राष्ट्रीय फोटो मैगजीन इंटरफोटो के वर्ष 2017 के संस्करण में दुनिया के 72 सर्वश्रेष्ठ फोटोग्राफर्स की सूची में उदयपुर के युवा फोटोजर्नलिस्ट ताराचंद गवारिया को सम्मिलित करते हुए उनके एक फोटोग्राफ को स्थान दिया गया है।

सक्का टॉप-1 वर्ल्ड रिकॉर्ड्स होल्डर

उदयपुर। लेकसिटी के अन्तर्राष्ट्रीय सूक्ष्मतम स्वर्ण कलाकृतियों के शिल्पकार इकबाल सक्का को सीरी फोर्ट ओडिटोरियम नई दिल्ली में 12 नवम्बर को इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स एवं वर्ल्ड रिकॉर्ड के तत्वावधान में आयोजित भव्य कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। 13 देशों के कलाकारों की विश्व स्तरीय कलाकृतियों का भी प्रदर्शन किया गया।

राजनियोकॉन : नवजातों बीमारियों पर चर्चा

उदयपुर। गीतांजलि मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल और आरएनटी मेडिकल कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में पिछले दिनों दो दिवसीय राजस्थान नियोनेटोलोजी फोरम का वार्षिक सम्मेलन 'राजनियोकॉन' हुआ। कार्यक्रम में इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक के अध्यक्ष डॉ. एस. सोन ने नवजात में बढ़ रही बीमारियां एवं मृत्यु दर पर विचार प्रस्तुत किए। मुंबई के पीडियाट्रिशियन डॉ. एन. के. काबरा, डॉ. ललन धारपी एवं डॉ. तुषार पारिख ने बीमार नवजात का संक्रमण से बचाव पर व्याख्यान दिया। सभी वरिष्ठ चिकित्सकों ने डॉ. एस. सोन का सम्मान किया एवं अन्य सभी अतिथियों व प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। संचालन डॉ. अनुराधा व डॉ. बी. एल. मेघवाल ने किया। आयोजन सचिव डॉ. महेन्द्र जैन व डॉ. जय सिंह मीणा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

राजानी का सम्मान

उदयपुर। राजस्थान सिंधी अकादमी के अध्यक्ष हरीश राजानी का राज्य सरकार द्वारा राज्यमंत्री पद का दर्जा देने पर शहर की सभी सिंधी पंचायतों व युवा संगठनों द्वारा सनातन मंदिर, शक्ति नगर में सम्मान किया गया। जिसमें वरिष्ठ समाजसेवी प्रभुदास पाहुजा, प्रतापराय चुघ, नानकराम कस्तूरी, तीरथदास नेभनानी, सुरेश कटारिया, किशनलाल वाधवानी, लक्ष्मणदास बजाज, खानचन्द मंगवानी भी उपस्थित थे। राजानी ने मुख्यमंत्री व नगरीय विकास मंत्री का आभार जताते हुए कहा कि राजस्थान सिन्धी अकादमी द्वारा राज्य सरकार को सिन्धी संस्कृति, भाषा के विकास के लिए बड़ा बजट आवंटित करने को लिखा गया है।

इंदिरा आईवीएफ का मुम्बई में एक और सेंटर

उदयपुर। नि:संतानता के इलाज के क्षेत्र में देश की सबसे बड़ी फर्टिलिटी चेन इन्दिरा आईवीएफ हॉस्पिटल प्रा. लि. ने अब नवी मुम्बई में भी कदम रख दिए हैं। यह ग्रुप का 31वां और मुंबई का दूसरा बड़ा सेंटर है। इससे पूर्व बोरीवली में सेंटर शुरू किया गया था। नए सेंटर का उद्घाटन महाराष्ट्र के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. दीपक सावंत ने किया। इस दौरान इन्दिरा आईवीएफ ग्रुप के संस्थापक-चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया, मेडिकल डायरेक्टर क्षितिज मुर्डिया, डायरेक्टर फाइनेन्स आशीष लोढ़ा, डायरेक्टर ऑपरेशंस मनीष खत्री भी उपस्थित थे।

नये सेंटर का शुभारम्भ करते स्वास्थ्य मंत्री डॉ. दीपक सावंत, चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया, क्षितिज मुर्डिया एवं अन्य।

गुर्जर प्रदेश महासचिव

उदयपुर। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सचिन पायलट के निर्देशानुसार राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी ओबीसी प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष प्रेमाराम देवासी ने मावली के भंवरलाल गुर्जर को प्रदेश महासचिव नियुक्त किया है। गुर्जर पूर्व में भी कांग्रेस के विभिन्न पदों पर रह चुके हैं।

गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स पर *सूक्ष्म पत्रिका*

उदयपुर। सूक्ष्म पुस्तिका शिल्पी चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा ने 'गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' के 66 वर्ष पूर्ण होने पर 2 सेंटीमीटर की एक पुस्तिका तैयार की है। जिसमें 'गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' की 66 वर्षीय यात्रा को 66 पृष्ठों में समेटा गया है। पुस्तिका का विमोचन उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी ने किया। इस अवसर पर जिला कलक्टर बिष्णु चरण मल्लिक भी उपस्थित थे।

कॉप दिवाली फेस्ट के विजेता को मिली कार

उदयपुर। उदयपुर सहकारी उपभोक्ता थोक भंडार द्वारा आयोजित कॉप दिवाली फेस्ट का बम्पर ड्रा गत दिनों डूंगरपुर के कलक्टर राजेन्द्र भट्ट ने निकाला। प्रथम पुरस्कार विजेता को डेटसन रेडिगो कार प्रदान की गई। इस अवसर पर भण्डार के महाप्रबंधक आशुतोष भट्ट भी उपस्थित थे।

श्रेष्ठ कार्य पर सम्मान

मंचासीन अध्यक्ष शीला तलसेरा, दर्शना सिंघवी एवं अन्य।

उदयपुर। इनरव्हील क्लब की डिस्ट्रिक्ट चेयरमैन सुनीता जैन की आधिकारिक यात्रा पर नीता महाजन, अनुपम खमेसरा, वीना सिंघवी, नीना मारू, स्नेहलता साबला, प्रेम दोषी, नीना सिंघवी, नंदिता चौकसी, मंजू मोदी, कविता बड़जात्या, कमला जैन, प्रभा सिंघवी, रजनी नाहर, प्रभा डूंगरवाल, आशा सुराणा, पंकज मट्ठा, कांता नेभनानी, मंजू खतुरिया, किरण कोचर, उषा सिंघवी, कल्पना नलवाया, शकुन्तला धाकड़, विजयलक्ष्मी जोधावत, आशा कटारिया, आशा तलेसरा, आशा खतुरिया, रेखा भाणावत, आशा कुणावत, कुसुम, शैल, इंद्रा मुरडिया, मीतू कावड़िया आदि का सम्मान किया गया। अध्यक्ष शीला तलेसरा के अनुसार डिस्ट्रिक्ट चेयरमैन ने क्लब बुलेटिन का विमोचन भी किया। दर्शना सिंघवी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

नागदा को पीएचडी

उदयपुर। कौशल नागदा को मेवाड़ के महाराणा लाखा से मेवाड़ के महाराणा सांगा कालीन स्थापत्य स्मारकों से सम्बन्धित सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियां एक अध्ययन विषय पर जेआर नागर विश्वविद्यालय ने पीएचडी की उपाधि प्रदान की है।

नागदा ने अपना शोध कार्य डॉ. ललित पाण्डे पूर्व निदेशक इंस्टीट्यूट ऑफ राजस्थान स्टडीज, राजस्थान विद्यापीठ के निर्देशन में पूर्ण किया।

प्रो. सारंगदेवोत अध्यक्ष

उदयपुर। कम्प्यूटर सोसायटी ऑफ इंडिया की वार्षिक बैठक में वर्ष 2017-18 के लिए सी.एस.आई. के चुनाव हुए। जेआर नागर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत चेयरमैन, डॉ. अमित जोशी वाईस-चेयरमैन व डॉ. भारतसिंह देवड़ा को सेक्रेटरी पद पर मनोनीत किया गया। बैठक में सी.एस.आई का वार्षिक सम्मेलन दिसम्बर 2018 में करवाने का निर्णय लिया गया।

फोर्ड की नई इको स्पोर्ट लॉन्च

नई इको स्पोर्ट गाड़ी को लॉंच करते प्रदीप कुमावत, विकास खुराना। साथ में निदेशक एस. के. परिहार, आकाश परिहार एवं अन्य।

उदयपुर। फोर्ड इण्डिया के डीलर के. एस. फोर्ड शोरूम में नई इको स्पोर्ट का अनावरण किया गया। इस मौके पर बतौर अतिथि प्रदीप कुमावत और विकास खुराना मौजूद थे। कंपनी निदेशक सुनिल परिहार ने बताया कि नई इको स्पोर्ट में 50 विशेषताएं हैं। इसमें कम्पनी ने 1.5 टीडीसीआई डीजल इंजन के साथ नया 1.5 ड्रेगन पेट्रोल इंजन लॉन्च किया है। यह इंजन 123 बीएचपी के साथ प्रदूषण के बीएस 6 मापदण्डों के आधार पर बना है। इसके अलावा 8 और 6.5 इंच इन्फोटमेन्ट सिस्टम विद नेविगेशन सहित कई फीचर दिए गए हैं। निदेशक आकाश परिहार व महाप्रबन्धक हितेश कपूर ने बताया कि कार व्हाइट, रेड, सिल्वर, ब्लू, ग्रे, ऑरेन्ज और ब्लेक कलर में उपलब्ध है।

प्रस्तुतियों के साथ मनाया स्थापना दिवस

मंच पर सीएमडी सी. एस. राठौड़, उद्योगपति राजेश शर्मा, समाजसेवी संजय कोठारी एवं वैभवसिंह राठौड़।

उदयपुर। मेवाड़ हाईटेक इंजीनियरिंग का 20वां स्थापना दिवस समारोह मनाया गया। समारोह में गायक विकास जोशी और ग्रेट लाफ्टर चैलेन्ज के हास्य कलाकार उदय दहिया ने हिस्सा लिया। विकास ने गीतों से मनोरंजन किया, वहीं उदय ने खूब गुदगुदाया। खेल प्रतियोगिताएं भी हुई। आयोजन में सीएमडी चतरसिंह राठौड़, एमडी रीना राठौड़ व डायरेक्टर वैभव सिंह राठौड़ मौजूद थे। सीएमडी ने आगामी प्रोजेक्ट की जानकारी दी। बताया गया कि कंपनी ने मोबाइल लाइब्रेरी का निर्माण किया, इसमें 1500 से ज्यादा किताबों का संग्रह है। मोबाईल लाइब्रेरी फतहसागर पर रखी जाएगी।

अलख नयन मंदिर की नई पहल 'कम्यूनिटी बेस्ड डायबिटिक रेटिनापैथी प्रोजेक्ट'

उदयपुर। वर्ल्ड डायबिटीज डे पर अलख नयन मन्दिर की ओर से पिछले दिनों 'कम्यूनिटी बेस्ड डायबिटिक रेटिनोपैथी प्रोजेक्ट(सीबीडीआरपी)' का शुभारम्भ हुआ। राजस्थान में पहली बार लेकसिटी से शुरू किए गए इस प्रोजेक्ट के मुख्य अतिथि बॉलीवुड अभिनेता नील नितिन मुकेश तथा विशिष्ट अतिथि ऑपरेशन आई साइट यूनिवर्सल भारत के हेड प्रोग्राम मैनेजर फ्रेंकलिन डेनियन थे। नील नितिन मुकेश ने कहा कि डायबिटिज का आंखों से सीधा सम्बन्ध है। इसलिए सभी को अपनी आंखों की देखभाल के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। अध्यक्षीय संबोधन में मिराज समूह के एमडी मदन पालीवाल ने कहा कि वे अलख नयन के संस्थापक डॉ. हरिसिंह चूंडावत से लंबे अरसे तक जुड़े रहे। उनके जिक्र से उनकी व्यापक छवि हर किसी के दिल में बरबस अंकित हो जाती है। उनके द्वारा स्थापित अलख नयन मंदिर के सेवा प्रतिमानों की अन्यत्र मिसाल मिलना संभव नहीं। संस्थान ट्रस्टी डॉ. लक्ष्मी झाला ने बताया कि सीबीडीआरपी प्रोजेक्ट को अलख नयन मन्दिर नेत्र संस्थान, ऑपरेशन आईसाइट यूनिवर्सल कनाड़ा के सहयोग से कार्यान्वित करेगा जिसमें मिराज समूह का सीएसआर के तहत महत्वपूर्ण योगदान होगा।

शुभारम्भ समारोह में उपस्थित अभिनेता नील नितिन मुकेश, मिराज समूह के एम.डी. मदन पालीवाल, संस्था ट्रस्टी डॉ. लक्ष्मी झाला व डा. एल.एस. झाला एवं अन्य।

प्रोजेक्ट का उद्देश्य

अलख नयन के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. एल. एस. झाला व प्रोजेक्ट डायरेक्टर मीनाक्षी चूण्डावत ने समुदाय आधारित डायबिटीज एवं डायबिटिक रेटिनोपैथी परियोजना के क्रियान्वयन पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि डोर-टू-डोर सर्वे के माध्यम से मरीजों की जानकारी जुटाकर उन्हें बेहतर एवं सुरक्षित उपचार के लिए जागरूक करना प्रोजेक्ट का प्रमुख ध्येय है। हर रविवार को कॉलोनियों में मुफ्त नेत्र जांच, डायबिटीज जांच एवं उपचार शिविर लगेंगे। प्रोजेक्ट चार साल चलेगा और इस पर एक करोड़ पन्द्रह लाख रुपए व्यय होंगे।

कबीर पंथ का भव्य संत समागम

उदयपुर। बी. एन. कॉलेज मैदान पर 1 से 3 नवम्बर 2017 तक सद्गुरु कबीर संत समागम एवं महायज्ञ एकोत्तरी चौका आरती महोत्सव सम्पन्न हुआ। सद्गुरु कबीर मण्डल उदयपुर एवं कबीर पंथ समाज, राजस्थान के तत्वावधान एवं श्री सद्गुरु कबीर धर्मदास साहेब वंशावली प्रतिनिधि सभा दामा खेड़ा के आशीष से आयोजित इस महनीय कार्यक्रम को वंश प्रतापाचार्य पंथ श्री हुजूर प्रकाश मुनि नाम साहब दामाखेड़ा (छत्तीसगढ़) का गरिमामयी सान्निध्य प्राप्त हुआ। आयोजन से जुड़े लोकेश चौधरी के अनुसार गुरुगद्दी की स्थापना के पांच सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में देश भर में मनाये जाने वाले महोत्सवों की श्रृंखला में उदयपुर में यह आयोजन हुआ। इस महायज्ञ में संत प्रकाश मुनि ने मुख्य पूजा व आरती की। इस अवसर पर 101 महंत भी गद्दी पर विराजमान थे। महायज्ञ एकोत्तरी चौका आरती के दौरान 101 दिए जलाए गए और 101 कलशों को भी प्रकाशित किया गया। सद्गुरु कबीर मंडल, उदयपुर के महंत पंगतदास साहेब ने बताया कि एकोत्तरी चौका आरती विशेष महत्व का धार्मिक अनुष्ठान है। महोत्सव के दौरान नगर में भव्य शोभायात्रा भी निकाली गई।

खान सुरक्षा पर परिचर्चा सेमिनार

उदयपुर। मिनरल उत्खनन का कार्य खेती जैसा नहीं है। माईनिंग में कार्मिक के स्वास्थ्य एवं जान का जोखिम रहता है। खान सुरक्षा विभाग की ओर से राजस्थान को सिलिकोसिस मुक्त बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इसे पूरा करने में खान सुरक्षा विभाग उद्यमियों से सहयोग की अपेक्षा करता है। यह विचार खान सुरक्षा विभाग के महानिदेशक पी. के. सरकार ने उदयपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री की ओर से यूसीसीआई भवन में खान सुरक्षा विभाग के महानिदेशक पी. के. सरकार के साथ खान सुरक्षा पर परिचर्चात्मक सेमिनार में व्यक्त किए। यूसीसीआई अध्यक्ष हंसराज चौधरी ने पी. के. सरकार एवं भूविज्ञान विभाग के अधिकारियों एवं खान उद्यमियों का स्वागत किया। माईनिंग सब कमेटी के चेयरमैन केजार अली, खान सुरक्षा विभाग के उपमहानिदेशक नारायण राजक ने भी जानकारी दी। निदेशक अशोक कुमार पोरवाल, खान एवं भू विज्ञान विभाग निदेशक डी. एस. मारू ने उदयपुर संभाग में खनन गतिविधियों की रूपरेखा पेश की। पूर्वाध्यक्ष एम. एल. लूणावत, यूसीसीआई संरक्षक अरविन्द सिंघल, शांतिलाल सिंघवी, आर. डी. सक्सेना, नानालाल सारडू, राजेश बापना, शरद कटारिया, मधुसूदन व्यास, गौरव राठौड़ ने विचार रखे। संचालन मानद महासचिव अनिल मिश्रा ने किया। उपाध्यक्ष रमेश कुमार सिंघवी ने आभार जताया।

खान विभाग के निदेशक डी.एस. मारू, यूसीसीआई के संरक्षक अरविन्द सिंघल, अध्यक्ष हंसराज चौधरी, केजार अली एवं अन्य।

शोक समाचार

उदयपुर। पूर्व विधायक एवं जनसंघ के संस्थापक सदस्यों में से एक स्व. श्री जोधसिंहजी चौहान सालेरा की धर्मपत्नी **श्रीमती श्यामा देवी सैंगर** का 4 नवम्बर 2017 को देहावसान हो गया। सेंगर कपासन विधानसभा क्षेत्र से 1977 में विधायक भी रहीं। उन्होंने महाराणा भगवत सिंह साकेत पब्लिक स्कूल की स्थापना की। वे अपने पीछे पुत्र विक्रमादित्य सिंह, चन्द्रगुप्त सिंह चौहान एवं समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं। उनके निधन पर मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया, यूआईटी चेयरमैन रवीन्द्र श्रीमाली, महापौर चन्द्रसिंह कोठारी सहित विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं, आरएसएस कार्यकर्ताओं व क्षत्रिय समाज ने गहरा दु:ख प्रकट किया है।

उदयपुर। **श्रीमती नौजी बाई सालवी** धर्मपत्नी भंवरलाल जी सालवी का 9 नवम्बर 2017 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पुत्र अम्बालाल, रोशनलाल व लक्ष्मीनारायण सालवी, पुत्री मोहिनी देवी तथा पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। **श्रीमती नानी बाई डांगी** (पटेल) उत्तरी सुन्दरवास का 4 नवम्बर 2017 को निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र किशनलाल, गौरीशंकर, भंवरलाल, किशोर व ओंकारलाल (एडवोकेट) तथा पुत्रियां सुगना देवी, सुंदरदेवी, लालीबाई व लक्ष्मी सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्रीमती नलिनी देवी भटनागर धर्मपत्नी स्व. उम्मेदसिंह जी का 26 अक्टूबर 2017 को उनके सेक्टर 11 स्थित आवास पर स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकसंतप्त पुत्र अनिल व सुनील भटनागर पुत्री मंजू देवी व उनका सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव व राजस्थान के पूर्व सहप्रभारी **मिर्ज़ा इरशाद बेग मिर्ज़ा** के निधन पर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में आयोजित शोकसभा में उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। प्रवक्ता फिरोज अहमद शेख ने बताया कि पार्टी कार्यकर्त्ताओं व नेताओं ने मिर्जा द्वारा राजस्थान में कांग्रेस संगठन को सक्रिय व मज़बूत करने की दिशा में किए कार्यों को याद किया। डॉ. मधुसूदन शर्मा, पंकज शर्मा, त्रिलोक पूर्बिया, के. के. शर्मा, दिनेश श्रीमाली, गणेश डागलिया, दिनेश दवे, मुजीब सिद्दीकी, गणेश राजोरा, नासिर खान, राजीव सुहालका, दीपक सुखाड़िया, रियाज हुसैन, मोहम्मद अयूब सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

उदयपुर। सहेली नगर निवासी रिटायर्ड आरएएस **शांतिलाल जी नागदा** (ब्राह्मण) का 23 अक्टूबर को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे 63 वर्ष के थे। दो ढाई वर्ष पूर्व ही वे भू प्रबंध अधिकारी पद से सेवानिवृत्त हुए थे। वे बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, भरतपुर आदि स्थानों पर विभिन्न पदों पर रहे। देवस्थान आयुक्त और नगर निगम आयुक्त के रूप में उनके द्वारा सम्पादित कार्य उल्लेखनीय रहे। संस्कृत के विद्वान नागदा ने अनेक सामाजिक संस्थाओं ने सम्मानित किया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पत्नी रजनी नागदा(प्राचार्य, बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, कपासन), पुत्र प्रियदर्शी(लेक्चरार, विधि कॉलेज) व जयंत(आइआइटियन), पौत्री मिराया तथा भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर विभिन्न दलों के नेताओं, वरिष्ठ अधिकारियों व कार्मिकों ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। **श्रीमती रम्भा लोढ़ा** (धर्मपत्नी स्व. केशरीमल जी लोढ़ा-लोढ़ा ब्रदर्स) का 28 अक्टूबर 2017 को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे सुपुत्र जगन कुमार, राज लोढ़ा, डॉ. सुरेश, डॉ. शैलेन्द्र व विपिन लोढ़ा तथा पुत्रियां पुष्पा खिमेसरा व वीना भण्डारी तथा उनका समृद्ध व सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। **श्री गणेशलाल जी पण्डवाल** का 15 नवम्बर 2017 को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पत्नी श्रीमती कंचन देवी, पुत्र हेमेन्द्र व राजेन्द्र, पुत्रियां रेखा काबरा, मदन देवी देवपुरा, भगवती देवी धुप्पड़ तथा पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

जयपुर। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. मोहनलाल सुखाड़िया-इन्दुबाला सुखाड़िया दम्पती की ज्येष्ठ पुत्री **श्रीमती पुष्पा गोयल** (धर्मपत्नी श्री एम. एल. गोयल पूर्व आईएएस) का 8 नवम्बर 2017 को यहां निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पति तथा पुत्र राजेश गोयल, मनु गोयल एवं पुत्री अनु भट्ट सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। सुखाड़िया के पुत्र दिलीप व अरूण सुखाड़िया के उदयपुर-दुर्गानर्सरी स्थित आवास पर बड़ी संख्या में शहरवासियों ने संवेदना व्यक्त की। मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, कांग्रेस महासचिव डॉ. सी. पी. जोशी, अविनाश पाण्डे, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष सचिन पायलट, डॉ. गिरिजा व्यास, गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया, रघुवीर सिंह मीणा, गजेन्द्र सिंह शक्तावत, दिनेश श्रीमाली, पंकज कुमार शर्मा, गोपाल कृष्ण शर्मा, विधायक फूल सिंह मीणा, धर्मनारायण जोशी, सहित विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं, उद्यमियों एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने पुष्पाजी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

।। श्री कृष्णा ।।
।। श्री गणेशाय नमः ।।
।। ॐ हनुमन्ते नमः ।।
बीकानेर मावा भण्डार
BMB
घीदार मावा एवं मीठा मावा के विक्रेता
शादी पार्टी में मावा के आर्डर बुक किए जाते हैं।
4, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी स्कूल मार्ग, उदयपुर (राज.)
Mobile - 9468704600, 8782704600
हैड ऑफिस :- डी.एस. बीकानेर

A Product of
अर्चना Panch 5 mani
TM
Fragrance
अर्चना
एक्टिव
TM
डिटर्जेन्ट वॉशिंग पाउडर
कपड़े रहे एक्टिव अर्चना एक्टिव डिटर्जेन्ट के साथ
1 Kg. वाले कट्टे में 25 पाउच
500 Gram वाले कट्टे में 40 पाउच
200 Gram वाले कट्टे में 80 पाउच
आधुनिक एवं सर्वश्रेष्ठ तकनीक का आविष्कार एक्टिव डिटर्जेन्ट पाउडर
निर्माता : पंचमणी फ्रेगरेन्स
कार्यालय : ने. हा. 76, एयरपोर्ट रोड
ग्लास फैक्ट्री चौराहा, खेमपुरा की तरफ
उदयपुर-313001 (राजस्थान)
वेबसाईट : www.archanaagarbatti.com
ई-मेल : sales@archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti
फोन : 0294-2492161, 2490899
व्यावसायिक पूछताछ एवं डीलरशिप हेतु आर्थिक रूप से सुदृढ़ पार्टियां (वितरक रहित क्षेत्र में) सम्पर्क करें।
मो.: +91-98290 42705, +91-99508 15555

Harish Trivedi
+91-94143-42670

Since 1998

Naresh Trivedi
+91-94133-19644

Eagle Enterprises

Complete Frozen Solution

मांगलिक कार्यक्रमों हेतु बुकिंग की जाती है

Head Office :- C-Block, 110, Transport Nagar, Hotel Harsh Palace Road, Balicha. Udaipur - 313001
Ph. : 0294-6057644 Website :- www.eagleenterprisesudr.com

City Office :- 4-B, Shivaji Nagar, Udaipur-313001 Ph.:- 0294-2487644, 2484880
Email : eagleent1998@gmail.com

ST. MATTHEW'S
SR. SEC. SCHOOL

ADMISSION OPEN
NURSERY TO XII
(ARTS, SCIENCE, COMMERCE)

A LIGHT TO THE NATION

Affiliated to CBSE

OUR FEATURES
Academic Excellence
Expert Science & Commeres Faculty
Personalised Care
Enrichment Programmes
Scholarship for Meritorious Students

Required : Dance Teacher

OPP. SANJAY PARK, RANI ROAD, UDAIPUR, PHONE: +91-294-2433184 | www.stmatthews.in

With Best Copmpliments

SML ISUZU

Comfrot + Economy + Safety = Reliabilty

SML School Bus

S7 School Bus

Loading Ka Baadshah...

OM MOTORS

Authorised Dealer :

SML ISUZU SALES, SERVICE & SPARES

N.H. 8, Pratap Nagar, Near Apni Dhani, Udaipur-313003 (Raj.)
Mob. : +91 8741970005, 8741970006, email : ommotorsudr@gmail.com

Location : Dungarpur, Banswara, Rajsamand
Abu Road, Pratapgarh, Chittorgarh.

Trulyy INDIA
HOTELS, RESORTS CAMPS AND SAFARIS
www.tihr.in

HOTELS, RESORTS, CAMPS & SAFARIS

THE DESERT PALACE, JAISALMER

The finest of hospitality in the best locations of India

THE KUMBHA BAGH - KUMBHALGARH

THE JAIBAGH PALACE - JAIPUR

THE AMARGARH - UDAIPUR

THE UDAI BAGH - UDAIPUR

KUMBHALGARH SAFARI CAMP

TRULYY RUDRANSH INN - JODHPUR

THE BAAGH - RANTHAMBHORE

THE ELEGANCE - CHITTORGARH

Reservations: 079 26463724-25 / +91 9328016886 / +91 9033016889 I Email: crs@tihr.in

402, Aakar III, Opp. Rajiv House, C.G Road, Navrangpura, Ahmedabad, Gujarat, INDIA

AMONGST THE TOP RATED PROPERTIES ON tripadvisor

/trulyyindia /trulyyindiahotels /trulyyindiahotels

Book online on: www.tihr.in